नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक

नंदन



हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

४ रुपए

सितम्बर '९१



एक समय की बात है एक भाई-बहन जंगल में घूमने गये। वहाँ उन्हें एक बहुत सुन्दर परी मिली। उसकी आँखें नीली और बाल सुनहरे थे। परी के हाथ में एक चमकती हुई जादू की छड़ी थी। परी ने बच्चों को अपने पास बुलाया और पूछा "प्यारे बच्चों तुम कहाँ जा रहे हो?" बच्चों ने जवाब दिया "वहाँ ऊपर पहाड़ी पर, नानी के लिये गुलाब के फूल लाने।" "पर देखो तो काटों और पत्थरों ने तुम्हारे जूतों का क्या हाल बना दिया है!" परी बोली। जब बच्चों ने अपने पैरों को देखा तो उनका नन्हा दिल भर आया। उनके जूते तो बिल्कुल फट चुके थे।
उन्होंने जब ऊपर नज़र उठाई, तो परी गायब हो चुकी थी। पर उनके लिये "फुट-फन" जूतों के दो बहुत ही मज़बूत और खूबसूरत जोड़े छोड़ गयी थी।
FOOTFUN
collection from
LIBERTY
नन्हें पैरों के लिये
पूरा आराम

पत्र मिला

□ 'नंदन' का जुलाई अंक सचमुच परियों के चमत्कार से भरा था। सभी रचनाएं अच्छी लगीं।

—राजकुमार गुप्ता, भोजपुर

□ परी-कथा विशेषांक बेहद प्रशंसनीय रहा। 'दादी के फूल', 'कैद में देवता', 'कितने आए', तथा 'हाथ में सूरज' कहानियां सचमुच यादगार बन गईं। 'याद रही परी-कथाएं' इस अंक की उपलब्धि थीं। **—संजय थापा, अजमेर**

□ सभी गौर से सुनो दोस्तो,
न मानो तो पढ़ो दोस्तो।
'नंदन' पढ़कर नई जिंदगी,
शुरु आज से करो दोस्तो

—मुन्ना दर्द, गाजियाबाद

□ श्री चंद्रशेखर, वैजयंती माला तथा कपिलदेव ने मनमोहक कथाएं सुनाईं। मां सरस्वती का चित्र देखकर घर में सब लोग खुश हो उठे। **—विशालकुमार, सिन्हा, पटना**

□ मैं दो वर्ष पुराना पाठक ही सही, लेकिन लगता है—'नंदन' से मेरा रिश्ता बहुत पुराना है। इसे पढ़ने के बाद कोई और पत्रिका पढ़ने की जरूरत नहीं रहती।

—जयप्रकाश सिंह, भद्रेश्वर (प.बं.)

□ नए अंक में प्रभाकर द्विवेदी की कहानी 'उड़ी हंस नौका' बिलकुल नए किस्म की कहानी थी।

—मंजु कुमारी, पारम (बि.)

□ हमारे घर में 'नंदन' का स्थान हर महीने खरीदी जाने वाली सभी आवश्यक वस्तुओं से ऊपर है। 'मिठाई के टोकरे' तथा 'रात में उजाला' चित्र-कथाएं विशेष अच्छी लगीं। बच्चों के बनाए चित्र अद्‌भुत थे। **—मनोजकुमार, अलवर**

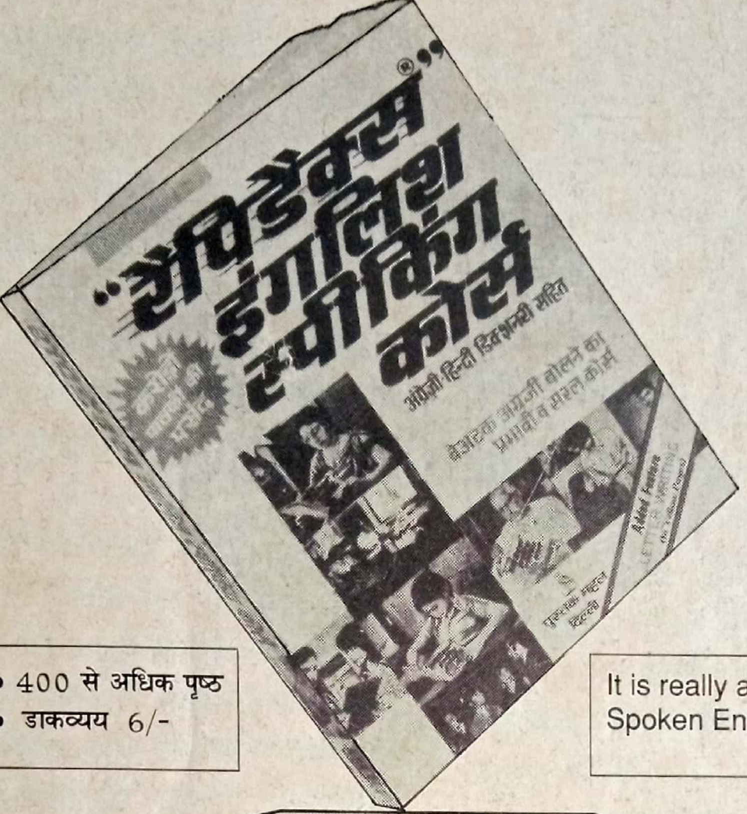
□ 'कानो में बिजलियां', 'समय का फेर' तथा 'सोने से लोहा' कहानियां मजेदार थीं। 'नंदन पाठक प्रतियोगिता' के विजेताओं को मेरी ओर से बधाई। **—चंद्रकुमार किंगर, मुजफ्फरनगर**

□ जितनी लोकप्रिय 'नंदन' है, उतनी शायद कोई और पत्रिका नहीं। मुखपृष्ठ ही इसे पढ़ने को मजबूर कर देता है। जुलाई अंक में रचनाएं एक से बढ़कर एक थीं। 'चीटू-नीटू', 'तेनालीराम' तथा कविताओं को कई बार पढ़ गया।

—नवीनकुमार गर्ग, बुढ़ाना

□ मुझे पहले ही पता था कि परी-कथा विशेषांक अनूठा साबित होगा, ऐसा हुआ भी। इतने अच्छे अंक के लिए बधाई। **— कुसुमायुध कांत, महासमुंद**

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : संजीव बंसल, हिसार; प्रवीण कुमार तिवारी, फिरोजाबाद; आर.के. देवड़ा, अलोट।



- बड़ा आकार
- 400 से अधिक पृष्ठ
- मूल्य 45/-
- डाकव्यय 6/-

It is really a good book to learn Spoken English.

— **Kapil Dev**



पत्र-पत्रिकाओं एवं शिक्षाविदों द्वारा प्रशंसित

13 भारतीय भाषाओं में अलग-अलग उपलब्ध

4,00,00,000 (चार करोड़) से अधिक पाठकों की पसंद

बिक्री के क्षेत्र में सनसनी फैला देने वाली एक अनूठी पुस्तक

नई ऊँचाइयों की ओर निरन्तर अग्रसर

पुस्तक महल

1. खारी बावली, दिल्ली -110006. फोन:239314
2. 10-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002. फोन: 3268292



आओ बात करें

घर-घर में गूंज उठता है एक गीत, जिसका अर्थ है—

'राजा महाबलि जब राज करते थे, उस समय घी-दूध की नदियां बहती थीं। ऊंच-नीच, धनी-निर्धन, छोटे-बड़े का भेद न था। सभी बराबर थे। कोई झूठ न बोलता था। धोखा नहीं देता था। कामचोरी नहीं थी। धन का लोभ न था। सब सुखी थे।'

सैंकड़ों-हजारों बरस बीत गए। पर आज भी राजा महाबलि अपनी प्रजा को देखने आते हैं। हर घर के आंगन में महाबलि की माटी की मूर्ति बनी रहती है। उसके चारों ओर फूलों के घेरे बनाए जाते हैं। पहले दिन जितने घेरे रचे जाते हैं, उसके बाद दुगुने-तिगुने। दसवें दिन दस गुने फूलों के घेरे बनाते हैं।

कहां के राजा थे महाबलि ? राजा और प्रजा का यह अटूट नाता किस धरती पर जुड़ा ? कभी केरल में राज करते थे महाबलि। जैसा नाम, वैसे ही पराक्रमी। क्या-क्या नहीं किया उन्होंने राज्य की भलाई के लिए।

द्वार पर जो आ गया, खाली हाथ नहीं लौटा। चोर-डाकू तो राज्य में कोई था ही नहीं। न कोई भूखा-प्यासा सोता। राज्य फैलता गया और राजा का यश भी। सारी पृथ्वी ही उन्होंने जीत ली। महाबलि ने देवताओं को भी हरा दिया।

प्रजा दानव राजा महाबलि का जय-जयकार करती। देवताओं को लोग भूलने लगे। देवता पहुंचे भगवान विष्णु की शरण में।

हाथ जोड़कर बोले— "प्रभो, यही हाल रहा, तो महाबलि तीनों लोकों पर राज करेंगे। हम कहीं के न रहेंगे। कोई तो उपाय कीजिए।"

विष्णु तनिक सोचते रहे। फिर देवताओं से बोले— "चिंता छोड़ो। सब ठीक हो जाएगा।"

भगवान विष्णु ने वामन रूप धारण किया। जा पहुंचे महाबलि के महल में। अलख जगाया। राजा ने पूछा— "क्या चाहिए आपको ?"

वामन बोले— "तीन डग जमीन दान में चाहिए।"

राजा महाबलि के लिए यह कौन बड़ी बात थी ! झट उन्होंने कहा— "जहां भी आप चाहें, धरती नाप लें।"

वामन तो अब विराट बन गए। उन्होंने तीन डग में सारी पृथ्वी ही नाप डाली। पर राजा महाबलि भी अपने वचन के पक्के थे। उन्होंने खुशी-खुशी राज-पाट त्याग दिया। अब तो वामन ने अपना असली रूप दिखाया। भगवान विष्णु सामने खड़े थे। महाबलि बोले— "महाराज, मैंने आपको पहचान लिया था। इससे बढ़कर और क्या कि आप मेरे द्वार पर भिक्षु बनकर आए।"

राजा महाबलि पाताल लोक को जाने लगे। विदा लेने से पहले उन्होंने कहा— "मैं इतना ही चाहता हूं कि वर्ष में एक बार अपनी प्यारी प्रजा को देखने आ सकूं।"

भगवान विष्णु बोले— "ऐसा ही होगा राजन। इतना ही नहीं, जब तक यह पृथ्वी रहेगी, महादानी के रूप में आपकी कीर्ति भी अमर रहेगी।"

राजा महाबलि अब भी आते हैं और प्रजा का भी अनोखा प्यार है राजा के लिए।

रिमझिम मेघ बरसते हैं। हरियाली की चादर में ढक जाता है केरल। उन्हीं दिनों 'ओणम' का बड़ा त्योहार आता है। हंसी-खुशी की होड़ लग जाती है। कोई भी यह नहीं चाहता कि राजा आएं और उसे दीन-हीन दशा में देखें।

'ओणम' की खुशियां सब को मिलें। त्योहारों के इस मौसम में मंगलकामनाएं लें।

तुम्हारे भइया

जयप्रकाश भारती

नंदन

सितम्बर '९१
वर्ष : २७ अंक : ११

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

कहानियां

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

मुखपृष्ठ : विद्याव्रत

सहायक सम्पादक : चन्द्रदत्त 'इन्दु'
मुख्य उप-सम्पादक: देवेन्द्रकुमार
वरिष्ठ उप-सम्पादक : रत्नप्रकाश शील, क्षमा शर्मा
उप-सम्पादक : डा. चन्द्रप्रकाश, डा. नरेन्द्रकुमार
चित्रकार : प्रशांत सेन



रुको बादल

—आदित्य शर्मा

पुरानी बात है । तब उत्तराखंड में दूर-दूर तक विशाल वन फैले थे । इन वनों में तपस्वियों के आश्रम थे । हजारों विद्यार्थी आश्रमों में रहकर अध्ययन करते थे । इनमें महर्षि अंगिर का आश्रम भी था । महर्षि अंगिर मंत्र द्रष्टा ऋषि थे । देवता भी उनका सम्मान करते थे ।

एक बार उत्तराखंड में भयंकर वर्षा हुई । हफ़्तों पानी बरसता रहा । बीच-बीच में वर्षा रुक भी जाती थी, मगर बादलों का घटाटोप बना रहता था । कुछ देर वर्षा रुकती और फिर मूसलाधार पानी बरसने लगता । इससे जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया । आश्रमों में स्थिति और भी खराब थी । तपस्वियों की फूस की झोंपड़ियां पानी भरने से धराशायी हो गई थीं । चारों ओर जल प्लावन जैसा दृश्य था ।

मगर ऐसे में भी एक बात अचरज की थी—इतना पानी बरसने पर भी महर्षि अंगिर की कुटिया से जल दूर ही रहा था । वह मिट्टी के ऊंचे चबूतरे पर, कुशा का आसन बिछाए तप में लीन थे । उनका मन अपने इष्टदेव में रम रहा था, इसीलिए उन्हें कुछ पता न था कि घनघोर वर्षा ने तबाही मचा दी है ।

वर्षा रुके, इसके लिए जगह-जगह पूजा और प्रार्थनाएं हो रही थीं । सभी बादलों के स्वामी देवराज इंद्र से प्रार्थना कर रहे थे—'प्रभो, वर्षा को रोको ! हम पर दया करो भगवन !'

लगता था, जनता की प्रार्थना के स्वर इंद्र के पास नहीं पहुंच रहे थे । हवा के पंखों पर तैरते-गरजते हुए बादल जब भी आते, लोगों का दुःख दूना हो जाता था । कोई कुछ नहीं समझ पा रहा था ।

आखिर प्रजा ने अपने राजा के द्वार खटखटाए । प्रजापालक राजा सुबोधन ने प्रजा का दुःख देखा । वह स्वयं भी अतिवृष्टि से दुखी थे । प्रजा को राजा ने शीघ्र ही कुछ उपाय करने का आश्वासन दे दिया, मगर फिर मन में सोचने लगे—'शत्रु आक्रमण करे, तो उसका मुंहतोड़ जवाब दिया जा सकता है, किंतु इन बादलों को कौन रोके, और कैसे ?'

राजा सुबोधन ने अपने बुद्धिमान मंत्री को बुलाया । कहा—घनघोर वर्षा से राज्य की जनता पीड़ित है । फसलें नष्ट हो गईं, तो प्रजा भूखी मर जाएगी । राजकोष के लिए प्रजा कर भी नहीं दे पाएगी । वनों में पेड़-पौधे नष्ट हो जाएंगे, तो तपस्वियों को कष्ट होगा । कुछ न कुछ उपाय करना चाहिए, जिससे प्रजा का कल्याण हो ।"

मंत्री देर तक सोचता रहा । फिर बोला—"राजन, मैं राजनीति और शासन के बारे में आपको सलाह दे सकता हूं । इस सम्बंध में तो हमें पुरोहित से बात करनी चाहिए ।"

राजा तो शीघ्र कुछ उपाय करना चाहते थे । उन्होंने तुरंत पुरोहित को बुला भेजा । पुरोहित ने राजा को



सलाह दी—"हमें भगवान इंद्र को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ करना चाहिए। एक विशाल यज्ञ, जिसमें एक बड़ा हवन कुंड बनाया जाए। उस हवन कुंड में इतनी आहुतियां डाली जाएं कि उनका धुआं बादल बनकर उठे और इन बादलों को छू ले। मुझे विश्वास है, इंद्र देव अवश्य प्रसन्न होंगे।"

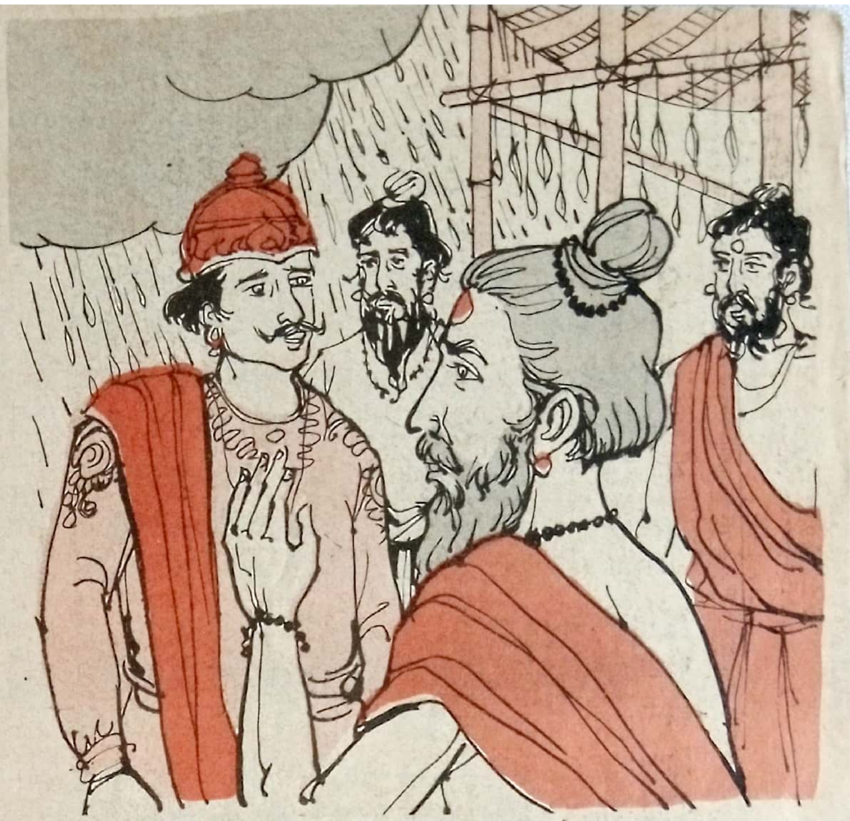
राजा और मंत्री ध्यान से पुरोहित की बातें सुन रहे थे। उन्हें लगा—यही करना उचित है। बस, राजा ने मंत्री को आज्ञा दी—"तुरंत यज्ञ का विशाल मंडप बनाया जाए। वेदपाठी ब्राह्मणों और यज्ञ-कर्म में निपुण आचार्यों तथा ऋषि-मुनियों को यज्ञ में भाग लेने के लिए बुलाया जाए।"

उन दिनों बांस और लकड़ी के स्तम्भों से मंडप बनाए जाते थे। राजा की आज्ञा हुई तो कुछ ही दिनों में राजधानी के बाहर विशाल मंडप तैयार हो गया। यज्ञ की सारी सामग्री यज्ञ मंडप में पहुंचा दी गई।

देव पूजन राजा ने स्वयं किया। इसके बाद हवन कुंड में चंदन की लकड़ियां रखी गईं। राजा की यज्ञशाला से अग्नि लाई गई। सभी ने अग्नि देव की पूजा की। घी और कपूर से अग्नि प्रज्वलित करने के लिए वेद मंत्रों के उच्चारण के साथ आहुतियां दीं, मगर आश्चर्य! अग्नि प्रज्वलित नहीं हुई, आहुति देने पर एक नीली लपट उठती। फिर धुआं बन जाती।

राजा और यज्ञकर्ता आश्चर्य से देख रहे थे। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। चंदन की लकड़ियां सूखी थीं। घी शुद्ध था। वेद मंत्रों का उच्चारण भी सही था। यज्ञ करने से पहले विधि के अनुसार सभी देवताओं की पूजा कर, उनका आह्वान किया गया था। फिर ऐसा क्या दोष रह गया कि अग्नि देव प्रसन्न नहीं हो पाए!

राजा ने वहां उपस्थित ऋषियों और विद्वानों से विचार-विमर्श किया। ऋषियों ने कहा—"हमारी भी समझ में नहीं आ रहा कि वेद मंत्र प्रभावहीन कैसे हो गए? वेद-मंत्र तो बिना आग और घी के भी अग्नि प्रज्वलित करने में समर्थ हैं। जरूर कोई विशेष बात है।"



"फिर क्या किया जाए?"—राजा ने पूछा। ऋषि मंडली ने कहा—"कोई मंत्र द्रष्टा ऋषि ही इसका कारण बता सकता है।"

मंत्र द्रष्टा ऋषि। और तभी राजा को महर्षि अंगिर की याद आई। राजा बोले—"क्या यज्ञ का निमंत्रण महर्षि अंगिर को नहीं भेजा गया?"

पुरोहित बोला—"अवश्य भेजा गया था राजन। मैं स्वयं महर्षि की सेवा में निवेदन करने गया था, मगर वह तपस्या में लीन थे। उनके कई सुयोग्य वेदपाठी शिष्य यहां हैं।"

—"जैसे भी हो, हमें महर्षि को लाना होगा। यज्ञ अधूरा नहीं छोड़ा जाएगा। प्रजा के हित के लिए यज्ञ पूरा करना जरूरी है। मैं स्वयं महर्षि के पास जाऊंगा।" राजा ने कहा। फिर मंत्री और पुरोहित के साथ महर्षि के आश्रम में गए।

महर्षि अपनी समाधि से जाग चुके थे। चारों ओर जल की अधिकता देखकर वह भी चकित थे।

राजा अपना रथ दूर छोड़कर पैदल ही आश्रम में आए थे। राजा को पैदल आता देख, महर्षि कुछ सोचने लगे। तभी राजा ने उन्हें प्रणाम किया। मंत्री और पुरोहित कुछ दूर खड़े थे। दोनों ने वहीं से महर्षि के सम्मान में अपना सिर झुका दिया।

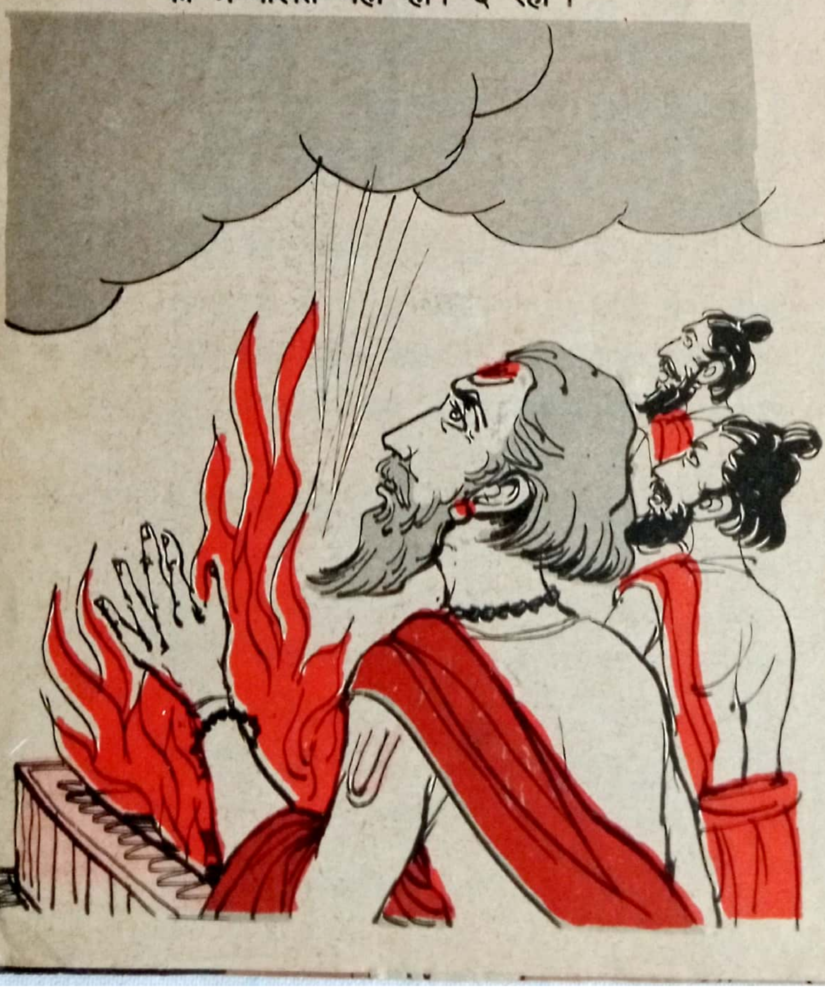
"कहिए राजन ! लगता है राज्य में खूब वर्षा हो रही है। कैसे कष्ट किया आपने ? सब कुशल-मंगल तो है।" —महर्षि ने पूछा।

"भगवन, इस बार बरसात रुकने का नाम ही नहीं ले रही है। प्रजा त्राहि-त्राहि कर उठी है।" —कहते हुए राजा ने अधूरे यज्ञ की बात महर्षि को बताई।

"आश्चर्य ! यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित नहीं हो रही ! वेद मंत्र प्रभावहीन हो गए हैं ! आप जैसे धार्मिक और प्रजा-वत्सल नरेश के राज्य में यह कैसा अमंगल ! चलिए, मैं चलता हूं।" —ऋषि ने कहा और राजा के साथ चल दिए।

महर्षि अंगिर यज्ञशाला में आसन पर विराजमान थे। पुनः यज्ञ कर्म आरंभ हुआ। अग्नि प्रज्वलित करने के लिए मंत्र पढ़कर आहुतियां डाली गईं, मगर एक नन्ही-सी नीली लपट चमकी और धुएं के रूप में बदल गई।

महर्षि ने ध्यान लगाया। कुछ क्षण बीते। अंगिर बोले—"राजन, यज्ञ कर्ताओं के बीच कोई पापात्मा बैठा है। उसी के द्वारा डाली जाने वाली आहुति अग्नि को प्रज्वलित नहीं होने दे रही।"



सब चौंके। एक-दूसरे की ओर शंका से देखने लगे। राजा भी परेशान ! इन यज्ञ कर्ताओं में से किसे पापात्मा समझा जाए।

महर्षि आसन छोड़कर यज्ञ कुंड के पास आए। उन्होंने वेद मंत्रों के स्वरूप का ध्यान किया, फिर अग्नि देव की स्तुति करने लगे। सभी चुप बैठे देख रहे थे। इसके बाद महर्षि ने एक हाथ में कुशा ली और दूसरे में घी से भरा पात्र। उन्होंने मंत्रों का उच्चारण करते हुए अग्नि में घी की आहुति दी। एकाएक अग्नि भभक उठी। महर्षि ने कुशा को अग्नि में डाल दिया। कुशा के डालते ही एक तेज लपट ऊपर उठी। लपट यज्ञ मंडप के चक्कर लगाती हुई, मंडप के बीच में आ गई। उस लपट का तेज इतना था कि सब परेशान हो उठे। चक्कर लगाती हुई लपट एक वेदपाठी के सिर के ऊपर ठहर गई।

लपट कुछ नीचे आई, तभी एक भयंकर अट्टहास हुआ। उस वेदपाठी का रूप भयानक हो गया। फिर वह यज्ञ कुंड की ओर भागा। प्रज्वलित अग्नि को बुझाने के लिए झपटा, मगर महर्षि के मंत्र सजग थे। मंत्रों के प्रभाव से वह जड़ हो गया।

तभी महर्षि अंगिर ने हाथ में जल लेकर मंत्र पढ़ा और उसकी ओर फेंका। यह क्या ! जल की बूंदें पड़ते ही उसका शरीर धुंधला गया। वह धुएं में बदलकर आकाश में उमड़ते बादलों में समा गया। तुरंत बादल छंटने लगे।

"यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित है। यज्ञ आरम्भ करो।" —महर्षि ने कहा।

यज्ञ सम्पन्न हो गया, मगर राजा के मन में प्रश्न था। वह कौन था, जो वेदपाठी बनकर यज्ञ में विघ्न डाल रहा था ?

महर्षि ने बताया—'वह अकाल था। तुम्हारे राज्य में डेरा डालने के लिए आया था। ये बादल उसी का प्रकोप बनकर बरस रहे थे। अब सब ठीक हो गया।"

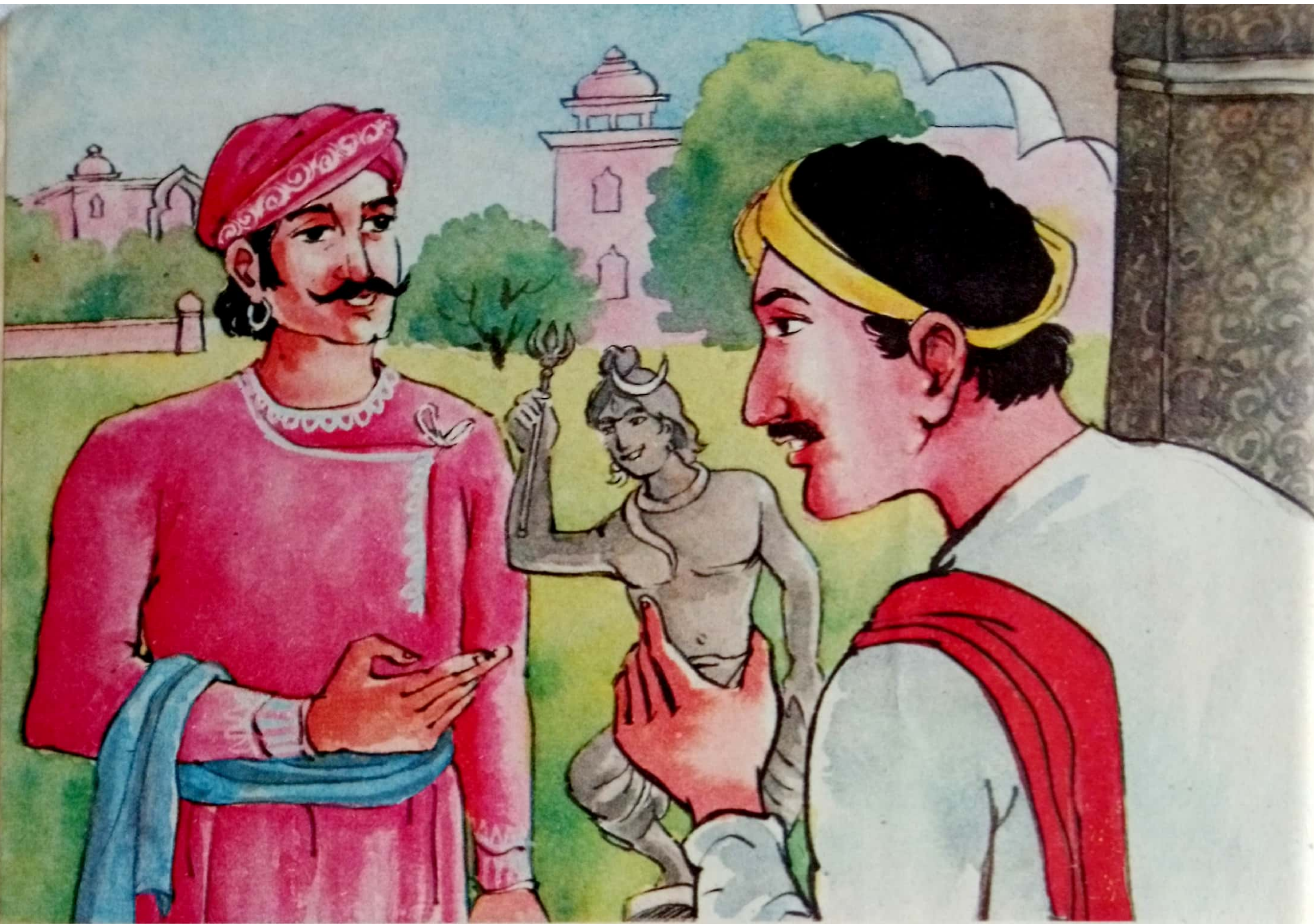
यह सुनकर सब धन्य-धन्य हो उठे। महर्षि मंद-मंद मुसकरा रहे थे। ●

नंदन एलबम : ९२



जन्म : ३१ अक्तूबर १८७५
निधन : १५ दिसम्बर १९५०

भारत रत्न
सरदार वल्लभभाई पटेल



किसकी मूरत

—संतोष

एक राजा था। वह बड़ा ही कला प्रेमी था। कलाकारों का खूब आदर-सत्कार करता था। उसके दरबार से कभी कोई कलाकार खाली हाथ वापस नहीं लौटता था। राज्य में प्रत्येक वर्ष एक कला प्रतियोगिता होती थी। जिस कलाकार की बनाई हुई मूर्ति सबसे अच्छी होती थी, उसे राजा अपने हाथ से ढेर सारे इनाम देता था।

राजा के मंत्री का एक पुत्र था। उसका नाम श्याम था। उसे भी मूर्ति बनाने का शौक था। वह भी इस प्रतियोगिता में कई बार भाग ले चुका था। मगर वह एक बार भी सर्वश्रेष्ठ मूर्तिकार का पुरस्कार नहीं जीत पाया था। श्याम की इच्छा थी कि उसे भी एक बार पुरस्कार मिले। उसका नाम पूरे राज्य में फैले। पुरस्कार न मिलने से वह काफी उदास रहने लगा था। मंत्री से अपने पुत्र की उदासी देखी न गई। उसने निश्चय किया कि वह इस बार अपने पुत्र को अवश्य पुरस्कार दिलवाएगा।

प्रतियोगिता काफी नजदीक आ गई थी। श्याम इस बार भी अच्छी मूर्ति नहीं बना सका था। मंत्री मूर्ति देखते ही समझ गया कि इस बार भी पुरस्कार श्याम को नहीं मिल पाएगा। वह श्याम को पुरस्कार दिलवाने का उपाय सोचने लगा।

प्रतियोगिता से एक दिन पहले की बात है। मूर्तिकार अपनी-अपनी मूर्ति लेकर आने लगे थे। प्रतियोगिता का स्थान नियत था। सब अपनी-अपनी मूर्ति वहीं रख रहे थे। मंत्री प्रत्येक मूर्ति को बड़े ध्यान से देख रहा था। अचानक उसकी नजर एक बहुत सुंदर मूर्ति पर पड़ी। मूर्ति को देखकर मंत्री दंग रह

गया। उसे विश्वास हो गया कि इसे ही पुरस्कार मिलेगा। वह मूर्ति को हथियाने का उपाय सोचने लगा।

अचानक उसे एक उपाय सूझा। उसने मूर्तिकार गनपत को अपने पास बुलाया और कहा—"तुम्हारी मूर्ति तो बहुत सुंदर है। मैं इसे अच्छी तरह देखना चाहता हूं। तुम इसे लेकर मेरे घर चलो।"

मंत्री के मुंह से मूर्ति की प्रशंसा सुनकर गनपत बड़ा खुश हुआ। वह अपनी मूर्ति मंत्री के घर ले गया। घर पर मंत्री ने गनपत से वह मूर्ति छीन ली। उसने गनपत के हाथ-पैर बांधकर उसे एक कमरे में बंद कर दिया।

गनपत से मूर्ति छीनकर मंत्री अपने पुत्र के पास गया। बोला—"बेटे, मैं तेरे लिए एक बहुत सुंदर मूर्ति लाया हूं। अब तुम जरूर पुरस्कार जीत लोगे।"

मूर्ति देखकर श्याम चकित रह गया। उसने पूछा—"आप इसे कहां से लाए हैं पिता जी?"

—"इससे तुम्हें कुछ मतलब नहीं। तुम तो बस इसे प्रतियोगिता में ले जाओ।"

पहले तो श्याम उस मूर्ति को लेने के लिए राजी नहीं हुआ। मगर बाद में अपने पिता के बहुत जोर देने पर वह तैयार हो गया।

वह मूर्ति सचमुच थी ही अनोखी। लिहाजा श्याम को सर्वश्रेष्ठ मूर्तिकार का पुरस्कार मिला। इससे मंत्री बड़ा खुश हुआ।

घर आकर मंत्री ने गनपत के हाथ-पैर खोल दिए। गनपत उदास मन से मंत्री के घर से चल दिया। वह समझ नहीं पा रहा था कि अब क्या करे! मंत्री की शिकायत राजा से करे अथवा नहीं? अचानक उसकी निगाह सेनापति के घर पर पड़ गई। उसने सोचा कि सेनापति को चलकर सारी बात बतानी चाहिए। शायद वह कुछ कर सकें।

गनपत सेनापति के घर गया। उसने सेनापति से कहा—"सेनापति जी, मेरे साथ बहुत बड़ा अन्याय हुआ है।" फिर पूरी घटना बता दी।

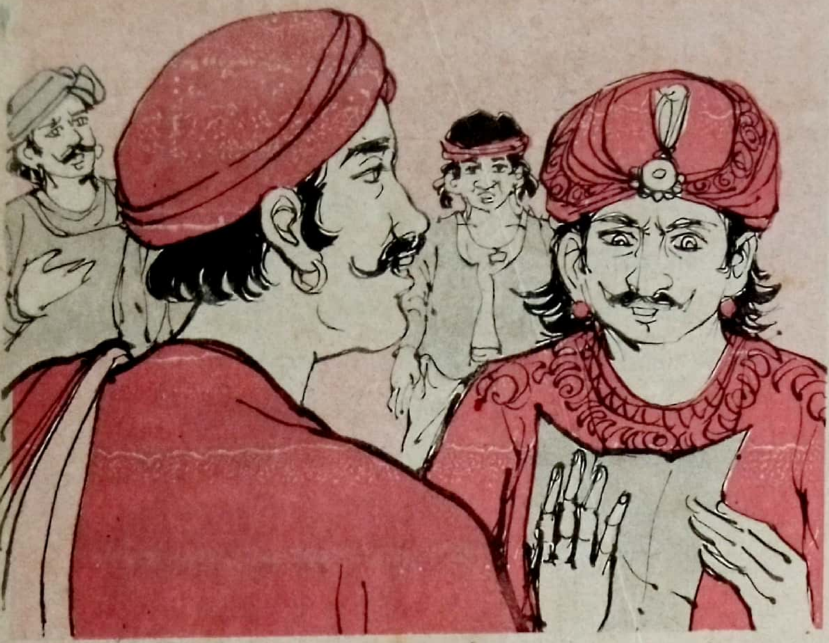
कुछ क्षण खामोशी छाई रही। खामोशी को तोड़ते हुए सेनापति ने कहा—"अभी तो हम कुछ नहीं कर सकते। मगर अगले वर्ष हम मंत्री को जरूर सजा दिलवा देंगे। अगले वर्ष तुम अपनी जगह अपने भाई को भेजना। प्रतियोगिता में जाने से पहले मूर्ति यहां लेकर आना।" सेनापति से आश्वासन पाकर गनपत अपने घर लौट गया।

धीरे-धीरे फिर प्रतियोगिता का समय नजदीक आ गया। इस बार भी गनपत ने बहुत सुंदर मूर्ति बनाई। मूर्ति लेकर गनपत और उसका भाई रामदयाल सेनापति के घर गए। सेनापति ने एक कागज का टुकड़ा लेकर उस पर लकीरें खींचीं। फिर उसने वह कागज रामदयाल को दिया और कहा—"इस कागज को मूर्ति के अंदर डाल दो।"

रामदयाल ने उस कागज को मूर्ति के अंदर डाल दिया। फिर वह प्रतियोगिता स्थल की तरफ चल दिया। वहां पर बड़ी अच्छी-अच्छी मूर्तियां रखी हुई थीं। रामदयाल ने भी अपनी मूर्ति वहां रख दी।

तभी मूर्तियों को देखता हुआ मंत्री वहां आया। रामदयाल की मूर्ति देखकर वह दंग रह गया। उसे लगा कि इस वर्ष इसी मूर्ति पर इनाम मिलेगा। उसने उस मूर्ति को हथियाने का फैसला किया। मंत्री





रामदयाल के पास आकर बोला—"तुम्हारी मूर्ति बड़ी सुंदर है। मैं इसे ठीक प्रकार से देखना चाहता हूं। तुम इसे लेकर मेरे घर चलो।" रामदयाल तुरंत मंत्री के साथ चल दिया।

घर आकर मंत्री ने रामदयाल से मूर्ति छीन ली। फिर उसके हाथ-पैर बांध कर एक कमरे में बंद कर दिया। मूर्ति उसने अपने पुत्र श्याम को दे दी।

श्याम मूर्ति लेकर प्रतियोगिता में गया। इस वर्ष भी उसकी मूर्ति को सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया। राजा स्वयं इनाम देने के लिये उठ खड़ा हुआ। अचानक सेनापति ने कहा—"महाराज, जरा रुकिए।"

राजा ने आश्चर्य से सेनापति की तरफ देखा और पूछा—"क्या बात है, सेनापति जी ?"

—"महाराज, मुझे मेरे गुप्तचरों ने बताया है कि कुछ लोगों ने आपके खिलाफ एक षड्यंत्र रचा है। उन्होंने आपके पड़ोसी राजा से मिलकर, महल में आपकी हत्या की योजना बनाई है....।"

"मगर उस षड्यंत्र का इस मूर्ति से क्या सम्बंध है ?"—राजा ने सेनापति की बात काटते हुए पूछा।

"है महाराज। इस मूर्ति का षड्यंत्र से गहरा सम्बंध है। इस मूर्ति में ही आपके राजमहल में पहुंचने का नक्शा छिपाकर रखा गया है। नक्शा इस मूर्ति के साथ शत्रु को सौंपने की योजना है।"—सेनापति ने कहा।

सेनापति की बात सुनकर सभी हैरान रह गए।

खामोशी को तोड़ते हुए राजा ने आदेश दिया—"इस मूर्ति को तोड़ा जाए।"

राजा का आदेश पाकर मूर्ति को तोड़ दिया गया। मूर्ति के अंदर नक्शा पाकर राजा को बड़ा क्रोध आया। उसने गरजकर पूछा—"यह क्या है श्याम ?"

"महाराज, यह मूर्ति मैंने नहीं बनाई। मुझे तो यह पिता जी ने लाकर दी थी।"—श्याम ने सत्य बात कह दी।

राजा ने क्रोधित नजरों से मंत्री की तरफ देखा। मंत्री का डर के मारे बुरा हाल हो रहा था। उसने कहा—"महाराज, मैंने आपके खिलाफ कोई षड्यंत्र नहीं रचा। मैंने तो यह मूर्ति रामदयाल से छीनी थी। जरूर उसी ने आपके खिलाफ षड्यंत्र रचा होगा। रामदयाल मेरे घर में बंद है।"

मंत्री की बात सुनकर राजा ने आदेश दिया कि तुरंत रामदयाल को बुलाया जाए। राजा का आदेश सुनकर सेनापति बोला—"महाराज, आपके खिलाफ किसी ने कोई षड्यंत्र नहीं रचा है। इस कागज पर कोई नक्शा नहीं बना है। इस पर तो आड़ी-तिरछी रेखाएं ही हैं।"

"फिर तुमने इतना बड़ा झूठ क्यों बोला ?"—राजा ने पूछा

—"एक सत्य उगलवाने के लिए मैंने झूठ बोला था, महाराज। पिछले वर्ष मंत्री जी ने गनपत की मूर्ति छीनकर श्याम को दे दी थी। श्याम ने तब पुरस्कार जीत लिया था। मुझे मालूम था, मंत्री जी ऐसा इस वर्ष भी करेंगे। इसलिए मैंने गनपत से मिलकर यह नाटक रचा। मैं मंत्री जी की करतूतों को सरेआम खोलना चाहता था।"

सारी बात सुनकर राजा सेनापति से बड़ा खुश हुआ। उसे अपने गले का कीमती हार इनाम में दे दिया। गनपत को मूर्तिकार का प्रथम इनाम दे दिया गया। धूर्त मंत्री व उसके पुत्र को कैदखाने में डाल दिया गया। इनाम पाकर गनपत खुशी-खुशी अपने घर चला गया। ●

चुप की अंगुली

—चन्दा लाल

किसी गांव में एक बुढ़िया रहती थी, बेहद दुष्ट।

उसका एक ही बेटा था जिसका विवाह हो चुका था। बेटा कमाने शहर चला जाता था। वह महीने के अंत में अपनी मां और पत्नी से मिलने कुछ दिनों के लिए आता था। बाकी दिन वह शहर में ही गुजारता था। सास-पतोहू गांव में ही रहती थीं।

पतोहू का नाम था लक्ष्मी, पर थी बेचारी बड़ी अभागी। सारा दिन खटती रहती, तब जाकर शाम को दो रूखी-सूखी रोटियां नसीब होतीं। उन्हें वह नमक के साथ किसी तरह निगल लेती। सुबह उठकर खाना बनाना, गाय-बैलों की देखभाल करना, गोबर का गोइठा बनाना, सारे काम उसी के जिम्मे थे। और बुढ़िया सारा दिन गांव में मटर-गश्ती किया करती।

एक दिन की बात है, सबेरे-सबेरे बुढ़िया ने लक्ष्मी से कहा—"बहू, मैं पास के गांव में अपनी एक ननद से मिलने जा रही हूं। शाम तक आ जाऊंगी। तब तक तुम घर का काम निबटा लेना।" इतना कहकर वह चलती बनी। लक्ष्मी दरवाजे से उसे जाते हुए टुकुर-टुकुर देखती रही। उसे तो कहीं आने-जाने की भी छूट नहीं थी।

भारी मन से वह घर के भीतर लौट रही थी कि उसकी नजर छप्पर पर फैले करेले की बेल पर पड़ी। अचानक उसकी आंखें चमक उठीं। उसने सोचा—'सास तो शाम तक वापस आएंगी, तब तक क्यों न करेले की सब्जी और भात बनाकर खा लिया जाए।'

उसने झटपट कुछ करेले तोड़े और जुट गई खाना बनाने में। जल्दी-जल्दी सब्जी और भात बनाकर उसने अपनी थाली परोसी और बैठ गई खाना खाने। अभी उसने एक कौर ही मुंह में रखा था कि दरवाजे पर दस्तक हुई—"बहू, ओ बहू, दरवाजा खोल।"

लक्ष्मी ने सोचा—'अभी तो शाम भी नहीं हुई है। अभी से सास कैसे आ गईं? हाय, अब मैं क्या करूं?' उसने परोसी हुई थाली देखी और आव देखा न ताव, पानी के घड़े को खाली कर सारा खाना उसी में डाल दिया।

दरवाजे पर फिर आवाज हुई—"अरी, सो गई है क्या? दरवाजा क्यों नहीं खोलती?"

लक्ष्मी ने घड़ा उठाया और दरवाजा खोल दिया। बुढ़िया दरवाजा खुलते ही बरस पड़ी—"सो गई थी क्या? इतनी देर क्यों लगा दी?" घड़े पर नजर पड़ी तो कहा—"अभी तक पानी भी नहीं भरा है?"

"हां मां, जरा आंख लग गई थी। अब जा रही हूं पानी भरने।"—लक्ष्मी ने आंखें मलते हुए धीरे-से कहा।

"ठीक है, जा-जा जल्दी कर। दोपहर हो गई है, पर इसे सोने से फुर्सत हो तब न। अरे, वह तो ननद से मुलाकात नहीं हो पाई, इसी से मेरा जल्दी लौटना हो गया। वरना यह तो सारा दिन सोती ही रहती।" —बुढ़िया बड़बड़ाती रही।

गांव के एक छोर पर सुनसान में एक देवी का मंदिर था। लक्ष्मी घड़ा उठाए पानी भरने के बहाने उसी मंदिर में जा पहुंची। मंदिर के अंदर जाकर उसने द्वार अच्छी तरह बंद कर लिया। वहीं देवी के सामने बैठकर घड़े से खाना निकाल, जल्दी-जल्दी खाने लगी। उसे इस तरह खाते देख, देवी को बड़ी जोर से हंसी आ गई—"हा! हा! हा! हा!"



लक्ष्मी ने हड़बड़ाकर देवी को देखा। दूसरे ही क्षण क्रोधित होकर उसने देवी से कहा—"चुप! आज तक मैं आधा पेट खाती रही, तो चुपचाप तमाशा देखती रही। अब आज पेट भरकर खाने का मौका मिला है, तो मुझे देखकर हंसती है? चुप रह। मुंह पर अंगुली रख!"

लक्ष्मी का इतना कहना था कि देवी की हंसी अचानक रुक गई। हठात् उनकी एक अंगुली चुप की मुद्रा में उनके होंठों पर चली गई।

लक्ष्मी ने पेट भरकर खाना खाया! पास के तालाब पर जाकर पानी पिया और संतुष्टि के साथ घड़े में पानी भरकर घर की ओर चल पड़ी!

दूसरे दिन सवेरे जब लोग मंदिर में पूजा के लिए आए, तो देवी की मूर्ति को मुंह पर अंगुली रखे देखकर भौचक्के रह गए! शीघ्र ही आग की भांति यह खबर सारे गांव में फैल गई कि देवी नाराज हो गई हैं।

पूजा, यज्ञ, चढ़ावा सब होने लगे, पर देवी की अंगुली उनके होंठों से न हटी। भजन-गाने से भी उन्हें खुश करने की कोशिश की गई, पर देवी नहीं मानी। सारे लोग किसी भावी विपत्ति की आशंका से भयभीत हो गए। अंत में राजा ने ढिंढोरा पिटवाया कि जो व्यक्ति देवी की अंगुली उनके होंठों से हटाकर उन्हें पहले वाली अवस्था में ला देगा, उसे खूब इनाम दिया जाएगा।

लक्ष्मी ने सुना, तो सास से बोली—"मां जी, मैं जाऊं देवी के मंदिर में?"



सास ने आंखें तरेरकर कहा—"अरी, बड़े-बड़े महात्मा तो हार गए और तू चली है देवी को खुश करने। जाकर चुपचाप घर के काम पूरे कर।"

पर लक्ष्मी तालाब से पानी भरने के बहाने मंदिर की ओर चल दी। मंदिर पहुंचकर उसने पुजारी से कहा कि उसे कुछ देर मंदिर में अकेले रहने दिया जाए। पुजारी ने इजाजत दे दी। तब लक्ष्मी ने अंदर जाकर दरवाजा बंद कर लिया। अब मंदिर में सिर्फ देवी थीं और उनके सामने खड़ी थी लक्ष्मी, कमर पर दोनों हाथ रखे हुए।

"हूं, तो लगता है तू मेरा भेद खोलकर ही रहेगी। मेरे एक पल का भी सुख तुझसे देखा नहीं जा रहा है? अरी, जल्दी होंठों से अंगुली हटाती है या..."—लक्ष्मी ने तुनककर कहा।

इतना सुनना था कि देवी का हाथ तुरंत होंठों से हटकर पहले की तरह हो गया। लक्ष्मी दरवाजा खोलकर बाहर निकल आई।

लोगों की भीड़ दरवाजे पर खड़ी थी, उन्होंने देवी को देखा, तो चकित रह गए। देवी तो ऐसे खड़ी थीं, मानो कभी कुछ हुआ ही न हो।

पल भर में यह बात पूरे गांव में फैल गई कि लक्ष्मी ने देवी की नाराजगी दूर कर दी। बात राजा के कानों में भी पड़ी। उन्होंने लक्ष्मी को दरबार में आने को कहा। लक्ष्मी की सास लक्ष्मी को लेकर राज-दरबार गई! राजा ने लक्ष्मी से कहा—"मैं तुम्हारी देवी-भक्ति से बहुत खुश हूं। तुम्हारे कारण देवी की नाराजगी दूर हुई, जिससे नगर पर आया संकट टल गया।" राजा ने लक्ष्मी और उसकी सास को सोना-चांदी और उपहार देकर घर भेज दिया।

उस धन से लक्ष्मी के पति ने गांव में ही एक छोटी-सी दुकान खोल ली। इधर बुढ़िया भी इस घटना से बेहद डर गई! उसने सोचा—'अरे बाप रे! जब लक्ष्मी से देवी भी डरती हैं, फिर तो मुझे भी चुप रहना चाहिए। जाने कब यह मुझे भी सीधा कर दे?' लक्ष्मी अपने पति और सास के साथ चैन से रहने लगी। ●

उठ बहादुर

—टी. पक्षिराजन

किला अब भी सीना ताने खड़ा था पांचालंकुरिची का। अंधेरी रात, चारों ओर सन्नाटा। किले की दीवारों में बने झरोखों से हल्का-हल्का प्रकाश छनकर बाहर आ रहा था। इससे किला और अधिक रहस्यपूर्ण लग रहा था।

किले को चारों ओर से अंग्रेज सेना ने घेरा हुआ था। अंग्रेज हर कीमत पर उसे जीतना चाहते थे, ताकि उसके शासक वीर पांड्या कट्टबोम्मन का सिर झुकाया जा सके। कट्टबोम्मन ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार करने से इंकार कर दिया था।

अंग्रेज भला इसे कैसे सहन करते! वे तो पूरे भारत में अपना साम्राज्य स्थापित करना चाहते थे। आखिर मेजर बैनरमैन किले को जीतने का इरादा लिए आगे बढ़ा। उसके साथ अंग्रेजों की विशाल सेना थी। तोपें, बंदूकें, बारूद और आधुनिक अस्त्र-शस्त्र का भंडार था। अंग्रेजों की सेना में कई भारतीय राजा, सेनापति और उनकी सेनाएं भी शामिल थीं। इन लोगों ने अंग्रेजों की दासता स्वीकार कर ली थी।

मेजर बैनरमैन कुछ परेशान था। बेचैनी से इधर-उधर टहल रहा था। असल में उसने पांचालंकुरिची के किले को जीतना जितना आंसान समझा था, उतना आसान न था। मद्रास के गवर्नर से आदेश मिलते ही उसने प्रतिज्ञा की थी—'मैं चार घंटे के भीतर किले को नष्ट करके धूल में मिला दूंगा।' पर दो दिन बीत चुके थे। किला सही-सलामत खड़ा था।

हारकर बैनरमैन ने प्रमुख अधिकारियों को बुलाया। देर तक सोच-विचार चलता रहा। फिर भी कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। बैनरमैन गुस्से में चिल्लाया— "आखिर इस मिट्टी की दीवार को गिराने में हमें कितना समय लगेगा?"

कैप्टन विलियम्स खामोश था। कोई नहीं बोल रहा था। आखिर रघुनाथर आगे बढ़ा। वह ऐट्टयपुरम का सेनापति था। ऐट्टयपुरम के राजा ऐट्टप्पा नायक्कर ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली थी। तभी से रघुनाथर भी राज्य के सैनिकों के साथ अंग्रेजों की सेना में शामिल हो गया था। रघुनाथर ने मुसकराते हुए कहा— "क्षमा कीजिए, किले की दीवार इतनी कमजोर नहीं है जितनी आप समझते हैं!"

"क्या मतलब?"— बैनरमैन चौंक उठा।

"असल में किले की दीवार मिट्टी में मक्का, भूसा, गन्ना और बहुत-सी चीजें मिलाकर बनाई गई है। फिर यह दीवार इकहरी नहीं है। इसकी तीन परतें हैं। बाहरी दो परतों के बीच में तरह-तरह का अनाज भरा गया है। इस कारण किले की दीवार को गिराना



आसान बात नहीं है।''

''आश्चर्य!'' —कैप्टन विलियम्स अवाक् रह गया।

''फिर एक बात और है।''—रघुनाथर ने कहा—''पांचालंकुरिची के योद्धा अपनी मातृभूमि पर जान देना भी जानते हैं। आज आपने देखा ही है। कट्टबोम्मन का बेटा कितनी बहादुरी से लड़ता हुआ मारा गया। हमारे कितने ही सैनिकों को उसने मौत के घाट उतार दिया। उसके जमीन पर गिरते ही, उसकी पत्नी ने तलवार उठा ली। देखते ही देखते हमारे अनेक सैनिकों को काट डाला। फिर वह खुद भी रणभूमि में काम आई।''

कैप्टन विलियम्स और मेजर बैनरमैन, दोनों के चेहरे फक पड़ गए। कुछ देर बाद मेजर ने पूछा—''अच्छा रघुनाथर, मान लिया तुम्हारी बात ठीक है। पर तुमने यह तो बताया नहीं कि इस किले को जीता कैसे जा सकता है?''

''एक ही उपाय है।''—रघुनाथर कुछ सोचकर बोला—''सेनाओं को किले के चारों ओर बिखराने की बजाए, एक ही जगह सारी ताकत लगा दी जाए।''

''वाह! सुझाव अच्छा है।''— मेजर बैनरमैन और कैप्टन विलियम्स खुशी से भरकर बोले। जल्दी ही उन्होंने रणनीति बदल दी। इसका परिणाम भी नजर आने लगा। पांचालंकुरिची के सैनिक अब तेजी से खत्म हो रहे थे। उनके पास तलवार, भाले और तीर-कमान जैसे हथियार थे। उनसे बंदूकों और तोपों का सामना करना मुश्किल था।

पर कट्टबोम्मन इस संकट में भी निर्भय था। उसने प्रजा और मुखियाओं को बुला लिया। कहा—''अब तो एक ही रास्ता है। मातृभूमि के लिए लड़ते-लड़ते शहीद होना। जो हंसते-हंसते मौत का सामना कर सकते हों, वे मेरे साथ रहें। बाकी लोग चाहें, तो जा सकते हैं।''

सुनते ही प्रजा ने जयघोष किया। सभी गांवों के मुखिया एक साथ बोले—''हम लड़ते-लड़ते मर जाएंगे, लेकिन शत्रु के दांत अवश्य खट्टे करेंगे।''

लेकिन तभी कट्टबोम्मन का सलाहकार तानापति पिल्लै उठ खड़ा हुआ। बोला—''मैं आपकी भावनाओं की कद्र करता हूं। लेकिन क्षमा कीजिए, मेरी राय कुछ और है।''

''वह क्या?''— कट्टबोम्मन के चेहरे पर परेशानी झलक उठी।

तानापति पिल्लै ने कहा—''आस-पड़ोस के सभी राजाओं ने अंग्रेजों के आगे आत्मसमर्पण कर दिया है। आप अकेले ही स्वतंत्रता की मशाल जलाए हुए हैं। लेकिन आप चारों ओर से न केवल अंग्रेज सेना से, बल्कि गद्दारों से भी घिर चुके हैं। किले की गोपनीय सूचनाएं शत्रुओं तक पहुंच रही हैं। इस हालत में किले को छोड़कर चले जाने के सिवा कोई और रास्ता नहीं है।''

सुनते ही कट्टबोम्मन क्रोध से तमतमा उठा। उसके भाई ऊमैतुरै और दुरैसिंहम तो आपा ही खो बैठे। दुरैसिंहम चीखा—''यह असम्भव है!''

ऊमैतुरै अक्सर चुप रहता था, उसने जमीन पर बिखरे अन्न के कुछ दाने उठाए। उन्हें हथेली पर मसलकर फूंक मारी। भूसा हवा में उड़ गया। बस, इतना संकेत काफी था। शेष उसकी लाल-लाल आंखों ने बता दिया। मतलब यह कि उसे आज्ञा दी जाए, तो वह अंग्रेजों को मार-काटकर खत्म कर सकता है।

थोड़ी देर के लिए तो तानापति पिल्लै और कट्टबोम्मन सहित सभी चुप हो गए। फिर तानापति ने कहा—''हम कायर नहीं हैं, न हम अंग्रेजों से डरकर भाग रहे हैं। पर हमें किले से बाहर निकलकर संगठन करना चाहिए, तभी अंग्रेजों को हराया जा सकता है।''

यह बात कट्टबोम्मन को ठीक लगी। उसने किले को छोड़ने की बात मंजूर कर ली। ऊमैतुरै और दुरैसिंहम के चेहरों पर निराशा थी। दुरैसिंहम बोला—''आपका निर्णय हमें स्वीकार है। लेकिन याद रखिए, एक न एक दिन आपको पछताना पड़ेगा।''

कट्टबोम्मन ने उसी रात साथियों सहित किला छोड़

दिया।

अंग्रेजों ने रघुनाथर को कट्टबोम्मन का पीछा करने की आज्ञा दी। रघुनाथर चप्पे-चप्पे का भेद जानता था। जल्दी ही उसने कट्टबोम्मन का पता लगा लिया। जहां-जहां कट्टबोम्मन जाता, पीछे से आकर रघुनाथर की सेनाएं उसे घेर लेतीं। उधर अंग्रेजों के भय से कोई भी कट्टबोम्मन का साथ देने के लिए तैयार नहीं था। कट्टबोम्मन परेशान था, पर फिर भी उसने आशा नहीं छोड़ी।

तीन सप्ताह इधर-उधर भटकते बीत चुके थे। सैनिकों के घोड़े एक-एक कर मरते जा रहे थे। कपड़े धूल-मिट्टी से सन गए थे। आखिर भटकते हुए वे पुडुक्कोटै पहुंचे। वहां के राजा विजयरघुनाथ तोंडेमान ने प्रसन्नतापूर्वक उनका स्वागत किया। कहा—"जब तक चाहें, आप यहां रहें। कहीं भटकने की आवश्यकता नहीं है।"

कट्टबोम्मन को कुछ आशा बंधी। पुडुक्कोटै में रहते हुए वह अंग्रेजों के खिलाफ आगे संघर्ष की योजना बनाने लगा। विजयरघुनाथ तोंडेमान के सत्कार ने उसका मन मोह लिया था। पर उसे पता नहीं था कि विजयरघुनाथ भीतरघात कर रहा था। उसने अंग्रेजों को कट्टबोम्मन के अपने यहां होने की सूचना दे दी थी।

एक दिन कट्टबोम्मन भोजन करके विश्राम कर रहा था। अचानक उसकी नींद खुली। उसने देखा, तलवार-भाले लिए शत्रु सैनिक चारों ओर खड़े हैं। अंग्रेज सेना ने उसे गिरफ़्तार कर लिया। उसके दोनों भाई पहले ही गिरफ़्तार हो चुके थे।

कुछ दिनों बाद कट्टबोम्मन को सजा देने के लिए एक खुले मैदान में लाया गया। प्रजा ने यह सुना, तो अपने वीर राजा के दर्शन करने को उमड़ पड़ी। विशाल भीड़ के सामने बैनरमैन ने कट्टबोम्मन पर आरोप लगाया—"तुमने हमें कर देने से इंकार किया, क्यों ?"

कट्टबोम्मन बोला—"इसलिए कि हम आजाद हैं। यह धरती हमारी है। हमारी प्रजा मेहनत करके फसल उगाती है, फिर हम विदेशियों को कर क्यों दें ?"

बैनरमैन भड़क उठा। बोला—"तुमने लोगों को हमारे खिलाफ भड़काया। राजद्रोह किया, हमारे सैनिकों को मौत के घाट उतारा..."

—"अगर मेरा बस चले, तो मैं यह काम फिर करूंगा, बार-बार करूंगा। क्योंकि आप हमें गुलाम बनाना चाहते हैं। गुलामी हमें किसी भी शर्त पर मंजूर नहीं है।"

"तो सुनो ! तुम्हें फांसी की सजा दी जाती है..."—बैनरमैन ने कहा।

सुनकर कट्टबोम्मन हंसा— "आखिर आप ज्यादा से ज्यादा यही तो दे सकते हैं..."

अगले ही क्षण कट्टबोम्मन की आंखों से आंसू की दो बूंदें टपक गईं और जमीन पर जा पड़ीं। उसने चारों ओर खड़ी प्रजा से कहा—"यह न समझना कि मैं डर गया। बल्कि ये आंसू तो पश्चात्ताप के हैं। मुझे अपने बहादुर भाइयों की बात याद आ रही है। उन्होंने मुझे किला छोड़कर न जाने को कहा था। आखिरी दम तक लड़ने की सलाह दी थी। काश, मैंने उनकी सलाह मानी होती और लड़ते-लड़ते शान से मारा जाता।"

फिर कट्टबोम्मन तेजी से उधर चल पड़ा, जिधर फांसी का फंदा लटक रहा था। उसने खुद अपने हाथ से गले में फांसी का फंदा डाल लिया। नीचे रखी कुर्सी को ठोकर मारी और झूल गया।

अचानक वहां खड़ी भीड़ गुस्से से उफन पड़ी। उन्होंने अंग्रेज सैनिकों और अधिकारियों को घेर लिया।

अंग्रेज सैनिकों के पांव उखड़ गए।

लोगों ने कट्टबोम्मन के भाइयों ऊमैतुरै और दुरैसिंहम को आजाद करा दिया। उन्होंने फिर से अपनी सेना संगठित कर ली। अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा जमा लिया। जगह-जगह देशभक्ति के गीत गूंजने लगे। इनमें कट्टबोम्मन की वीरता और बलिदान की प्रशंसा होती थी। •

अनोखा कलाकार

—चित्रा गर्ग

नाइजीरिया में थामसन नाम का एक राजा राज्य करता था। उसका यश दूर-दूर तक फैला था। राजा के महल के पिछवाड़े एक बहुत बड़ा और पुराना, सूखा वृक्ष था। राजा उसे कटवाने के अनेक प्रयत्न कर चुका था। पर पेड़ था कि कटने का नाम ही न लेता था। आखिर राजा ने घोषणा करा दी कि जो भी व्यक्ति उस पेड़ को काटेगा, उसे एक हजार स्वर्ण मुद्राएं दी जाएंगी।

अनेक व्यक्ति तेज कुल्हाड़ी, आरी आदि लेकर पेड़ काटने आए। वे खूब मेहनत करके पेड़ काटते, पेड़ थोड़ा-सा कट जाता। पर बीच में जब थकान दूर करने के लिए आराम करने जाते, तो पेड़ फिर से ज्यों का त्यों हो जाता। आखिर उन्हें हार माननी पड़ती।

नाइजीरिया में ही लुई नाम का एक दुबला-पतला, गरीब लकड़हारा रहता था। वह बहुत मेहनती और ईमानदार था। उसके साथ उसकी पत्नी भी लकड़ी कटवाने में मदद करती थी। उन दोनों ने भी अपनी किस्मत आजमाने की सोची और राजमहल के पिछवाड़े का पेड़ काटने पहुंच गए। राजा ने कहा—"तुम बहुत दुबले-पतले हो, इतना बड़ा पेड़ नहीं काट सकोगे। बहुत बड़े-बड़े पहलवान अपना भाग्य आजमाकर लौट गए हैं।" पर लुई ने राजा से प्रार्थना की कि उसे भी पेड़ काटने की अनुमति दी जाए।

लुई पेड़ काटने लगा। कई घंटे की मेहनत के बाद वह बहुत थोड़ा पेड़ काट पाया था। तभी वह भी औरों की भांति आराम करने लगा। तब तक पेड़ फिर पहले की तरह हो गया था। दो बार ऐसा ही हुआ। लेकिन लुई ने हिम्मत नहीं हारी, उसे एक तरकीब सूझ गई। उसने फिर कई घंटे मेहनत के बाद पेड़ काटा। जब थक गया, तो उसने पत्नी से पेड़ काटने को कहा। अब जेन पेड़ काटने लगी। जेन के थकने पर लुई ने पेड़ काटना शुरू कर दिया।

इस प्रकार दिन-रात लगातार पेड़ काटने से चार दिन में पेड़ कट गया। ज्यों ही पेड़ कटकर गिरा, वनदेवी प्रकट हुई। बोली—"तुम सचमुच मेहनती हो। चाहो, तो एक वरदान मांग लो।"

गरीब लुई की समझ में नहीं आया कि वह वनदेवी से क्या मांगे। वह बोला—"मैं इस पेड़ से जो भी सुंदर वस्तु बनाना चाहूं, तुरंत बन जाए।"

वनदेवी बोली—"ऐसा ही होगा। तुम इस पेड़ की लकड़ी से जो भी बनाओगे, वह कला का अद्वितीय नमूना होगा।" कहकर वनदेवी अदृश्य हो गई।

उधर महल में शोर मच गया कि वृक्ष कट गया है। राजा के सिपाही दौड़े आए और आदरपूर्वक लुई व जेन को राजमहल में ले गए।

राजा ने लुई को एक हजार स्वर्ण मुद्राएं देने का आदेश दिया। लुई बोला—"आपसे निवेदन है कि स्वर्ण मुद्राएं देने के स्थान पर यह पेड़ मुझे दे दें और मेरे घर पहुंचवा दें।"

सारे दरबारी लुई की बात सुनकर हंसने लगे। परंतु राजा ने लुई की प्रार्थना स्वीकार कर, कटा हुआ पेड़ लुई के घर पहुंचवा दिया।

लुई ने अब सुंदर पलंग बनाना शुरू किया। वनदेवी के वरदान के कारण कुछ घंटे में ही अत्यंत सुंदर पलंग बन गया। फिर उसने एक बड़ी कुर्सी बनाई, जो अद्भुत थी। जब वह इन चीजों को बेचने चला, तो देखने वालों की भीड़ लग गई। हर व्यक्ति ज्यादा से ज्यादा बोली लगाने लगा। धीरे-धीरे बात राजा तक पहुंच गई।

राजा और रानी ने पलंग व कुर्सी देखने को राजदरबार में मंगाए, तो लुई मना नहीं कर सका। रानी ने पलंग देखते ही मुंहमांगा दाम देने को कहा। परंतु लुई कुछ न बोला। लुई की बनाई कुर्सी किसी परीलोक के राजसिंहासन से कम न लगती थी। राजा वह भी लेने को तैयार हो गया।

राजा ने लुई को दस हजार स्वर्ण मुद्राएं देने की घोषणा की। साथ ही उसे राजदरबार का मुख्य कारीगर भी नियुक्त कर लिया। ●





आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं । ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है । नीचे इसी चित्र की नकल है । नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया । उसने कुछ गलतियां कर दीं । आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए । क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं । सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है । १० गलतियां ढूंढ़ने वाला **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं । आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए । आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित **समय— १५ मिनट ।**

कहानी लिखो : ९४

सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए । इसे १५ सितम्बर '९१ तक सम्पादक 'नंदन', हिन्दुस्तान **टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१** के पते पर भेज दीजिए । चुनी गई कहानी प्रकाशित की जाएगी । पुरस्कार भी मिलेगा ।

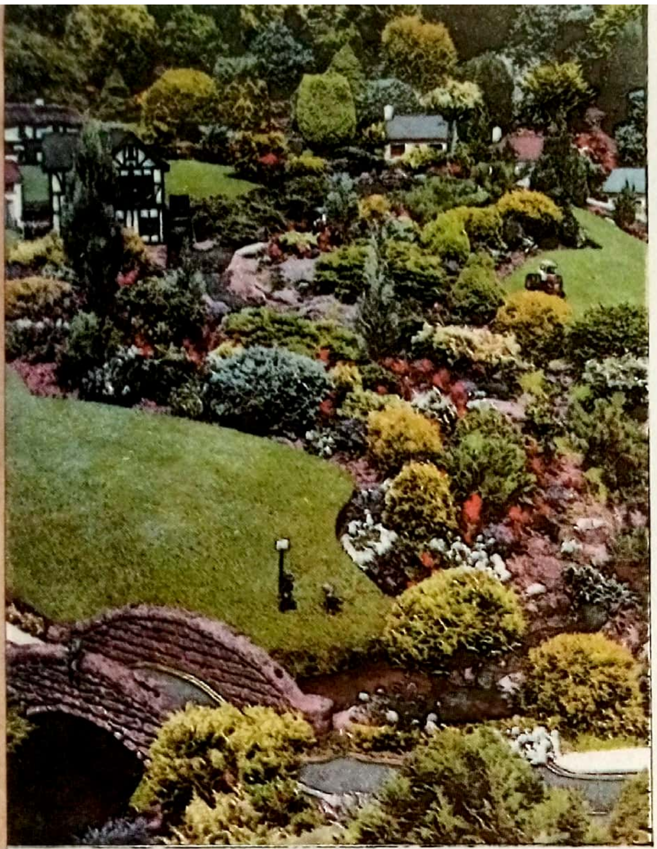
परिणाम : नवम्बर '९१



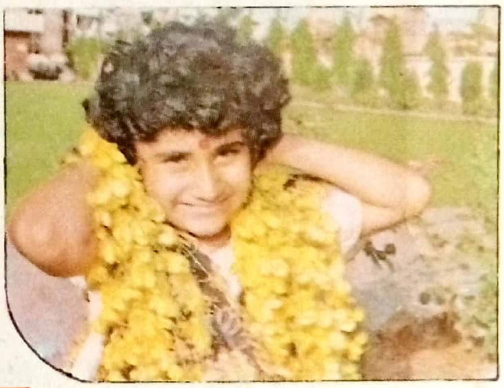
चित्र-पहेली : ९४

'हमने नाटक खेला' विषय पर रंगीन चित्र बनाइए । उसे १५ सितम्बर '९१ तक 'नंदन' कार्यालय में भेज दीजिए । **चित्र के पीछे अपना नाम-पता तथा उम्र स्पष्ट शब्दों में लिखिए ।** चुना गया चित्र प्रकाशित किया जाएगा । पुरस्कार भी मिलेगा ।

परिणाम : दिसम्बर '९१





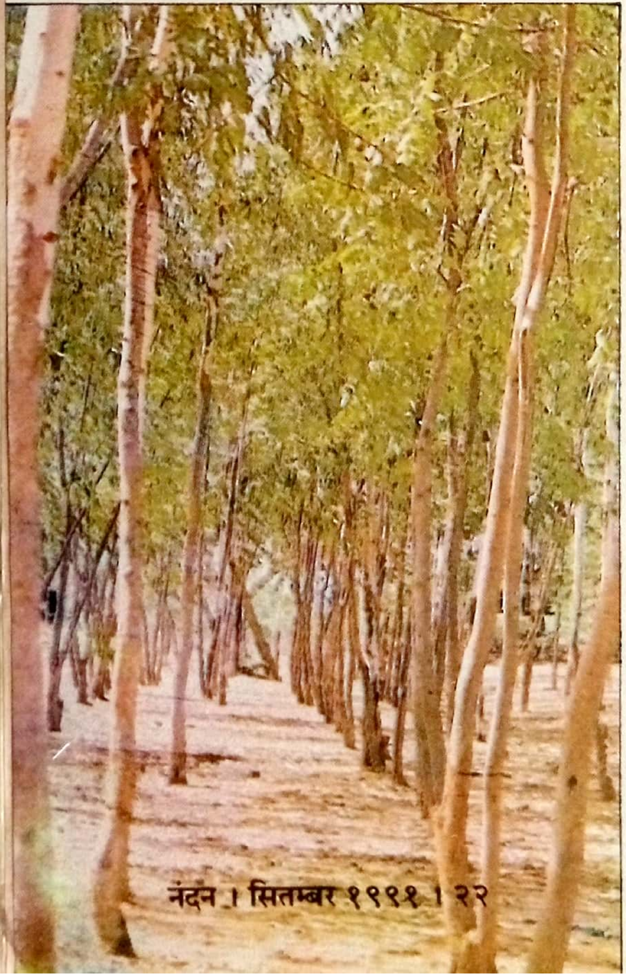


↑ **अमलतास**— पीले-पीले फूल रहे हैं झूल !

देखिए 'बातें-रंगबिरंगी' (पृष्ठ ६५)

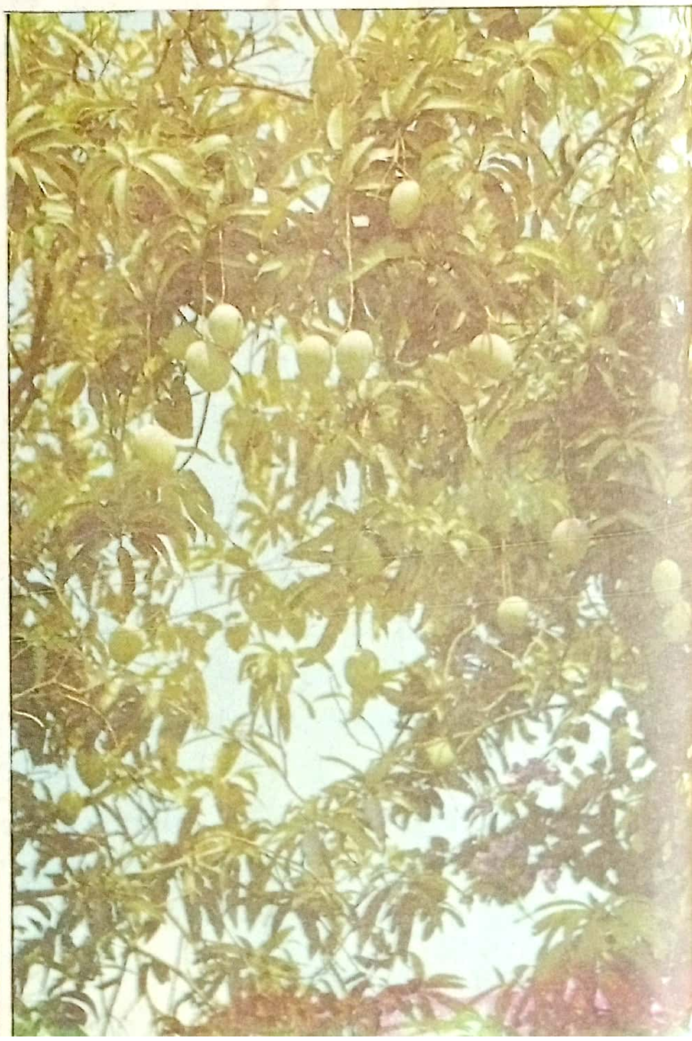
↓ **आम**— फलों का राजा ।

हरदम हंसते-गाते पेड़ काम सभी के आते पेड़



← **यूक्लिप्टस**— पहरेदार जैसे सीधे-सीधे पेड़ !

चित्र :
शमशेर अ. खान
वेद मित्र, मंजुला
टी.पी. श्रीवास्तव
श्यामसुंदर जोशी
देबव्रत बनर्जी
सी. प्रकाश







↑ **अनन्नास**—रस पिया है इसका?

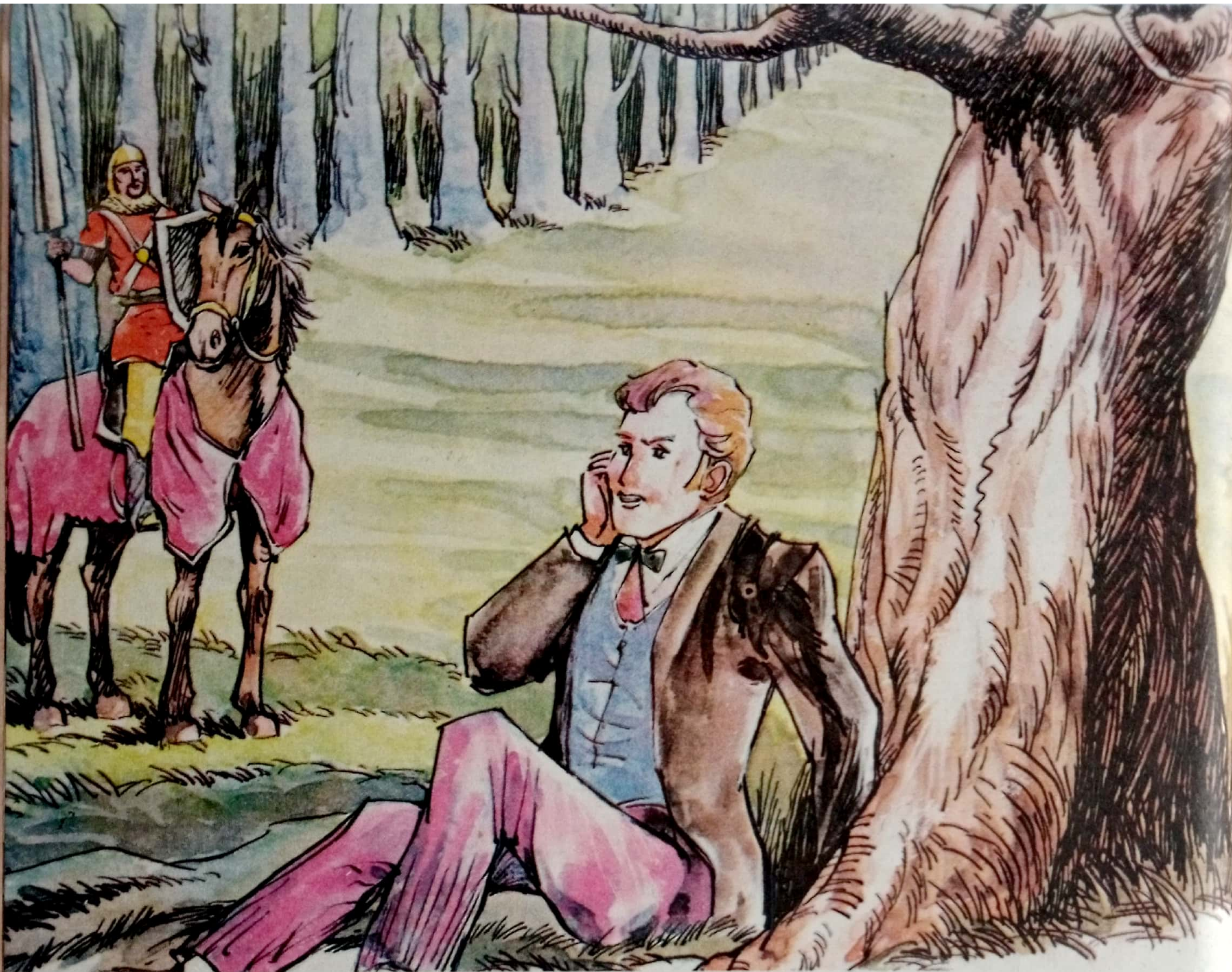
← **गुड़हल**—लाल फूलों की बहार।

पलाश (टेसू)—होली खेलते हैं टेसू के रंग से।
↓



↑ सुपारी—पान के साथ है इसका मेल!





उसने लिखा था

—मार्क ट्वेन

उसका नाम था हैंक मार्गन। वह अमरीका के हार्टफोर्ड नगर का रहने वाला था। मार्गन एक वैज्ञानिक था, मशीनों का बहुत कुशल कारीगर। नई-नई चीजें बनाने में बहुत होशियार था।

एक बार किसी से मार्गन का झगड़ा हो गया। उसके सिर पर चोट लगी और वह बेहोश हो गया। जब होश आया, तो मार्गन भौचक्का रह गया। उसने अपने को एक नई जगह में पाया। चारों ओर झाड़-झंखाड़ थे। सामने एक सैनिक हाथ में भाला लिए खड़ा था। सैनिक ने उससे कहा—"तुम अपराधी हो। मैं तुम्हें सम्राट आर्थर के दरबार में ले चलूंगा। वह तुम्हें कड़ा दंड देंगे।"

मार्गन की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। वह सोच रहा था—'मैं कहां आ गया हूं?'

असल में चमत्कार हो गया था। न जाने किस जादू से मार्गन सैकड़ों साल पुराने इंग्लैंड में जा पहुंचा था। उस समय वहां सम्राट आर्थर का शासन था। उनके मित्र जादूगर मर्लिन का बहुत प्रभाव था।

उसके सामने खड़ा सैनिक आर्थर का सामंत के था। के ने मार्गन से आगे चलने को कहा। मार्गन ने विरोध करना चाहा, तो के ने भाला उसकी ओर तान दिया। मार्गन को मजबूर होकर उसके साथ जाना

पड़ा । वह समझ गया कि यह मौका विरोध का नहीं है ।

वे केम्लोट नामक नगर में पहुंचे । सम्राट आर्थर वहीं था । मार्ग में मार्गन को बहुत से स्त्री-पुरुष मिले । वे सभी पुराने ढंग के वस्त्र पहने हुए थे । सब मार्गन को देखकर हैरान थे । उसके बारे में बात कर रहे थे । मार्गन चाहता था, किसी से पूछे कि यह सब क्या है ?

आखिर उसे एक युवक नजर आया । वह मार्गन को देखकर कुछ मुसकराया । मार्गन ने उससे बातें कीं तो हैरान रह गया । अब उसे पता चला कि वह न जाने किस जादू से सैकड़ों वर्ष पीछे के युग में पहुंच गया है ।

मार्गन ने उस युवक को क्लैरेंस कहकर पुकारा । क्लैरेंस ने मार्गन को बताया कि उसे मृत्यु दंड मिलेगा । राजा बंदी लोगों को यही दंड देते हैं ।

के मार्गन को राजा आर्थर के सामने ले गया । उसके बारे में उल्टा-सीधा कहा, तो राजा ने क्रोधित होकर मार्गन को मृत्यु दंड दे दिया । उसे तहखाने में कैद कर दिया गया । रात को क्लैरेंस मार्गन से मिला । क्लैरेंस दुखी था कि मार्गन को बिना बात मृत्यु दंड मिला है ।

उधर मार्गन मन ही मन कुछ हिसाब लगा रहा था । उसके हिसाब से अगले दिन सूर्य ग्रहण होना चाहिए था । और इसी बात से मार्गन को अपने छुटकारे की संभावना दिखाई दी । उसने क्लैरेंस से कहा—''तुम आर्थर के पास जाओ । उससे कहो कि मार्गन एक जादूगर है । कल वह अपने जादू से सूर्य को अदृश्य कर देगा ।''

क्लैरेंस ने आर्थर से यह सब कह दिया । पर राजा ने इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया । सुबह मार्गन को फांसी देने के लिए मैदान में ले जाया गया । तभी सूर्य ग्रहण शुरू हो गया । सूर्य अदृश्य हो गया । सब तरफ अंधेरा छा गया । वहां बैठे लोग घबरा गए ।

आर्थर ने कहा—''मार्गन, तुम सूर्य को फिर प्रकट कर दो। हम तुम्हें क्षमा कर देंगे ।''

थोड़ी देर में ग्रहण समाप्त हों गया । सूर्य प्रकट हो गया । राजा आर्थर ने मार्गन को एक बड़ा जादूगर समझ लिया । उसे अपना प्रमुख मंत्री बना लिया ।

कुंछ समय बाद राजा आर्थर से आज्ञा लेकर मार्गन देश भ्रमण पर निकल पड़ा । रास्ते में उसने देखा, जनता गरीब और दुखी थी । राजा के नाम पर सामंत बेकसूर लोगों पर अत्याचार करते थे ।

उसने यात्रा पर चलने से पहले क्लैरेंस को समझा दिया था कि उसे क्या करना है ! मार्गन ने कुछ युवकों को विशेष प्रशिक्षण दिया था । उन्हें बिजली, टेलीफोन, टेलीग्राफ तथा दूसरे आविष्कारों का परिचय दिया था । कई जगह गुप्त रूप से बिजलीघर बना दिए थे । टेलीफोन के तार लगा दिए थे ।

यात्रा के दौरान मार्गन को कुछ तीर्थ यात्री मिले । वे एक गिरजाघर में बने पवित्र कुएं का जल लेने जा रहे थे । तभी एक व्यक्ति ने बताया कि पवित्र कुआं सूख गया है ।

यह सुनकर तीर्थ यात्री निराश हो गए । जो मार्गन को जानते थे, वे उससे अपना चमत्कार दिखाने की प्रार्थना करने लगे । मार्गन उनके साथ पवित्र कुएं तक गया । वहां मौजूद लोग चीख-चिल्ला रहे थे ।





विश्व की महान कृतियां : अमरीका

मार्क ट्वेन (१८३५-१९१०)— प्रसिद्ध अमरीकी साहित्यकार। असली नाम था सेम्युएल लेंगहार्न क्लीमेंस। क्लीमेंस का बचपन संघर्षों में गुजरा, क्योंकि पिता की मृत्यु जल्दी हो गई थी। बड़े होकर मार्क ट्वेन के उपनाम से बहुत साहित्य लिखा। बच्चों के लिए लिखी अनेक पुस्तकें प्रसिद्ध हुईं। यहां हम इनकी पुस्तक 'अ कनेक्टीकट यांकी इन किंग आर्थर्स कोर्ट' की संक्षिप्त कथा दे रहे हैं। — सं.

मार्गन पादरी से मिला। फिर कुएं में अंदर उतरकर जांच की। उसने देखा कुएं की दीवार एक तरफ ढह गई थी, इसीलिए पानी रुक गया था। उसने क्लैरेंस से कहकर पानी खींचने वाला पम्प वहां मंगवा लिया। पम्प लगने के तुरंत बाद पानी ऊपर आने लगा। यह देखकर वहां उपस्थित भीड़ खुशी से नारे लगाने लगी।

वहां से मार्गन एक गुफा में गया। वहां उसका गुप्त टेलीफोन काम कर रहा था, जिसका सम्बंध राजधानी कैम्लोट से था। मार्गन ने टेलीफोन पर क्लैरेंस से बात की। क्लैरेंस ने बताया— "महाराज पवित्र कुएं वाले गिरजाघर की यात्रा पर जा रहे हैं।"

इसके बाद मार्गन ने गिरजाघर के पास रुककर आर्थर की प्रतीक्षा करने का निश्चय किया। राजा आए, तो मार्गन को देखकर चकित हो गए। मार्गन ने यह कहकर उन्हें और भी चौंका दिया— "मैं जानता था कि आप यहां आने वाले हैं।" राजा आर्थर ने इसे भी मार्गन की जादुई शक्ति ही समझा।

एक दिन मार्गन ने राजा से विदा मांगी, तो उन्होंने पूछा— "कहां जा रहे हो ?"

— "मैं वेश बदलकर आम जनता के बीच जाना चाहता हूं।"

आर्थर ने कहा— "तब तो मैं भी चलूंगा। मैं हमेशा महल में रहता हूं। मंत्री-दरबारी मुझे घेरे रहते हैं। जनता के सुख-दुःख क्या हैं, इसका पता मुझे नहीं चल पाता। तुम्हारे साथ चलकर मैं सच्चाई जान सकूंगा।"

बस, मार्गन और आर्थर वेश बदलकर पैदल ही चल दिए। वे सारा दिन घूमते। जो कुछ मिलता खा लेते, रात को किसी की झोंपड़ी में ठहर जाते। राजा आर्थर के लिए तो यह एकदम नया अनुभव था।

कुछ समय तक यात्रा निर्विघ्न चली। लेकिन एक जगह कुछ बदमाश दोनों के पीछे पड़ गए। उन दिनों इंग्लैंड में दास प्रथा थी। लोग खरीदे-बेचे जाते थे। मार्गन और आर्थर को पकड़कर दास बना दिया गया।

एक रात मार्गन किसी तरह कारागार से भाग निकला। वह केम्लोट में समाचार भेजना चाहता था कि राजा खतरे में हैं। उसने अपना गुप्त टेलीग्राफ केंद्र खोज लिया। वहां उसका एक शिष्य बैठा था। मार्गन ने तुरंत राजप्रसाद से सम्पर्क किया। वहां क्लैरेंस से बात हुई। मार्गन ने कहा— "राजा आर्थर कैद में हैं। हो सकता है,बदमाश उन्हें फांसी पर चढ़ा दें। वीर सामंतों को सैनिकों के साथ भेज दो। तुरंत।"

मार्गन सूचना देकर चला, तो बदमाशों ने उसे भी पकड़ लिया। पता चला कि उन सबको अगले दिन फांसी दी जाने वाली है। मार्गन के दिमाग में एक ही बात घूम रही थी— 'क्या आर्थर के सामंत ठीक समय पर आकर राजा को बचा सकेंगे ?'

अगले दिन आर्थर और मार्गन समेत सब कैदियों को एक मैदान में ले जाया गया।

लेकिन तभी शोर सुनाई पड़ा। चारों ओर से आकर आर्थर के सामंतों ने सबको घेर लिया।

सामंतों ने आर्थर को मुक्त करा लिया। उन्हें बंदी बनाने वाले बदमाशों को मार गिराया।

आर्थर राजधानी लौट आए। लगता था कि सब कुछ ठीक हो गया है, पर ऐसा नहीं था। जादूगर मर्लिन मार्गन से बदला लेने की ताक में था। वह सामंतों को उसके खिलाफ भड़का रहा था।

मार्गन फिर से भ्रमण पर निकल पड़ा। कई वर्ष इंग्लैंड से बाहर रहा। फिर लौटा, तो उसने पाया कि सब कुछ बदल गया था। सब जगह सन्नाटा था। कोई किसी से बात नहीं कर रहा था।

क्लैरेंस ने बताया— "मर्लिन के बहकावे में आकर कई सामंत राजा के विरुद्ध उठ खड़े हुए। जगह-जगह विद्रोह भड़क उठे। आर्थर ने संघर्ष करके दोषी सामंतों को परास्त कर दिया, पर अंत में उनके रिश्तेदार मोरडर्ड ने आर्थर को मार डाला।"

यह समाचार सुन, मार्गन सन्नाटे में आ गया। पता चला कि पादरियों ने मार्गन को दोषी माना था इस सबके लिए। सामंत उससे लड़ने की तैयारी कर रहे थे। बातचीत का समय नहीं था। अंतिम संघर्ष का समय आ गया था। मार्गन ने अपने विश्वासी शिष्यों को बुलाया। पहाड़ी पर एक गुफा में मोर्चा लगा लिया। चारों ओर तारों की बाड़ लगा दी। उसमें करेंट दौड़ा दिया। गुफा के ऊपर तोपें लगा दीं।

सामंतों ने सेना के साथ गुफा पर आक्रमण किया, पर वे तोपों की मार के आगे टिक न सके। जो भी तारों को छूता, झटका लगने से मर जाता।

हजारों विरोधी सैनिक मारे गए। सामंत मैदान छोड़ कर भागने लगे।

एक दिन मार्गन ने क्लैरेंस से कहा— "शत्रु हारकर भाग चुके हैं। गुफा के बाहर अनेक सैनिक घायल पड़े हैं। हमें उनकी मरहम-पट्टी करनी चाहिए।"

क्लैरेंस ने मना किया। कहा— "इसमें खतरा है।" लेकिन मार्गन न माना। वह गुफा से बाहर आकर घायलों की सेवा में जुट गया। तभी एक सैनिक ने मार्गन को तलवार से घायल कर दिया। मार्गन बेहोश होकर गिर पड़ा।

क्लैरेंस तथा और लोग बेहोश मार्गन को उठाकर गुफा में ले आए। कुछ देर बाद मर्लिन वहां एक बुढ़िया के वेश में आया। उसे किसी ने नहीं पहचाना। रात को जब सब सो गए, तो मर्लिन ने अपना जादू जगाया। वह बेहोश मार्गन के पास खड़ा होकर मंत्र पढ़ने लगा।

तभी क्लैरेंस की नींद खुल गई। उसे देखकर मर्लिन जोर-जोर से हंसने लगा। बोला— "मार्गन को मैंने बहुत गहरी नींद में सुला दिया है। यह कई शताब्दियों तक इसी तरह सोता रहेगा। तुम लोग जीतकर भी हार गए।"

क्लैरेंस उसे पकड़ने बढ़ा, तो मर्लिन भाग निकला। पर ज्यादा दूर न जा सका। बिजली के तार से टकराकर उसकी मृत्यु हो गई।

अब कोई नहीं जानता था कि मार्गन की बेहोशी कैसे दूर की जाए ? एक-एक करके दिन बीतते गए। फिर सप्ताह, महीने और साल बीत चले। आसपास सब बदल गया। नया जमाना आ गया। पर गुफा में मार्गन उसी तरह जादुई नींद में सोता रहा।

और सैकड़ों वर्ष बाद एक दिन मार्गन जाग उठा। उसने चारों ओर देखा। सब तरफ सन्नाटा, कहीं कुछ नहीं था। सब पुरानी चीजें नष्ट हो चुकी थीं। हां, पास में एक किताब थी— क्लैरेंस के हाथ से लिखी डायरी। असल में डायरी मार्गन की थी। उसके बेहोश होने के बाद डायरी को क्लैरेंस ने पूरा किया था। उसे पढ़कर मार्गन को पुरानी बातें याद आ गईं।

मार्गन ने डायरी उठाई और हार्टफोर्ड नगर में चला आया। वहां सब कुछ वैसा ही था, जैसा उसने बेहोश होते समय देखा था। मार्गन ने अपने मित्रों को वह डायरी पढ़वाई, तो सब हैरान रह गए। उन्हें लगा मार्गन गप्प मार रहा है। भला ऐसा भी कहीं होता है !

मार्गन क्या कहता ? वह जानता था डायरी में लिखी एक-एक बात सच थी। ●



अनार खाओ

—ओमप्रकाश निर्मल

गोलकुंडा का बादशाह अब्दुल्ला कुली कुतुबशाह गुस्से से भरा हुआ, अपने महल के कमरे में इधर से उधर टहल रहा था। परिवार के लोगों ने उसके सामने एक विकट समस्या खड़ी कर दी थी। उसे उस समस्या से निपटने का कोई रास्ता सुझाई नहीं दे रहा था। एकाएक उसे अपने गुरु औलिया फकीर शाह राजू की याद आई।

गोलकुंडा से चलकर बादशाह हैदराबाद की हुसेनी आलम नामक बस्ती में पहुंचा। वहां शाह राजू की कुटिया थी।

शाह राजू जब कुटिया के सामने पड़े अपने आसन पर बैठ गए, तो बादशाह भी एक आसन खींचकर उनके निकट ही बैठ गया।

बादशाह अब्दुल्ला की दो बेटियां थीं। बड़ी बेटी का विवाह वह कर चुका था। बेटी और दामाद उसके साथ ही किले में रहते थे। छोटी बेटी का रिश्ता उसने हैदराबाद में रहने वाले अपने एक निकट सम्बंधी नवाब के लड़के से तय किया था। शादी की तारीख निकट ही थी। यह बात शाह राजू को भी मालूम थी। किंतु एकाएक बादशाह की बेगम, बड़ी बेटी और दामाद इस रिश्ते के खिलाफ हो गए। आज सुबह बादशाह को उन तीनों ने धमकी दी थी— जैसे ही बारात किले में दाखिल होगी, वे तीनों जहर बुझी छुरियां घोंपकर आत्महत्या कर लेंगे।

बादशाह ने यही समस्या शाह राजू को बताई। बताते-बताते उसकी आंखें डबडबा आईं।

समस्या की गम्भीरता को देखते हुए शाह राजू के चेहरे पर चिंता की रेखाएं घनी हो गईं। कुछ देर तक वह सोच में डूबे रहे। फिर उन्होंने एकाएक मेंहदी के पत्ते काटने वाले दो किशोरों में से एक को आवाज दी—''अबुल हसन! बेटा, जरा इधर आना।''

अबुल आ कर शाह जी के सामने खड़ा हो गया। बादशाह की ओर देखते हुए शाह राजू ने कहा—''यह रहा दूल्हा! तुम किले में जाकर निकाह की तैयारी करो। यह लड़का अनाथ है, लेकिन ऊंचे कुल का है। सब तरह से तुम्हारा दामाद बनने के काबिल है। अब जाओ और सारी फिक्र मुझ पर छोड़ दो।''

बादशाह शाहजी को भेंट चढ़ाकर लौट आया। इधर शाह राजू अपने हाथ से पीस-पीसकर अबुल हसन को उबटन लगाते, मेंहदी मांड़ते और उसके लिए शादी की पोशाक तैयार करते रहे। उधर पहले दूल्हे वाले भी जोर-शोर से शादी की तैयारियों में जुटे थे। शाह राजू और बादशाह के अलावा इस रहस्य को कोई भी नहीं जानता था। खुद अबुलहसन को भी यह तमाशा समझ में नहीं आ रहा था।

आखिर वह दिन आ पहुंचा। आतिशबाजियों, गाजे-बाजे, बंदूकों की आवाजों के बीच पहले दूल्हे की बारात किले की ओर जाने की तैयारी कर रही थी, और इधर शाह राजू अबुलहसन को दूल्हा बनाए, उसके साथ पैदल-पैदल किले की ओर बढ़ रहे थे। दूसरी बारात जिस वक्त किले के परकोटे में दाखिल होने वाली थी, तभी निकाह के जश्न की तोपें किले की दीवारों से गर्जना करने लगीं। किले में बादशाह की छोटी बेटी के साथ अबुलहसन का निकाह हो चुका था, और यह बात बारातियों और दूल्हे तक भी

आनन-फानन में पहुंच गई थी। बारात तो लौट गई, किंतु आज तक यह पता नहीं चला कि वह दूल्हा घोड़े सहित उस वक्त जो गायब हुआ, सो कब और कहां जाकर छिपा ! असल में जब उसे पता चला कि शादी हो चुकी है, तो वह इस अपमान को सह नहीं पाया। बारात के बीच से गायब हो गया।

अब्दुल्ला कुली की मृत्यु के बाद अबुलहसन, अबुलहसन तानाशाह के नाम से गोलकुंडा की गद्दी पर बैठा। वह एक नेक दिल और इंसाफ पसंद बादशाह था। उसने मात्र चौदह वर्ष शासन किया। बाद में औरंगजेब के हाथों परास्त होकर अंतिम सांस तक दौलताबाद के किले में बंदी रहा।

चौदह वर्ष शासक रहने के पीछे भी उसी चमत्कारी फकीर शाह राजू का एक किस्सा बहुत मशहूर है। कहा जाता है कि अबुलहसन को बादशाह बने अभी दो-तीन वर्ष ही हुए थे। एक दिन शाह राजू का भेजा एक अनार लिए अबुलहसन का बाल-सखा गोलकुंडा के किले पहुंचा। वहां उसे बताया गया कि बादशाह झील के निर्माण कार्य को देखने गए हैं। वह वहां जा पहुंचा। जब वह झील के किनारे पहुंचा, तब बादशाह एक किश्ती में बैठा झील की सैर कर रहा था।

उसकी आवाज सुनकर तानाशाह ने अपनी किश्ती को किनारे की ओर ले चलने का हुक्म दिया। जब उसने अपने बाल सखा को देखा, तो झट से कूदकर उससे लिपट गया। पूछा—"शाह जी कैसे हैं ?"

बदले में उसने अबुलहसन की ओर एक अनार बढ़ाया। बोला—"इसे शाह जी ने भेजा है। मुझे हुक्म दिया है कि इसे तुम मेरे सामने खाओ। ताकि मैं उनको जाकर बताऊं कि तुमने अनार खा लिया है।" अनार को तोड़कर बादशाह ने एक दाना चखा। बोला—"बहुत खट्टा है। तुम जाओ, मैं बाद में खा लूंगा।"

—"नहीं, तुम्हें इसे अभी खाना है।"

बादशाह एक-एक दाना बेमन से खाने लगा। उसके बाल सखा ने गिना। उसने कुल चौदह दाने खाए थे। फिर अनार को झील के पानी में फेंकते हुए कहा—"बहुत खट्टा है ! खाया नहीं जा रहा।"

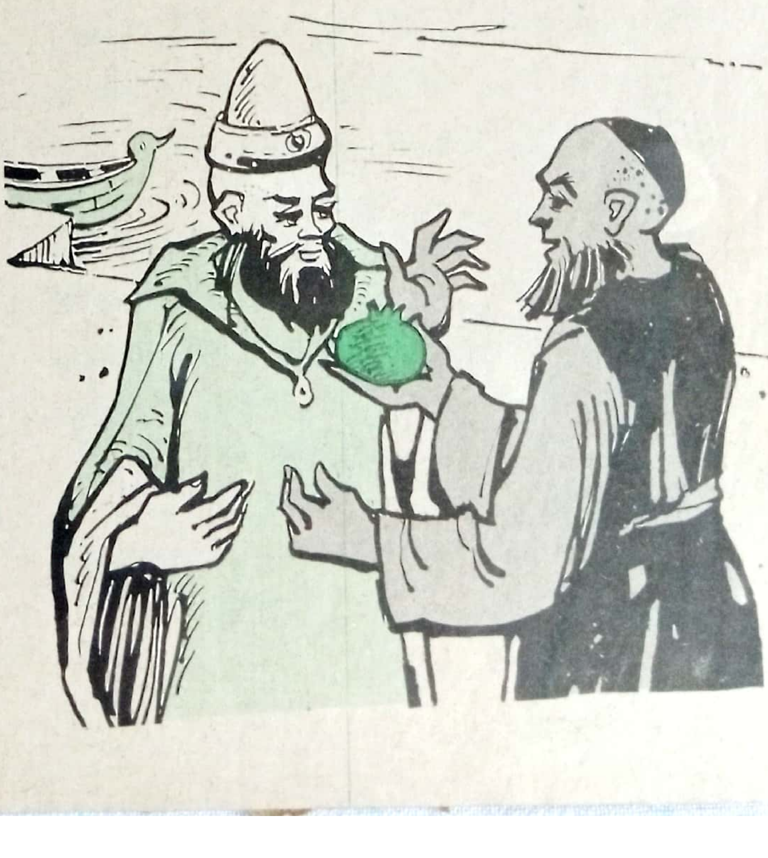
"जैसी तुम्हारी इच्छा।"—कहकर उसका मित्र लौट गया।

शाह राजू ने उसे देखते ही पूछा, जैसे वह उसी की प्रतीक्षा कर रहे थे—"खिला आए ?"

—"केवल चौदह दाने खाए और फिर यह कहकर कि बहुत खट्टा है, अनार को झील में फेंक दिया।"

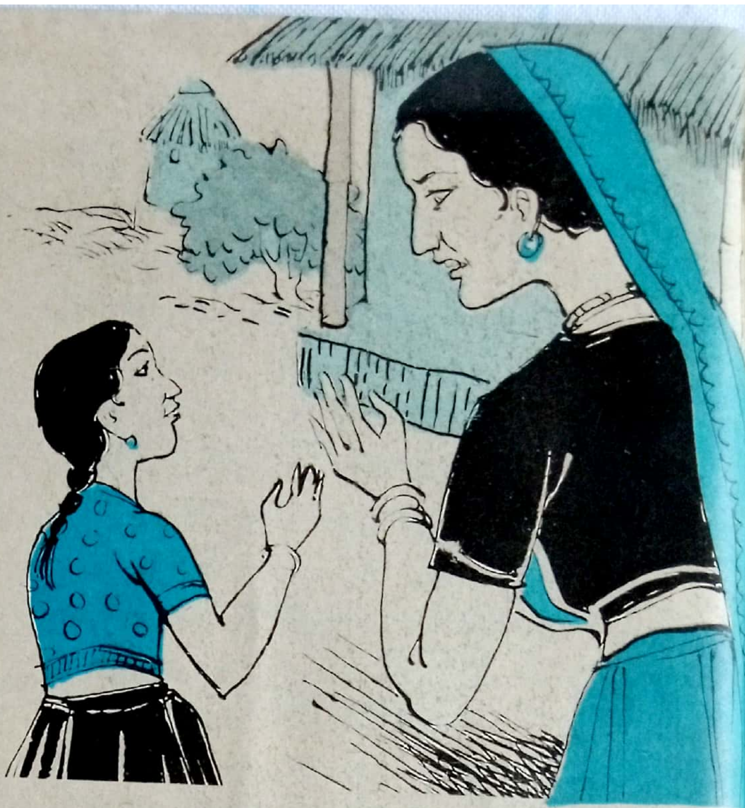
"बदकिस्मत !"—उनके मुंह से निकला—"केवल चौदह साल हुकूमत करेगा।"—कहते-कहते शाह राजू उदास हो गए थे।

ठीक चौदहवां साल लगते ही औरंगजेब ने गोलकुंडा पर आक्रमण किया था। पूरे एक साल वह किले को घेरे रहा। भयंकर युद्ध हुआ, किंतु फकीर की भविष्यवाणी को कौन टाल सकता था ? समय की अवधि पूरा होते-होते अबुलहसन के धोखेबाज साथी औरंगजेब से मिल गए। एक दिन किले का मुख्य द्वार खोल दिया गया था। मुगल फौजें दनदनाती गोल कुंडा के किले में दाखिल हो गईं। उन्होंने दस्तरख्वान पर बैठे बादशाह अबुलहसन तानाशाह को दबोच लिया था। बेचारा खाना भी पूरा नहीं खा पाया था। ऐसे थे चमत्कारी फकीर शाह राजू। लेकिन अबुलहसन का पतन देखने के पूर्व शाह राजू भी समाधि ले चुके थे। ●



सुनहरा कमल

—राजीव गुप्ता



बात काफी पुरानी है। बीकानेर के पास एक गांव था। उस गांव में बहुत कम लोग रहते थे। वहां पानी की जबर्दस्त कमी थी। पूरे गांव में सिर्फ दो कुएं थे। एक कुआं तो गर्मियों में सूख ही जाता था। दूसरा कुआं जो कभी नहीं सूखता था, गांव से बहुत दूर था। उसके पास ही घने बरगद के वृक्ष के नीचे एक बाबा रहते थे। बाबा सिद्ध पुरुष थे।

इसी गांव में एक किसान रहता था रमैया। उसकी बेटी का नाम था अनुसुइया। सभी प्यार से उसे अनु कहते थे। अनु जन्म से ही बड़ी सुंदर थी। जन्म के समय ही पंडित जी ने बता दिया था—'लड़की बड़ी भाग्यवान है। इसका विवाह अवश्य ही किसी राजकुमार से होगा। परंतु...'' "परंतु क्या पंडित जी?"—रमैया ने चिंतित होकर पूछा था।

—"इसका बचपन बहुत दुःख में बीतेगा।"

बात आई-गई हो गई। रमैया भी इसे भूल गया, परंतु पंडित जी की बात सत्य सिद्ध हुई। अभी अनु पांच साल की हुई थी कि उसकी मां चल बसी।

बहुत समझाने-बुझाने पर रमैया ने एक सुंदर, सुशील लड़की से शादी कर ली। उसका नाम सुशीला था।

एक वर्ष बाद सुशीला ने एक बेटी को जन्म दिया। उसका नाम रखा गया त्रिशला। त्रिशला के जन्म के बाद तो सुशीला का अनु के प्रति व्यवहार ही बदल गया।

अब अनु को बात-बात पर डांट खानी पड़ती थी। सुशीला आराम करती और सारा काम अनु के नन्हे-नन्हे हाथों से कराती। अनु रात का बचा-खुचा खाना खाती और रोते-रोते जाने कब सो जाती।

डांट-फटकार खाते-खाते, दस बरस और बीत गए। रमैया अनु की हालत देखकर, दुखी होता था। उसने सुशीला को बहुत समझाया, पर कोई फर्क नहीं पड़ा।

रमैया ने सुशीला को मना कर दिया था कि अब अनु को कहीं न भेजा करे। वह बड़ी हो गई है। अब सुशीला अनु को खेत पर तो नहीं भेजती थी, पर पानी लेने भरी दुपहरी में भी अनु को ही जाना पड़ता।

एक दिन अनु बहुत बीमार थी। खाने को पेट भर न मिलने से भी काफी कमजोर हो गई थी। तभी सुशीला ने सब कुछ जानते हुए भी कहा—"आज मेरे भाई-भावज आने वाले हैं। चल पूरियां तल दे।"

अनु ने धीरे से कहा—" मां, मैं बीमार हूं।"

"चुप ! आंसू बहाना बंद कर और पानी भरकर ला।" —सुशीला गुस्से से चिल्लाई।

अनु ने उठने की कोशिश की, पर न उठ सकी। यह देखकर, सुशीला और त्रिशला ने उसे घर से बाहर निकाल दिया और बोलीं—"जब तक पानी भरकर नहीं लाएगी तब तक घर में मत घुसना।"

अनुसुइया से बिलकुल चला नहीं जा रहा था। अचानक आसमान में अंधेरा छा गया। ऊपर कई विशालकाय गिद्ध चक्कर लगाने लगे। गिद्धों को देखकर अनु ने सोचा—'मौत पास आ ही गई है, तो क्यों न एक बार कोशिश करूं? शायद बच जाऊं।' जाने कहां से उसमें फुर्ती आ गई। वह रुक गई। जैसे ही एक गिद्ध ने आकर झपट्टा मारा, वह उसकी

पीठ पर सवार हो गई और जोर से गिद्ध की गरदन पकड़ ली । अनु यह देखकर आश्चर्य से भर गई कि गिद्धों ने उसे नुकसान पहुंचाने के बजाए, कुएं वाले बाबा के पास उतार दिया ।

अनु बाबा के चरणों में गिरकर रोने लगी । बाबा ने उस के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—''तेरे दुःख के दिन खत्म होने वाले हैं बेटी । इन गिद्धों को अपना दोस्त समझकर, इनके साथ चली जा । जहां ये तुझे उतारेंगे, वहां चारों तरफ काली मिट्टी होगी । उसी काली मिट्टी में एक सुनहरा कमल उगा है । तुझे बस फुर्ती से वह कमल तोड़कर लाना है । वरना उसका रक्षक तुझे बंदी बना लेगा ।''

बाबा द्वारा सिर पर हाथ रखते ही अनु में ताजगी और स्फूर्ति आ गई । वह गिद्ध पर बैठकर चल दी । कुछ ही क्षणों बाद, वह काली मिट्टी के मैदान में उतरी । तेजी से बढ़कर, सुनहरा कमल तोड़ा और ले चली, पर यह क्या !

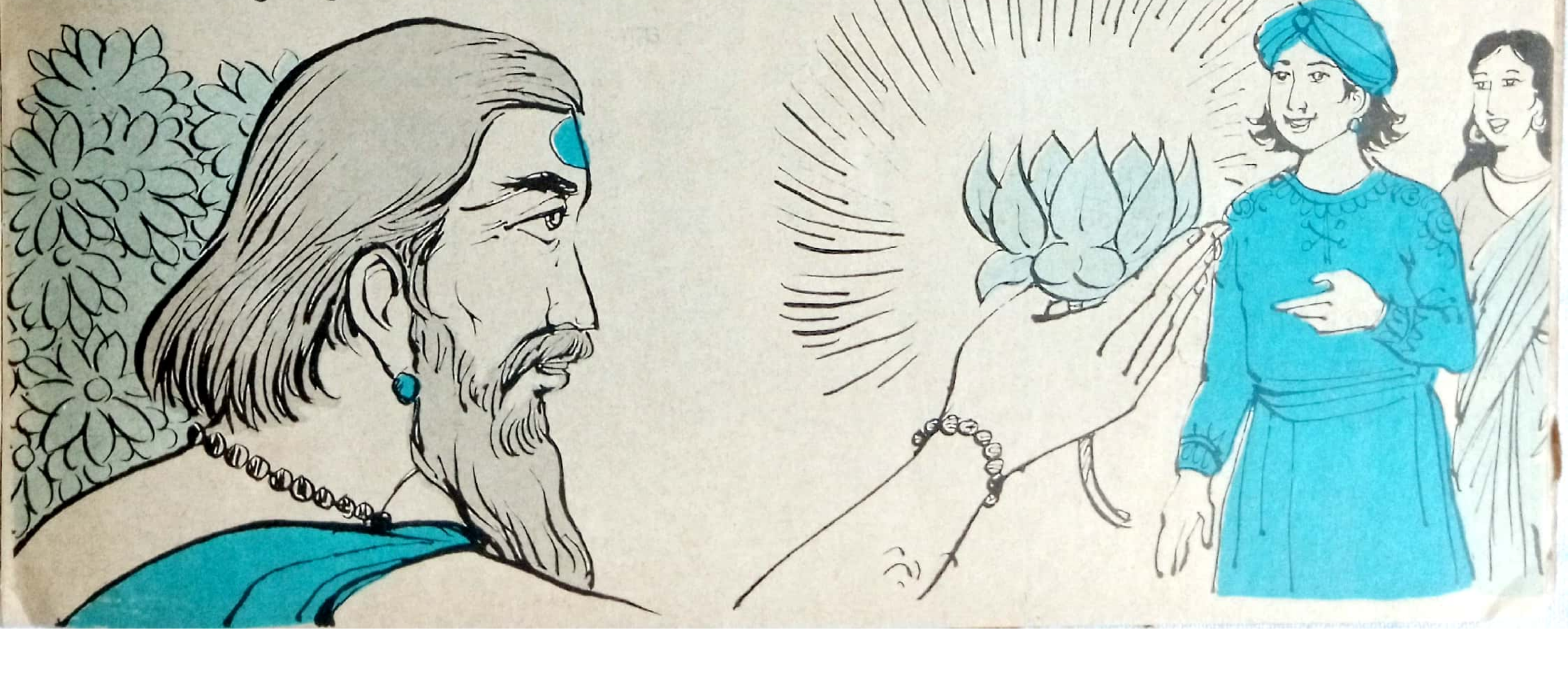
अनु से एक कदम भी बढ़ाया न गया । वह दलदल में धंसने लगी । तभी उसे एक उपाय सूझा । उसने पूरे वेग से कमल आकाश में फेंक दिया । तभी उस कमल का रक्षक बौना बाज बनकर, गिद्ध का पीछा करने लगा । दूसरे गिद्धों ने मिलकर अनुसुइया को निकाल लिया और उड़ चले । उधर बाज गिद्ध के पास पहुंच गया । तब गिद्ध ने उड़ान के करिश्मे दिखाने शुरू किए । जल्दी ही बाज थक गया । बस, गिद्ध बाबा के पास जा पहुंचा ।

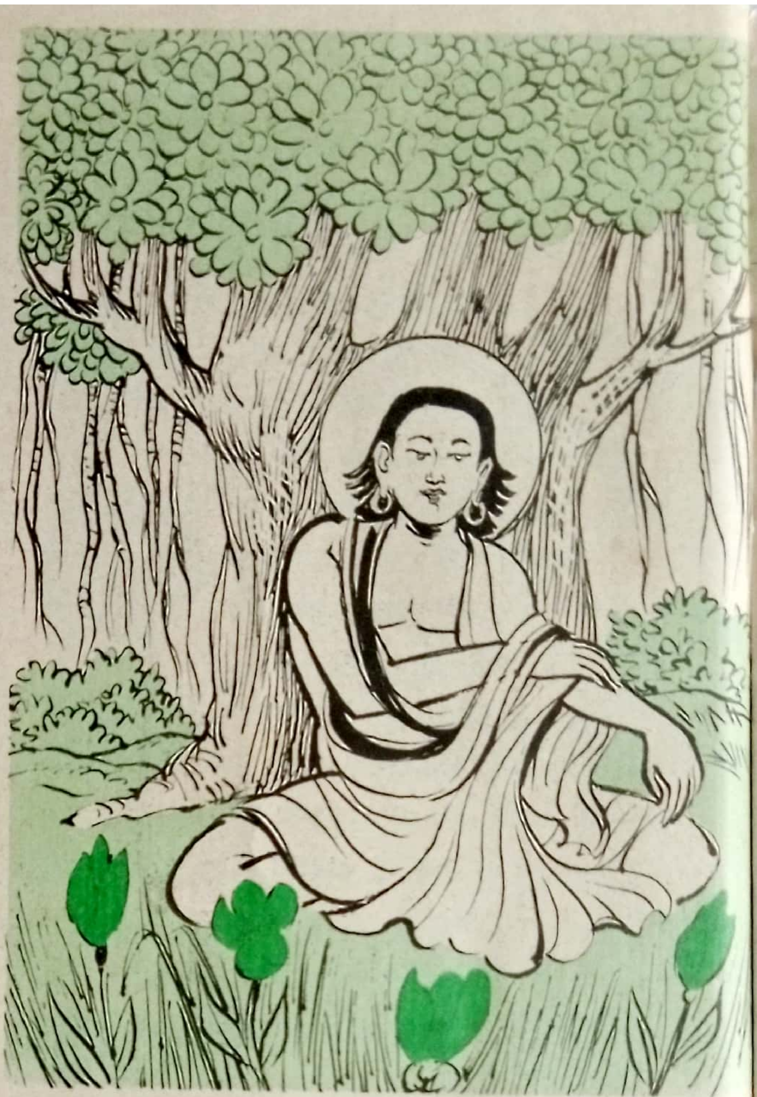
बाबा ने तुरत लुटिया से पानी निकालकर, कमल पर छिड़का। फिर उस कमल को धीरे-धीरे गिद्ध के शरीर पर फेरा । वह गिद्ध एक सुंदर राजकुमार बन गया । इतने में दूसरे गिद्ध अनुसुइया को लेकर आ पहुंचे । बाबा ने दूसरे गिद्धों को भी कमल से छुआ, तो वे सब सैनिक बन गए ।

बाज का कहीं अता-पता न था । इधर अनुसुइया भी चकित थी । बाबा ने तब कहना शुरू किया—''बेटी अनुसुइया ! यह मलखान देश के राजकुमार विक्रम हैं । शिकार करते हुए, एक बार अपने सैनिकों के साथ इधर आए, तो उड़ती चिड़िया को तीर मारा । चिड़िया घायल होकर, मेरी गोद में आ गिरी । उन दिनों मैं तप कर रहा था । तप के पूरा होने पर मोक्ष प्राप्त होता है, परंतु घायल चिड़िया के कारण मेरी तपस्या भंग हो गई । गुस्से में मैंने राजकुमार और उसके साथियों को गिद्ध बना दिया । राजकुमार ने अपनी गलती स्वीकार की । माफी मांगी । तब मुझे दया आ गई । मैंने कहा—तुम्हारा उद्धार सिर्फ अनुसुइया ही करेगी । तब से ये गिद्ध ऐसे ही भटकते फिर रहे थे ।''

विक्रम और अनुसुइया ने बाबा के पैर छूकर आशीर्वाद लिया । अनुसुइया विक्रम को अपने घर ले गई । वह माता-पिता का आशीर्वाद लेना चाहती थी ।

विक्रम ने स्वयं अपना परिचय दिया और कहा—''मैं अनुसुइया से शादी करना चाहता हूं । आप हमें आशीर्वाद दें ।'' रमैया की आंखों में खुशी के आंसू छलक आए । उसे पंडित जी की बात याद हो आई ●





मिलारेपा

—मनोरमा

मिलारेपा का बचपन सुख में बीता था। उनके पिता बहुत धनी थे। परिवार में सुख-शांति थी। जब मिलारेपा कुछ बड़े हुए, तो उनके पिता की मृत्यु हो गई। वह मां और बहन के साथ चाचा के पास रहने लगे। उनके पिता काफी धन-सम्पत्ति छोड़ गए थे। लेकिन छल-बल से चाचा ने उनकी सारी सम्पत्ति हड़प ली। चाचा ने मिलारेपा और उनकी मां-बहन को घर से निकाल दिया।

मां-बेटा और बहन दर-दर भटकने लगे। उन दिनों तिब्बत में काले जादू का बोलबाला था। काले जादू से भूत-प्रेत को बुलाकर जादूगर जिसको चाहते, उसको खत्म कर देते थे।

मिलारेपा की मां अपने देवर-देवरानी से बदला लेने के लिए उन्हें किसी जादूगर के पास ले गई। मिलारेपा जादू नहीं सीखना चाहते थे। लेकिन मां की जिद के सामने उनकी एक न चली। कुछ दिनों में उन्होंने काला जादू सीख लिया। चाचा-चाची को सबक सिखाने के लिए उन्होंने उन पर जादू चला दिया। गांव पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा। अकाल और बीमारी ने पूरे गांव को तबाह कर दिया।

फिर भी मिलारेपा के मन को शांति नहीं मिली। दुःख और पछतावे की आग में जलने लगे। उन्होंने भविष्य में किसी पर भी जादू न चलाने का मन बना लिया।

मिलारेपा पूजा-पाठ में रम गए। सौभाग्य से उन्हें एक गुरु मिल गए। उनका नाम मारपा था। उन्होंने मिलारेपा को शिष्य बना लिया। एक दिन गुरु जी ने मिलारेपा से एक मकान बनाने को कहा। मकान थोड़ा बनकर तैयार हो गया, तो गुरु ने उसे तोड़ने का आदेश दे दिया। मिलारेपा ने मकान तोड़ दिया। फिर दूसरा मकान बनाया। गुरु ने उसे भी तुड़वा दिया। कई दिन तक यह क्रम चलता रहा। एक दिन परेशान होकर वह वहां से दूसरी जगह चले गए।

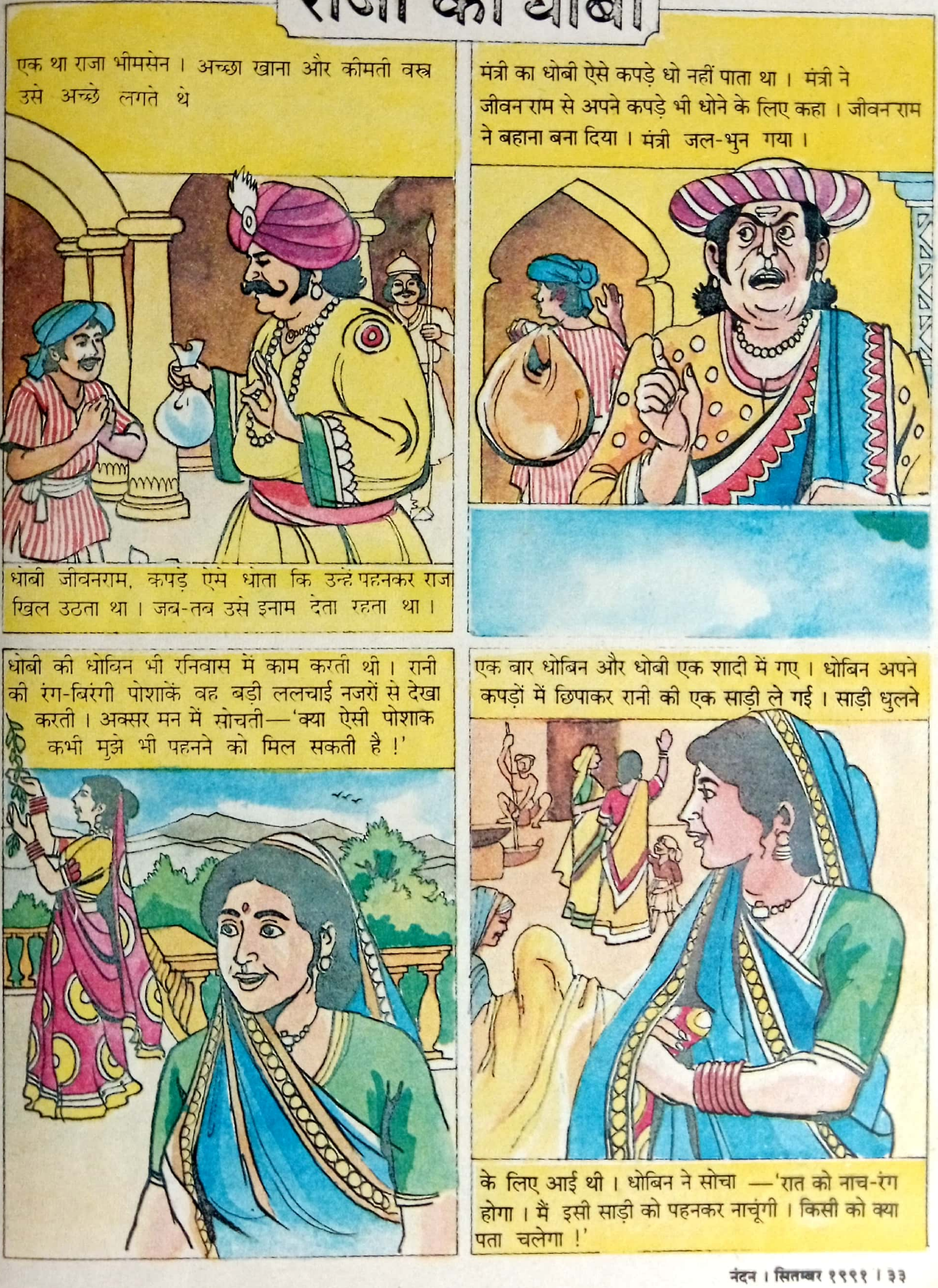
वह घूमते हुए, मारपा के एक शिष्य के पास पहुंच गए। शिष्य ने समझाया-बुझाया। मिलारेपा फिर उन्हीं गुरु की सेवा में लौट आए। गुरु ने इस बार भी उन्हें मकान बनाने का काम सौंपा। मिलारेपा ने हिम्मत से काम लिया। मकान किसी तरह से पूरा हो गया।

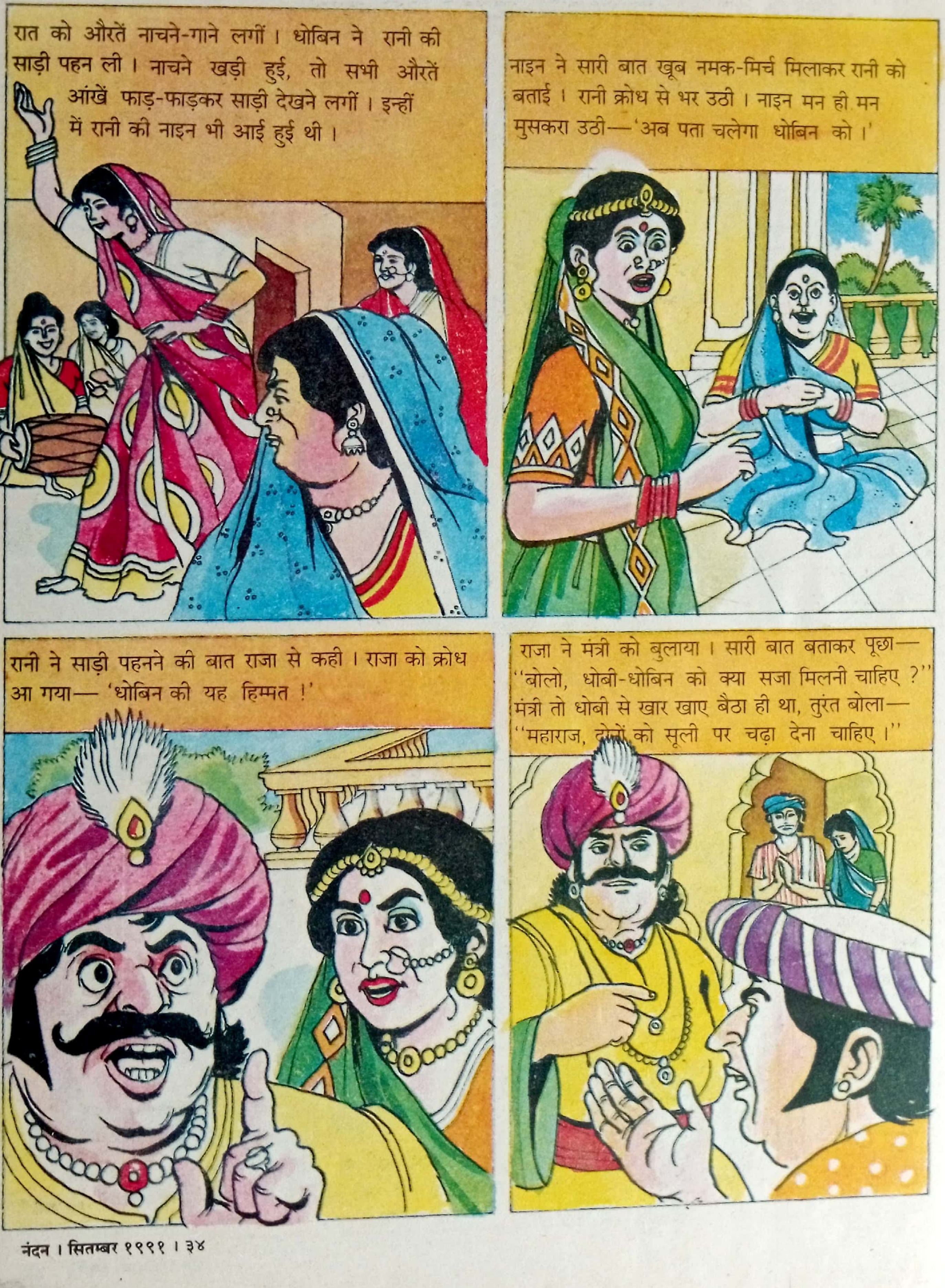
अब मिलारेपा तन-मन से गुरु की सेवा करते। उनका उपदेश सुनते। उनके बताए रास्ते पर चलते।

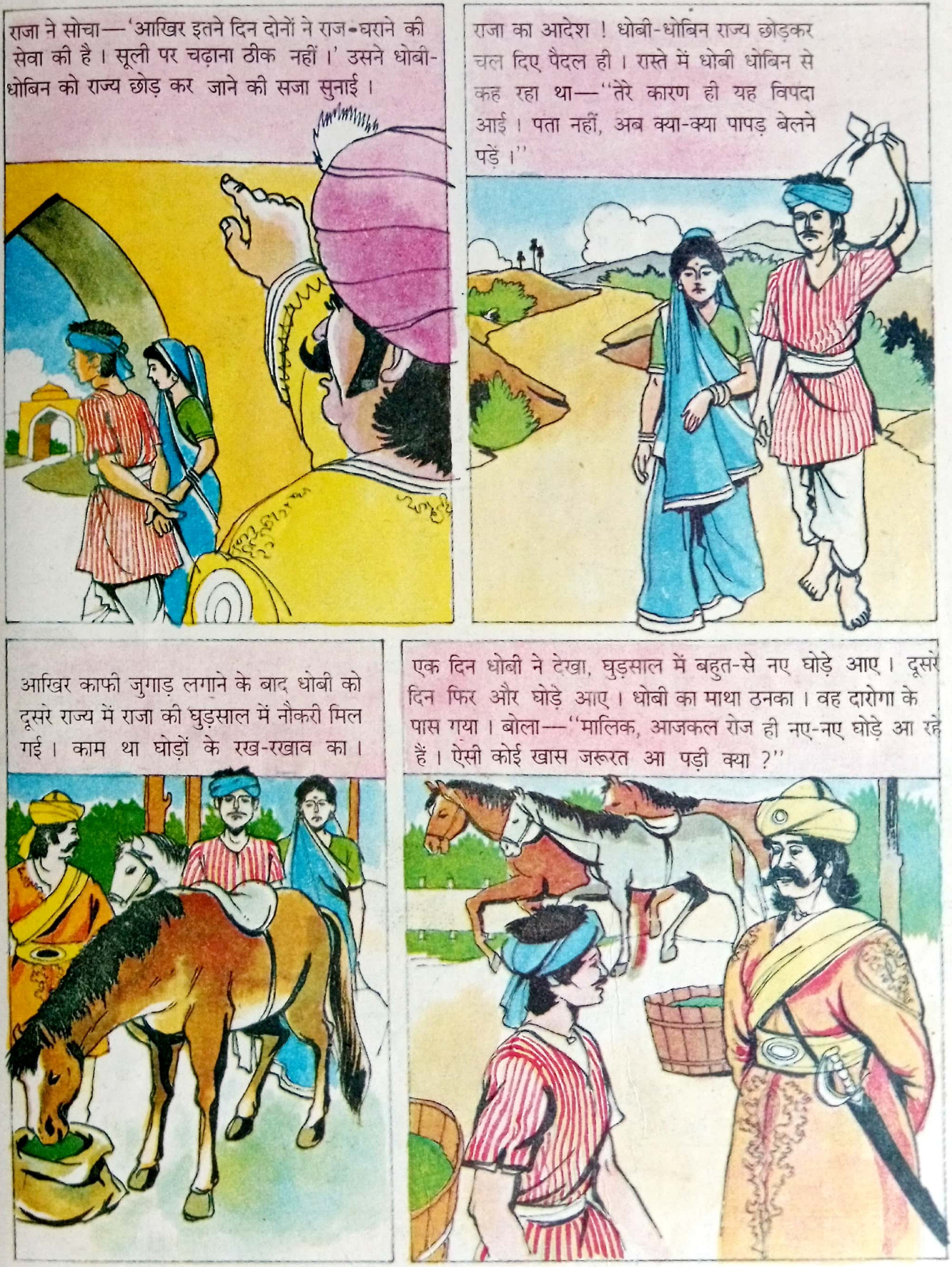
शिक्षा समाप्त होने पर मिलारेपा जंगल में चले गए। वहां कठिन तपस्या की। एक दिन वह सिद्ध बाबा बन गए। वह तिब्बत जैसे ठंडे देश में भी सूती कपड़ा पहनते थे। मिलारेपा का अर्थ है-'सूती कपड़ा पहनने वाला।'

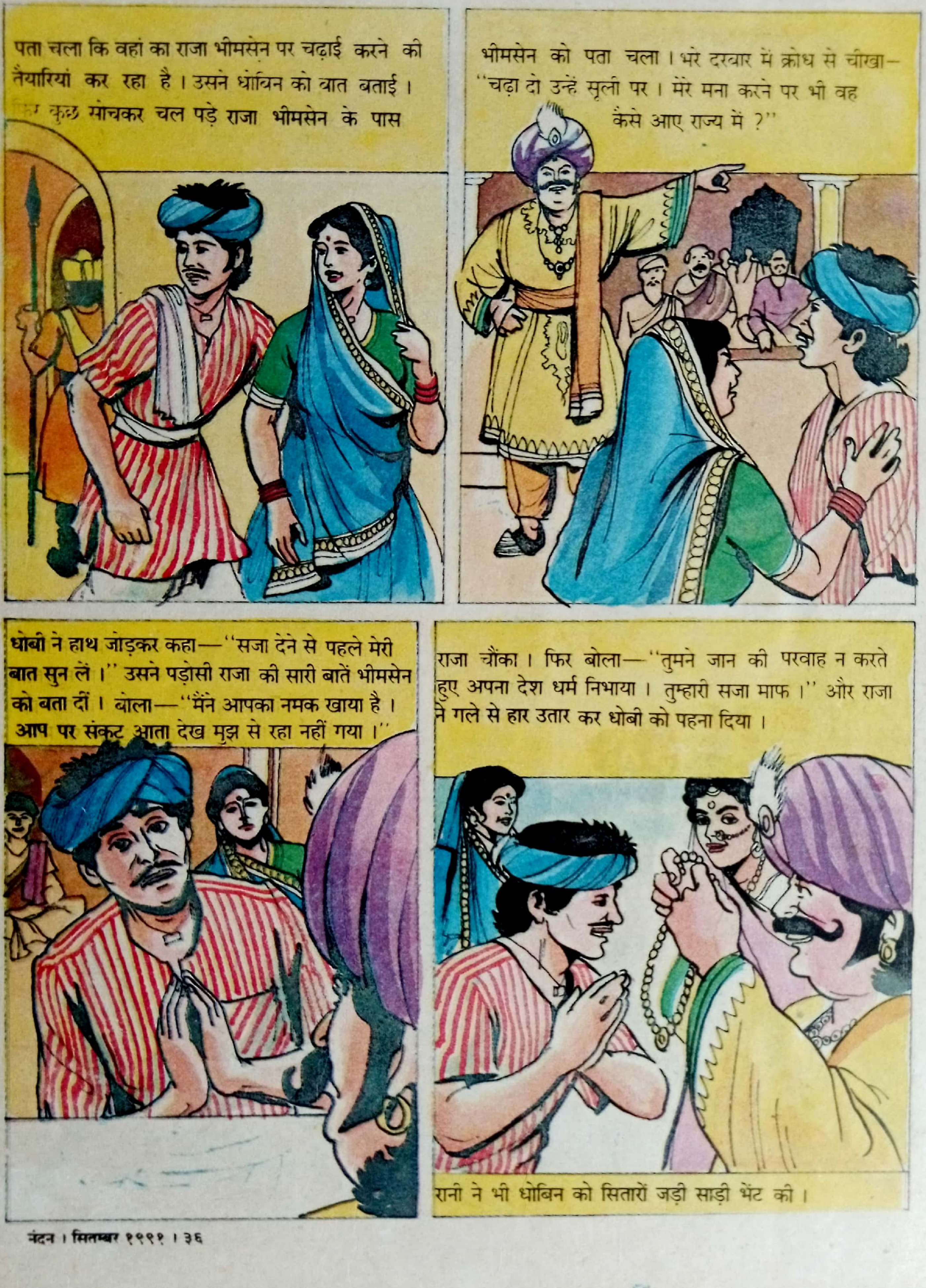
उन्होंने एक हजार गीत लिखे। उन्होंने सबको धर्म के मार्ग पर चलने का उपदेश दिया। 'अच्छा कर्म करने से अच्छा फल मिलता है'—सबको यही बताया। ●

राजा का धोबी


एक था राजा भीमसेन। अच्छा खाना और कीमती वस्त्र उसे अच्छे लगते थे
धोबी जीवनराम, कपड़े ऐसे धोता कि उन्हें पहनकर राजा खिल उठता था। जब-तब उसे इनाम देता रहता था।
मंत्री का धोबी ऐसे कपड़े धो नहीं पाता था। मंत्री ने जीवन राम से अपने कपड़े भी धोने के लिए कहा। जीवन राम ने बहाना बना दिया। मंत्री जल-भुन गया।
धोबी की धोबिन भी रनिवास में काम करती थी। रानी की रंग-बिरंगी पोशाकें वह बड़ी ललचाई नजरों से देखा करती। अक्सर मन में सोचती—'क्या ऐसी पोशाक कभी मुझे भी पहनने को मिल सकती है!'
एक बार धोबिन और धोबी एक शादी में गए। धोबिन अपने कपड़ों में छिपाकर रानी की एक साड़ी ले गई। साड़ी धुलने
के लिए आई थी। धोबिन ने सोचा —'रात को नाच-रंग होगा। मैं इसी साड़ी को पहनकर नाचूंगी। किसी को क्या पता चलेगा!'


रात को औरतें नाचने-गाने लगीं। धोबिन ने रानी की साड़ी पहन ली। नाचने खड़ी हुई, तो सभी औरतें आंखें फाड़-फाड़कर साड़ी देखने लगीं। इन्हीं में रानी की नाइन भी आई हुई थी।
नाइन ने सारी बात खूब नमक-मिर्च मिलाकर रानी को बताई। रानी क्रोध से भर उठी। नाइन मन ही मन मुसकरा उठी—'अब पता चलेगा धोबिन को।'
रानी ने साड़ी पहनने की बात राजा से कही। राजा को क्रोध आ गया— 'धोबिन की यह हिम्मत !'
राजा ने मंत्री को बुलाया। सारी बात बताकर पूछा— ''बोलो, धोबी-धोबिन को क्या सजा मिलनी चाहिए ?'' मंत्री तो धोबी से खार खाए बैठा ही था, तुरंत बोला— ''महाराज, दोनों को सूली पर चढ़ा देना चाहिए।''


राजा ने सोचा—'आखिर इतने दिन दोनों ने राज-घराने की सेवा की है। सूली पर चढ़ाना ठीक नहीं।' उसने धोबी-धोबिन को राज्य छोड़ कर जाने की सजा सुनाई।
राजा का आदेश! धोबी-धोबिन राज्य छोड़कर चल दिए पैदल ही। रास्ते में धोबी धोबिन से कह रहा था—"तेरे कारण ही यह विपदा आई। पता नहीं, अब क्या-क्या पापड़ बेलने पड़ें।"
आखिर काफी जुगाड़ लगाने के बाद धोबी को दूसरे राज्य में राजा की घुड़साल में नौकरी मिल गई। काम था घोड़ों के रख-रखाव का।
एक दिन धोबी ने देखा, घुड़साल में बहुत-से नए घोड़े आए। दूसरे दिन फिर और घोड़े आए। धोबी का माथा ठनका। वह दारोगा के पास गया। बोला—"मालिक, आजकल रोज ही नए-नए घोड़े आ रहे हैं। ऐसी कोई खास जरूरत आ पड़ी क्या?"


पता चला कि वहां का राजा भीमसेन पर चढ़ाई करने की तैयारियां कर रहा है । उसने धोबिन को बात बताई ।
कुछ सोचकर चल पड़े राजा भीमसेन के पास
भीमसेन को पता चला । भरे दरबार में क्रोध से चीखा— ''चढ़ा दो उन्हें सूली पर । मेरे मना करने पर भी वह कैसे आए राज्य में ?''
धोबी ने हाथ जोड़कर कहा—''सजा देने से पहले मेरी बात सुन लें ।'' उसने पड़ोसी राजा की सारी बातें भीमसेन को बता दीं । बोला—''मैंने आपका नमक खाया है । आप पर संकट आता देख मुझ से रहा नहीं गया ।''
राजा चौंका । फिर बोला—''तुमने जान की परवाह न करते हुए अपना देश धर्म निभाया । तुम्हारी सजा माफ ।'' और राजा ने गले से हार उतार कर धोबी को पहना दिया ।
रानी ने भी धोबिन को सितारों जड़ी साड़ी भेंट की ।

हिंदुस्तान टाइम्स
का
प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ४० रुपए
दो वर्ष : ७५ रुपए

वर्ष : २७, अंक ११, नई दिल्ली; सितम्बर '९१, श्रावण-भाद्रपद; शक सं. १९१३

भारत उत्सव

नए जर्मनी का पहला त्योहार

बान । पहले दो जर्मनी थे— पूर्व और पश्चिम । अब दोनों मिलकर फिर से एक राष्ट्र बन गए हैं । यह मौका है— हंसी-खुशी का । संयुक्त जर्मनी अपना पहला त्योहार मनाने जा रहा है— भारत उत्सव । सितम्बर में शुरू होकर यह उत्सव एक वर्ष तक चलेगा ।

बान के विशाल आपेरा हाउस में भारत के प्रधानमंत्री और जर्मनी के चांसलर, भारत उत्सव का भव्य उद्घाटन करेंगे । इसमें भाग लेने के लिए ४०० से अधिक भारतीय लेखक, चित्रकार, शिल्पी, संगीतकार तथा अन्य कलाकार जर्मनी पहुंचेंगे । ये वहां जर्मन जनता के सामने भारतीय कला और संस्कृति की अनूठी छवियां रखेंगे ।

इस दौरान वहां चार बड़ी प्रदर्शनियां तथा नृत्य-संगीत के ग्यारह कार्यक्रम होंगे । इस उत्सव की एक खास बात होगी— ये कार्यक्रम जर्मनी के अनेक नगरों में किए जाएंगे । पूरा जर्मनी जैसे भारत के रंग में रंग जाएगा ।

जर्मनी और भारत के सम्बंध सदियों पुराने हैं । वहां के लोग भारत में बहुत रुचि लेते हैं ।

आजकल जर्मनी में उत्सव की तैयारियां जोरों से चल रही हैं । जर्मनी में भारत के राजदूत ए. माधवन कहते हैं— "इस उत्सव का विशेष महत्व है । क्योंकि यह संयुक्त जर्मनी में मनाया जाने वाला पहला त्योहार है ।"

महंगी पुस्तकें

बम्बई । छह महीनों में पुस्तकों की कीमत में चालीस प्रतिशत की वृद्धि हुई है । कागज के दाम बढ़ने से पुस्तकें महंगी हुई हैं । रुपए की कीमत गिरने से विदेशी पुस्तकें तो बहुत महंगी हो गई हैं । आने वाले दिनों में और भी अधिक महंगी होंगी पुस्तकें । इस हालत में पाठकों के लिए उन्हें खरीदना मुश्किल होगा ।

बाल मजूरी खत्म करेंगे

मद्रास । तमिलनाडु की मुख्यमंत्री कु. जयललिता ने कहा है कि बाल मजदूरी रोकने के लिए सरकार सख्त कदम उठाएगी । लेकिन इसके लिए बच्चों के माता-पिता और लोगों को सहयोग देना होगा ।

सबसे बड़ा शिव मंदिर

वाशिंगटन । उत्तरी अमरीका का सबसे बड़ा शिव मंदिर बनकर तैयार हो गया है । मंदिर का शिल्प दक्षिण भारत के मंदिरों जैसा है । इसमें भगवान विष्णु की भी मूर्ति है ।

लंदन में बाल-साहित्य प्रदर्शनी

नई दिल्ली । लंदन में एक विशेष प्रदर्शनी होने जा रही है—हिंदी के श्रेष्ठ बाल-साहित्य की । इसका आयोजन श्री वेदमित्र करेंगे । पेशे से वह इंजीनियर हैं । हिंदी के लेखक वेदमित्र इंग्लैंड में जाकर बस गए हैं । बारह वर्षों से लंदन में हिन्दी की नियमित कक्षाएं चलाते हैं । उन्होंने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा—"पिछले पंद्रह वर्षों में हिंदी में बहुत अच्छा बाल-साहित्य लिखा गया है और छपा है । इंग्लैंड तथा अन्य देशों में बसे भारतीयों को इसका परिचय देना बहुत आवश्यक है ।"

घर-घर पौधे

वेलिंगटन । न्यूजीलैंड में लोगों ने घर-घर में नर्सरी बना रखी हैं । इससे प्रदूषण कम हुआ है । हरियाली भी बढ़ी है । हजारों लोगों को रोजगार मिला है । वहां से भारी संख्या में पौधे निर्यात किए जा रहे हैं । सरकार को ढाई अरब रुपए की वार्षिक आय हो रही है ।

दांत ले उड़ा

नागपुर । एक सज्जन सुबह उठकर मंजन कर रहे थे । उन्होंने अपने नकली दांत निकालकर रखे हुए थे । तभी कहीं से उड़ता-उड़ता एक कौआ आया । उसकी नजर उन दांतों पर पड़ गई । कौआ झपटा और दांतों को ले उड़ा ।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें ।

बच्चों का अखबार -

नंदन बाल समाचार

मातृभूमि की पूजा ही सबसे बड़ी पूजा है ।— बंकिमचंद्र

बढ़ती जाती है हिंदी

स्वाधीन भारत में हिंदी को वह सम्मान नहीं मिला, जो मिलना था । बीच-बीच में उसका विरोध भी सुनाई दे जाता है । दिल्ली में तो लगता है, जैसे अंग्रेजी के लिए अधिक ही प्रेम है । पर हिंदी तेजी से बढ़ रही है । नए-नए शब्द उसके भंडार को भर रहे हैं । आंकड़े बताते हैं कि हिंदी के अखबार पढ़ने वाले अंग्रेजी या तमिल से कहीं अधिक हैं । दूरदर्शन पर हिंदी के कार्यक्रम पूरे देश में देखे जाते हैं । हिंदी जन-जन की भाषा बन रही है । एकता की भाषा है वह ।

हम सब हिंदी को अपनाएं । हिंदी बोलने, लिखने और प्रयोग करने में गर्व महसूस करें ।

सबसे अमीर आदमी

न्यूयार्क । दुनिया का सबसे अमीर व्यक्ति एक जापानी है । उसके पास पंद्रह अरब डालर की सम्पत्ति है । तारकिचिरो मोरी नाम का यह व्यक्ति जमीन खरीदने-बेचने का धंधा करता है ।

बाल कराटे खिलाड़ी

गोंदिया । कराटे खिलाड़ी विवेक और आशीष को 'ब्लैक बेल्ट' से सम्मानित किया गया । ये दोनों बारह वर्ष के हैं । इस इनाम को पाने वाले गोंदिया के ये पहले बच्चे हैं ।

'भारत छोड़ो आंदोलन' की स्वर्ण जयंती

सांगली । महाराष्ट्र सरकार भारत छोड़ो आंदोलन की स्वर्ण जयंती मना रही है । ये कार्यक्रम पूरे साल चलेंगे । इनका आयोजन उन स्थानों पर किया जाएगा, जहां से गांधी जी ने इस आंदोलन की शुरुआत की थी । स्वाधीनता आंदोलन से सम्बंधित एक संग्रहालय भी बनाया जाएगा ।

बच्ची के लिए पत्र

लंदन । प्रसिद्ध लेखक लुइस केरोल ने एगनिस हल नामक बच्ची को उनतीस पत्र लिखे थे । कैरोल अपनी कहानियों 'एलिस इन वंडरलैंड' जैसी रचनाओं के लिए मशहूर हुए । ये रचनाएं उन्होंने एक और बच्ची एलिस लिडल के लिए लिखी थीं । एगनिस के लिए लिखे इन पत्रों में चुटकुले, पहेलियां, कविताएं आदि हैं । ये पत्र १९७९ में पहली बार प्रकाशित हुए थे । पिछले दिनों ये पत्र इक्यावन लाख रुपए में बिके ।

लड़कियां पढ़ें

चंडीगढ़ । हरियाणा में लड़कियों की पढ़ाई पर विशेष ध्यान दिया जाएगा । अब वहां बी. ए. तक लड़कियों की शिक्षा मुफ्त होगी ।

मक्का से कागज

रोम । मक्का के पौधे के रेशे से कागज बनाया गया है । इस कागज को बनाने में ऊर्जा कम लगती है । रसायनों का इस्तेमाल भी नहीं करना पड़ता ।

बादल पकड़ा

दार्जिलिंग । चकत्तेदार तेंदुए (क्लाउडेड लेपर्ड) को खत्म हुआ मान लिया गया था । लेकिन कलिम्पोंग के जंगलों में तेंदुए का बच्चा पकड़ा गया । इसका नाम बादल रखा गया है ।

पुरानी गुफाएं

पटना । बिहार के हजारीबाग जिले के गांव में दो से दस हजार वर्ष पुरानी गुफाओं का पता चला है । सबसे पहले बुलू इमाम नामक शिकारी ने इन गुफाओं को देखा । गुफाओं की दीवारों पर मनुष्य, पहाड़ी, सूर्योदय, हिरन तथा भालू के चित्र मिले हैं ।

करामाती स्याही

ओहिओ । जापान में विशेष किस्म की स्याही बनाई गई है । यह कागज पर स्थायी असर नहीं छोड़ती । इसे मिटाया जा सकता है । उसी कागज का दोबारा उपयोग किया जा सकता है ।

गीत संग्रह

पुणे । बुवाई और कटाई करते समय गांवों की महिलाएं अक्सर गीत गाती हैं । यूनेस्को ने १३० गांवों का सर्वेक्षण कर ऐसे करीब साढ़े चार सौ लोक-गीत इकट्ठे किए हैं । इन गीतों में मौसम और किसान जीवन के सुख-दुखों का रोचक वर्णन है ।

जंगल काट महारथी

वाशिंगटन । ब्राजील के बाद भारत अपने जंगलों को सबसे अधिक काट रहा है । हर वर्ष भारत के डेढ़ लाख हेक्टेयर भूमि के जंगल कट जाते हैं ।

इंजन सस्ते

नई दिल्ली । भारत में कोयला, डीजल और बिजली से चलने वाले रेल इंजन बनते हैं । ये इंजन दुनिया में सबसे सस्ते हैं ।

अनोखा संग्रहालय

पुणे। यहां का 'राजा दिनकर केलकर संग्रहालय' दुनिया भर में मशहूर है। श्री केलकर कविता लिखते थे। बाद में उन्हें अनोखी वस्तुएं जमा करने का शौक हुआ। इस संग्रहालय की पंद्रह हजार अनमोल कृतियां, अकेले श्री केलकर के परिश्रम का परिणाम हैं। इसमें अर्जुन को गीता का उपदेश देते श्री कृष्ण और अर्जुन का रथ, अनेक प्रकार के कलश, कंघे पानदान तथा राजस्थान की विशेष दीपमालाएं शामिल हैं।

मीठा-मीठा रसगुल्ला

करनाल। रसगुल्ला भैंस के दूध का अच्छा या गाय के दूध का। हरियाणा के राष्ट्रीय शोध केंद्र ने इस पर बाकायदा प्रयोग किए। पता चला कि भैंस के दूध का रसगुल्ला भी कम नहीं। अब तक समझा जाता था कि सिर्फ गाय के दूध से बनने वाले रसगुल्ले ही बढ़िया होते हैं।

भारत से लगाव

कोबे। तोमियो मिजोकामि ने भारत के बारे में इतिहास की पुस्तकों में पढ़ा था। धीरे-धीरे भारत के बारे में जानने की उत्सुकता बढ़ी। उन्होंने बी. ए. में हिन्दी विषय लिया। भारत आकर एम. ए. किया। वह पंजाबी, बंगला, हिंदी, उर्दू आदि भाषाएं जानते हैं। यही नहीं, उनके बेटे का नाम भी प्रेमचंद है।

हिमालय की सफाई

काठमांडू। नेपाल पर्वतारोहण संघ हिमालय को साफ करेगा। हिमालय पर जाने वाले पर्वतारोहियों के कारण इसकी कई चोटियों पर टनों कचरा बिखरा है। एडमंड हिलेरी का कहना है कि दुनिया में बहुत कम जगहें ऐसी हैं, जिनका पर्यटन के कारण इतना नुकसान हुआ होगा, जितना हिमालय का। एवरेस्ट तो 'कचरे के ढेर' में बदल गया है।

परियां देखीं

ब्रेडफोर्ड। पहले एल्सी राइटर ने कहा कि उसने परियां देखी हैं। उनके चित्र भी लिए हैं। एल्सी का कहना था कि मैंने इतनी बार परियों को देखा है कि मैं उनके चित्र भी अच्छी तरह बना सकती हूं। कई वैज्ञानिकों ने कहा कि एल्सी परियों के बारे में सोचती है, इसलिए उसे परियां ही दिखाई देती हैं। लेकिन एल्सी ने इस बात को नहीं माना। उसका कहना था कि वह सचमुच परियों से मिल चुकी है।

श्री शम्भू प्रसाद श्रीवास्तव पुरस्कृत

कलकत्ता। बाल साहित्यकार एवं 'नंदन' के लेखक श्री शम्भूप्रसाद श्रीवास्तव को वर्ष १९९१ का 'जामिनी कांत सोम पुरस्कार' दिया गया है। यह पुरस्कार बंगला साहित्यकारों की संस्था 'अभिनव अग्रणी' की ओर से दिया जाता है। संस्था ने पहली बार किसी हिन्दी लेखक को पुरस्कृत किया है।

फूलों से इलाज

नई दिल्ली। रघुराम बाकायदा डाक्टर थे। एक दिन उन्हें लगा कि एलोपैथी चिकित्सा के अलावा भी ऐसी चिकित्सा होनी चाहिए, जिसकी दवाइयों का असर रोगियों पर बुरा न पड़े। इसके लिए उन्होंने 'बाख चिकित्सा पद्धति' का अध्ययन किया। डा. बाख इसी सदी की शुरुआत में इंग्लैंड में रहते थे। खुद बहुत बड़े डाक्टर थे। इस पद्धति को उन्होंने खोजा और विकास किया। डा. बाख ने अड़तीस किस्म के जंगली फूल खोजे। इन्हीं फूलों से दवा तैयार कीं। फिर खुद खाईं। इस इलाज के परिणाम आश्चर्यजनक निकले। बहुत-से रोगी कुछ ही दिनों में ठीक हो गए। इन दवाओं का रोगी के शरीर पर कोई प्रतिकूल प्रभाव भी नहीं पड़ता।

नन्हे समाचार

□ स्वीडन के एक इंजीनियर ने अनूठा बालपैन बनाया है। इसे फिंगरपैन नाम दिया गया है। लिखने वाला इसे अंगुली में पहन सकता है।

□ मिस्र में खुदाई में एक विशाल दीवार-चित्र मिला है। इसमें लोगों को नील नदी की पूजा करते हुए दिखाया गया है। चित्र बहुत प्राचीन है।

□ मलक्का खाड़ी में एक डूबा हुआ जहाज मिला है। पंद्रहवीं शताब्दी के इस जहाज में बहुमूल्य खजाना था। इंडोनेशिया और मलयेशिया इसे मिलकर बाहर निकालेंगे।

□ कोरिया में एक गांव का नाम है 'फूल गांव'। यहां सैकड़ों भिखारी रहते हैं। दानी व्यक्ति उनके भोजन की व्यवस्था करते हैं।

□ दो जर्मन माताओं को पता चला कि छह वर्ष पहले उनके बच्चे आपस में बदल गए थे। अब क्या हो। दोनों ने फैसला किया—जो हो गया था, उसे फिर से बदलने की अब कोई जरूरत नहीं।

□ अमरीका के एक नगर के एक जलते मकान में बिल्ली फंस गई। यह खबर पाकर एक टेलीफोन कर्मचारी लपटों में घुस गया और बिल्ली को बचा लाया।

□ उपग्रह के चित्रों से पता चलता है कि सहारा का विशाल रेगिस्तान सिकुड़ता जा रहा है।

□ जापान में एक अनोखा विद्यालय है। वहां बंदरों को प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि वे टेलीविजन कार्यक्रमों में करतब दिखा सकें।

□ इटली में ८५ साल की औरत के सात बेटे-बेटियां हैं, पर उन्होंने मां को बेसहारा सड़क पर छोड़ दिया। अब अदालत ने उन सातों को आदेश दिया है—वे बारी-बारी से मां की देखभाल करें।

सचित्र समाचार



डिस्नेलैंड की यह तूफानी रेलः रास्ते में पहाड़ आएं, झरने या भूकम्प— यह कभी नहीं रुकती। ←

→ तोता नहीं राजा तोता कहो। राजा न होता तो प्रकृति ने इतना बढ़िया मुकुट न दिया होता।



यह है कुत्ता रोबोट : नेत्रहीन लोगों को रास्ता दिखाता है। खतरों से बचाता है। →





← पंजाब का अभिषेक जैन : पहले टाइपिंग का राष्ट्रीय चैम्पियन बना। अब विश्व चैम्पियनशिप जीती। 'नंदन' (मार्च '९१) में उसे 'होनहार बच्चों' में स्थान दिया गया था।

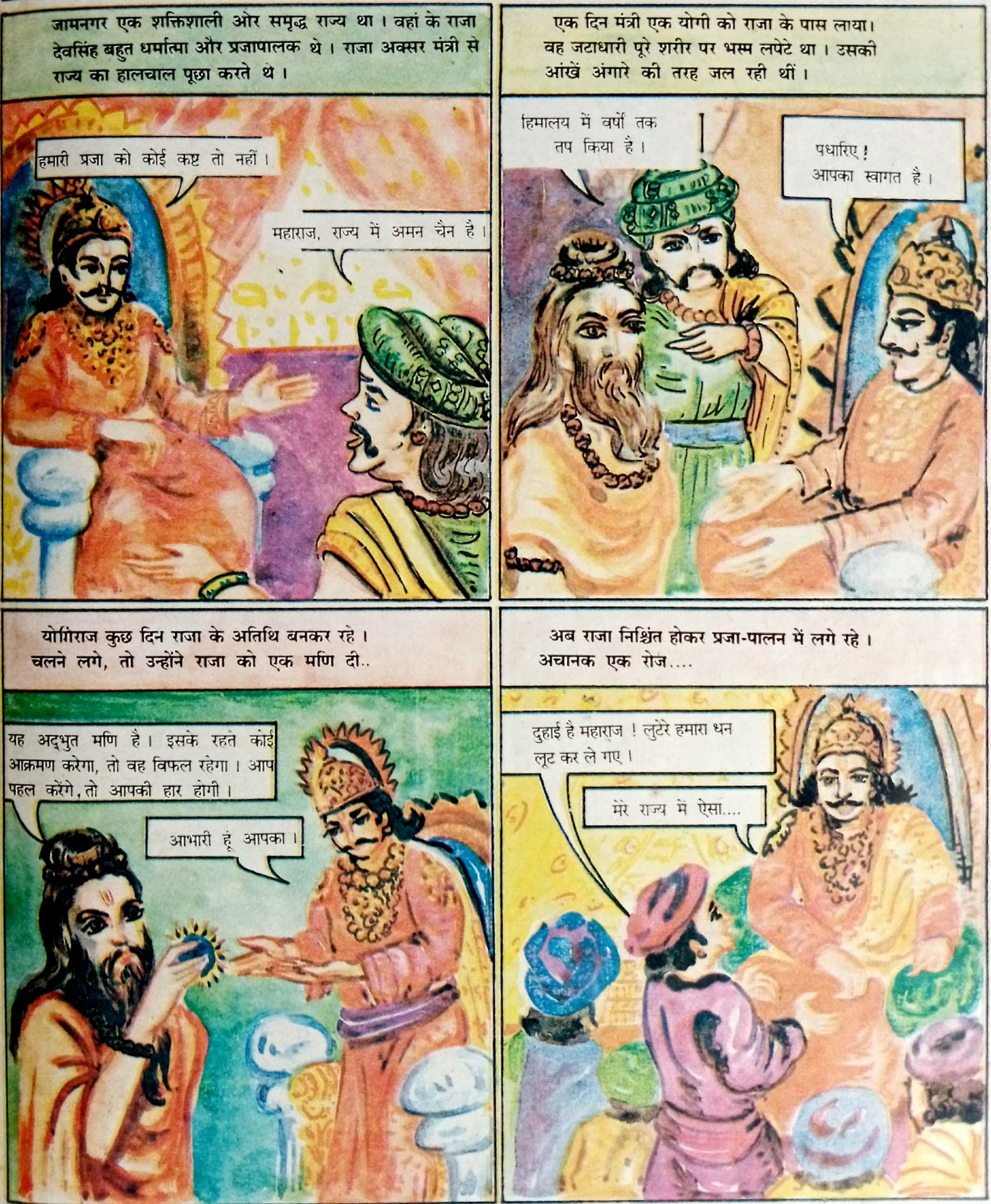
'उमंग' संस्था ने बच्चों का नाटक 'गोपी गवय्या बाघा बजय्या' खेला। निर्देशन रेखा जैन ने किया। ↓



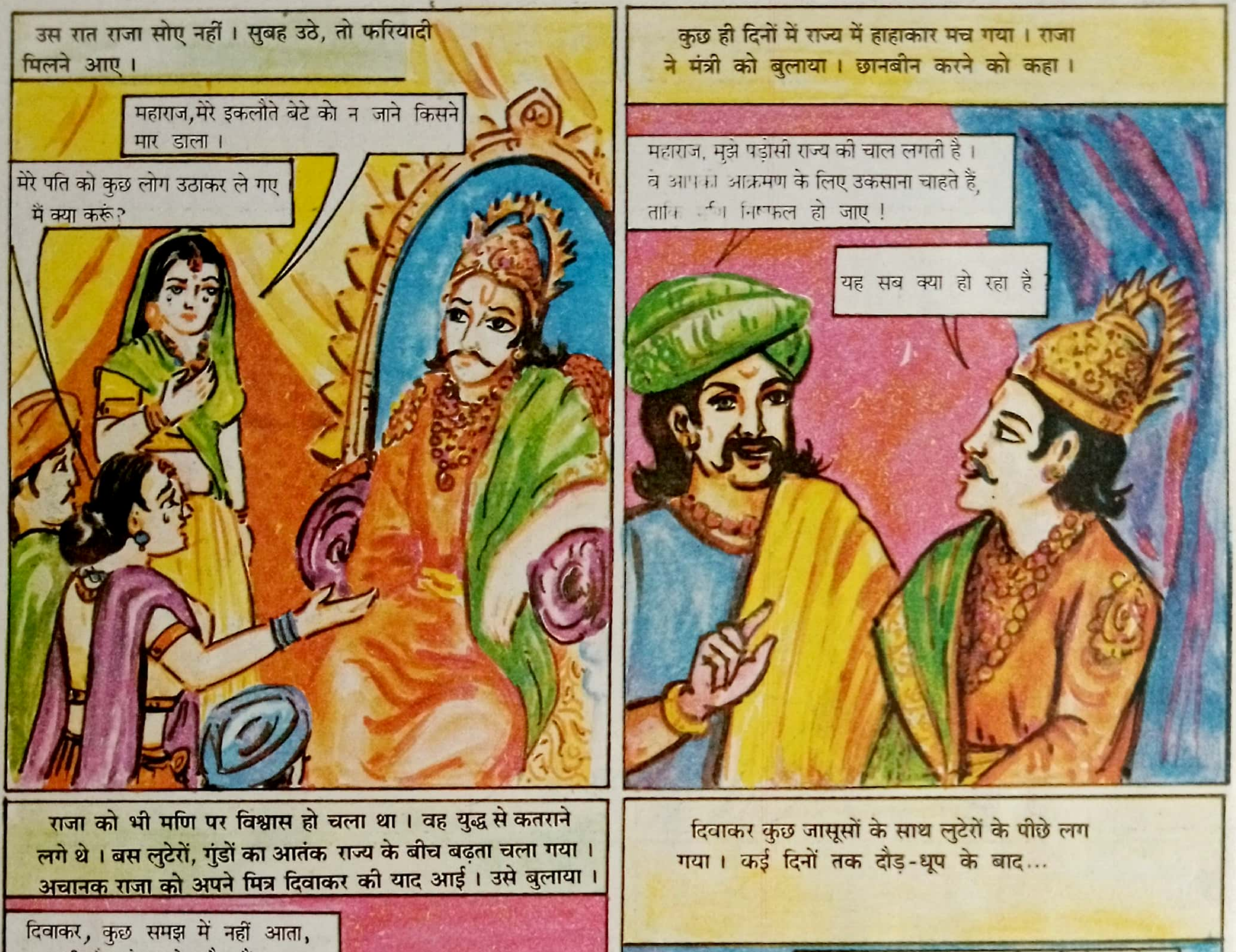
← मास्को के पेंटोमाइम थिएटर की इरीना रिनीकोवा : चालीस सैकंड में पचीस संख्याओं वाले चार पहाड़े, पचीस रंगीन कलाकृतियां और पचीस ज्यामितीय आकृतियां याद कर सकती है।



हार-जीत की मणि



जामनगर एक शक्तिशाली और समृद्ध राज्य था। वहां के राजा देवसिंह बहुत धर्मात्मा और प्रजापालक थे। राजा अक्सर मंत्री से राज्य का हालचाल पूछा करते थे।
हमारी प्रजा को कोई कष्ट तो नहीं।
महाराज, राज्य में अमन चैन है।
एक दिन मंत्री एक योगी को राजा के पास लाया। वह जटाधारी पूरे शरीर पर भस्म लपेटे था। उसकी आंखें अंगारे की तरह जल रही थीं।
हिमालय में वर्षों तक तप किया है।
पधारिए! आपका स्वागत है।
योगिराज कुछ दिन राजा के अतिथि बनकर रहे। चलने लगे, तो उन्होंने राजा को एक मणि दी..
यह अद्भुत मणि है। इसके रहते कोई आक्रमण करेगा, तो वह विफल रहेगा। आप पहल करेंगे, तो आपकी हार होगी।
आभारी हूं आपका।
अब राजा निश्चिंत होकर प्रजा-पालन में लगे रहे। अचानक एक रोज....
दुहाई है महाराज! लुटेरे हमारा धन लूट कर ले गए।
मेरे राज्य में ऐसा....


उस रात राजा सोए नहीं । सुबह उठे, तो फरियादी मिलने आए ।
महाराज, मेरे इकलौते बेटे को न जाने किसने मार डाला ।
मेरे पति को कुछ लोग उठाकर ले गए । मैं क्या करूं?
कुछ ही दिनों में राज्य में हाहाकार मच गया । राजा ने मंत्री को बुलाया । छानबीन करने को कहा ।
महाराज, मुझे पड़ोसी राज्य की चाल लगती है । वे आपको आक्रमण के लिए उकसाना चाहते हैं, ताकि निष्फल हो जाए !
यह सब क्या हो रहा है ?
राजा को भी मणि पर विश्वास हो चला था । वह युद्ध से कतराने लगे थे । बस लुटेरों, गुंडों का आतंक राज्य के बीच बढ़ता चला गया । अचानक राजा को अपने मित्र दिवाकर की याद आई । उसे बुलाया ।
दिवाकर, कुछ समझ में नहीं आता, गड़बड़ी फैलाने वाले कौन हैं?
मैं कोशिश करता हूं । आप सीमा पर चौकसी बढ़वा दीजिए ।
दिवाकर कुछ जासूसों के साथ लुटेरों के पीछे लग गया । कई दिनों तक दौड़-धूप के बाद...
ये सारे लुटेरे सीमा पार के नहीं हो सकते । सीमा पर सेना की कड़ी नजर है ।
मैं भी यही सोच रहा था ।


एक दिन दिवाकर बैठा हुआ था। तभी सिपाही कुछ लोगों को पकड़कर लाए।
ये लोग लुटेरों को अपने यहां आश्रय दिए हुए थे।
इसके घर हथियार बनाने का सामान मिला है।
दिवाकर राजा के पास गया। उन्हें सारी बात बताई। राजा सुनकर हैरान हो गए।
ऐसा ही है महाराज। यह सब हमारे लोगों की मिलीभगत से हो रहा है।
यह नहीं हो सकता
अब राजा भी सोचने पर मजबूर हो गए। उन्हें भी लगा, राज्य में देशद्रोही पनपने लगे हैं।
मगर जनता को लूटने, हत्या करने और असंतोष फैलाने के पीछे क्या कारण हो सकता है?
मंत्री से कहा कि वह योगी को बुलाकर लाए। वही कुछ उपाय बताएंगे।
मगर जैसे भी हो तीन दिन के भीतर उन्हें ढूंढ़कर लाना ही होगा।
महाराज, योगी तो रमते प्राणी हैं। कहां हैं? कैसे पता चलेगा?


मंत्री उठकर गया, तो राजा ने उसके पीछे जासूस लगा दिया। राजा का शक सही था। मंत्री छिपकर पहुंचा योगी के पास। असल में वह योगी नहीं, सीमावर्ती राज्य का जासूस था।
तुम यहां से फौरन भाग जाओ। राजा को शक हो गया है।
फिर आगे क्या करना है?
लेकिन दोनों को पता नहीं था कि कोई और भी उनके साथ है। जासूस ने राजा को खबर दी। राजा ने आदेश दिया।
बंदी बना लो उसे।
मंत्री के वहां से आने के बाद योगी बने जासूस को गिरफ्तार कर लिया। उसे दरबार में लाया गया।
मंत्री जी, इसे पहचानते हो?
महाराज, मैंने तो पहली बार देखा है इसे।
राजा के आदेश पर मंत्री को भी गिरफ्तार कर लिया गया। राजा ने उन्हें कोड़ों से पीटने का आदेश दिया, तो दोनों ने सही बात बता दी।
महाराज आपके मंत्री गड़बड़ फैलाकर आपका राज्य हथियाना चाहते थे। इन्होंने ही हमें बुलाया।
मगर कुछ भी हो, मणि निकली चमत्कारी। अब मंत्री को अपने किए का फल भुगतना ही होगा।

बांसुरी बज उठी

—शांता ग्रोवर

एक अनाथ लड़का था। वह बहुत अच्छी बांसुरी बजाता था। उसका मालिक बहुत ही क्रूर और कंजूस था।

लड़का सारा काम खत्म कर, रात को एक बार बांसुरी जरूर बजाता था। जब वह बांसुरी बजाता, सारे गांव के लोग झूमने लग जाते। वे पास आकर तब तक बैठे रहते, जब तक वह बांसुरी बजाता रहता। इसी कारण वह सारे गांव का चहेता बन गया।

एक दिन जब लड़का तन्मय होकर बांसुरी बजा रहा था, तो सारे लोग मंत्रमुग्ध होकर बांसुरी की तान सुन रहे थे, तभी मालिक के कुछ मित्र आ गए। उसने लड़के को पुकारा और कहा—"तुझे क्या मैं बांसुरी बजानें की तनख्वाह देता हूं? चल, जल्दी से अंदर जा और मेरे मित्रों के लिए ठंडा-ठंडा शरबत ले आ।"

बेचारा लड़का क्या कर सकता था। आखिर वह उसका नौकर था। वह जल्दी से शरबत बनाकर ला रहा था कि उसका पैर फिसल गया। कांच के सारे गिलास चकनाचूर हो गए। मालिक उठा और गुस्से से कांपता हुआ, लड़के के हाथ में पकड़ी बांसुरी छीनकर बोला—"इस बांसुरी ने तेरा दिमाग खराब कर रखा है। आज मैं तुझे मजा चखाता हूं।"

मालिक ने उसी बांसुरी से लड़के की खूब पिटाई की। फिर बांसुरी के दो टुकड़े करते हुए जमीन पर फेंक दिए।

लड़का डबडबाई आंखों से कभी अपने मालिक की तरफ देखता, कभी अपनी प्यारी बांसुरी की ओर।

यह देखकर मालिक जोर से चिल्लाया—"मेरी तरफ क्या देखता है। अगर तुझे यहां रहना है, तो आगे से फिर कभी बांसुरी दिखाई नहीं देनी चाहिए।"

लड़का रोता हुआ बाहर की तरफ चला गया। सोचने लगा—'मैं जिस घर में बांसुरी नहीं बजा सकता, उस घर में रहने का क्या फायदा।'

यह सोचते-सोचते वह घर से दूर एक जंगल में चला गया। अंधेरी रात, घना जंगल। जोर-जोर से रोने लगा। तभी वहां एक सफेद प्रकाश फैला। एक परी आसमान से धीरे-धीरे नीचे उतरी। उसने रोते हुए



लड़के से पूछा—"बेटा, तुम क्यों रो रहे हो ?"

लड़के ने अपने साथ घटी सारी घटना परी को बता दी। परी बोली—"बस, इतनी-सी बात पर तुम इतना रो रहे हो। मैं अभी तुम्हें एक सुंदर-सी बांसुरी देती हूं। उसकी मदद से तुम अपने क्रूर मालिक से बदला ले पाओगे। मैं तुम्हारी सहायता करूंगी।"

परी ने हवा में हाथ घुमाया। तभी एक बांसुरी उसके हाथ में आ गई। परी ने बांसुरी देते हुए कहा—"जाओ, सामने वाले पहाड़ के पीछे एक बूढ़ा व्यक्ति रहता है। उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है। तुम उसी के पास जाकर रहो।"



लड़का हैरानी से कभी हाथ में पकड़ी बांसुरी की तरफ देखता, तो कभी परी की ओर। देखते ही देखते परी वहां से गायब हो गई।

वह बूढ़े बाबा के पास पहुंचा। वहां जाकर उनकी सेवा करने लगा। सुबह हुई। बाबा को नाश्ता करा, उनकी गायें ले, जंगल की ओर चल पड़ा। जब गायें घास चर रही थीं, तो वह एक पेड़ के नीचे बैठकर बांसुरी बजाने लगा। बांसुरी की तान सुनते ही जंगल के सारे पशु-पक्षी उसके पास खिंचे चले आए। आकर पालतू जानवरों की तरह बैठ गए। जब तक वह बांसुरी बजाता रहा, वे दुम हिलाते हुए वहां बैठे रहे। जब बांसुरी बंद हुई, वे उठे और वापस अपने ठिकानों पर चले गए। लड़का भी उठा और गायों को लेकर चल पड़ा। उसका यह रोज का क्रम बन गया। धीरे-धीरे जंगल के सारे जानवर उसके दोस्त बन गए।

उधर लड़के का पुराना मालिक बीमार पड़ गया। उसने कई वैद्यों से इलाज करवाया, लेकिन कुछ फर्क नहीं पड़ा। एक रात वह सोया हुआ था, तभी सपने में एक परी आई। परी ने उससे कहा— यदि तुम एक ऐसे सफेद खरगोश को पालो, जिसके सिर पर काले-काले धब्बे हों, तो तुम तुरंत स्वस्थ हो जाओगे।

सुबह नींद खुली। उसने अपने तीनों बेटों को बुलवाया। बेटों से कहा—"मुझे तुम लोग एक सफेद खरगोश, जिसके सिर पर काले-काले धब्बे हों, लाकर दो। मैं तभी स्वस्थ हो पाऊंगा।"

बेटे बोले—"पिता जी, ऐसा खरगोश मिलना तो बहुत कठिन है।"

वह गुस्से से बोला—"क्या मेरे लिए तुम लोग इतना छोटा-सा काम भी नहीं कर सकते। चले जाओ यहां से। मैं तुम लोगों को अपनी संपत्ति में से फूटी कौड़ी भी नहीं दूंगा। तुम तीनों में से जो कोई भी खरगोश को पकड़कर लाएगा, उसे ही मैं अपनी सारी संपत्ति दूंगा।"

यह बात सुनते ही तीनों को सांप सूंघ गया। बड़ा भाई बोला—"मैं बड़ा हूं, इसलिए सबसे पहले मैं खरगोश की खोज में जाता हूं।"

बड़ा भाई जंगल की ओर चल पड़ा। जंगल में वह डरते-डरते जा रहा था। तभी उसे उनका पुराना नौकर, वह लड़का मिल गया, जो अपनी गायों को जंगल में चराने लाया था। उसे देखते ही बड़ा भाई बोला—"तुम मेरे ऊपर एक उपकार कर दो।"

नौकर बोला —"मैं तुम्हारे किस काम आ सकता हूं ?" बड़ा भाई बोला—"मुझे एक सफेद खरगोश की बहुत आवश्यकता है, जिसके सिर पर काले-काले धब्बे हों।"

नौकर बोला—"यह काम तो बहुत मुश्किल है। फिर भी मैं तुम्हारा यह काम कर सकता हूं, लेकिन इसके लिए तुमसे एक हजार रुपए लूंगा। यदि तुम्हें मंजूर है, तो शाम को रुपए लेकर इसी स्थान पर आ

जाना ।''

वह बोला—''मुझे तुम्हारी बात मंजूर है । मैं शाम को यहीं आकर तुमसे मिलता हूं ।''

शाम को बड़ा भाई एक हजार रुपए लेकर वहीं आ गया । नौकर उसे आगे ले गया । वहां पेड़ के नीचे बैठकर बांसुरी बजाने लगा । बांसुरी की धुन सुनते ही जानवर उसके आसपास आकर बैठ गए । बड़े भाई ने देखा, उन जानवरों में काले धब्बों वाला सफेद खरगोश भी है ।

थोड़ी देर बाद लड़के ने बांसुरी बजानी बंद की । उसने बड़े प्यार से खरगोश को हाथों में उठा लिया । बड़े भाई से एक हजार रुपए लेकर खरगोश उसे देते हुए कहा—''लो, अपना खरगोश । इसे खूब कसकर पकड़ना। यदि यह तुम्हारे हाथों से छूट गया, तो दुबारा तुम्हारे हाथ नहीं आएगा ।''

बड़े भाई ने खरगोश को खूब कसकर पकड़ लिया और घर की राह ली । वह जंगल पार करने ही जा रहा था कि लड़के ने फिर बांसुरी बजानी शुरू कर दी । बांसुरी की धुन सुनते ही खरगोश बड़े भाई की बांहों में मचलने लगा । बड़े भाई ने उसे संभालने की बहुत को शिश की, लेकिन खरगोश उसकी गिरफ्त से निकलकर घनी झाड़ियों में गायब हो गया ।

लड़का बोला— ''तुम्हें पहले ही सचेत किया था । अब मैं कुछ नहीं कर सकता ।''

बड़ा भाई अपना-सा मुंह लेकर घर की ओर चल पड़ा । घर आकर उसने अपने पिता को सारी बात बता दी ।

मंझला भाई बोला—''पिता जी, आप फिक्र न करें । मैं जाता हूं।''

यह कहकर मंझला भाई खरगोश की तलाश में जंगल की ओर चल पड़ा । उसे भी बांसुरी बजाता वह लड़का मिला । लड़के ने उससे भी वही शर्त रखी । लेकिन उसे भी हार का मुंह देखना पड़ा ।

अब छोटा भाई खरगोश की तलाश में जंगल में आया । उसके साथ भी वही हुआ, जो उन दोनों के साथ हुआ था । जब वह भी खाली हाथ घर लौटा, तो पिता को बहुत गुस्सा आया । वह बोला—''तुम सब निकम्मे हो । पूरे तीन हजार रुपए गंवा आए और खरगोश भी नहीं पकड़ पाए । मैं खुद ही खरगोश को पकड़ने जाता हूं ।'' यह कहकर वह जंगल की ओर चल पड़ा । लड़के को जैसे ही अपने क्रूर मालिक का चेहरा दिखाई दिया, उसने बांसुरी बजानी शुरू कर दी । बांसुरी बजते ही सभी जानवर उसके पास आ गए । उसने इशारा कर उन सबको मालिक के पास भेज दिया । अपने पास जंगली भालू, चीते, बाघ इत्यादि जानवर देखे, तो भय से आंखें बंद कर लीं ।

मालिक बोला—''मुझे माफ कर दो, मैं आगे से कभी भी किसी के साथ बुरा व्यवहार नहीं करूंगा । जितना धन तुम चाहोगे, मैं तुम्हें दे दूंगा ।''

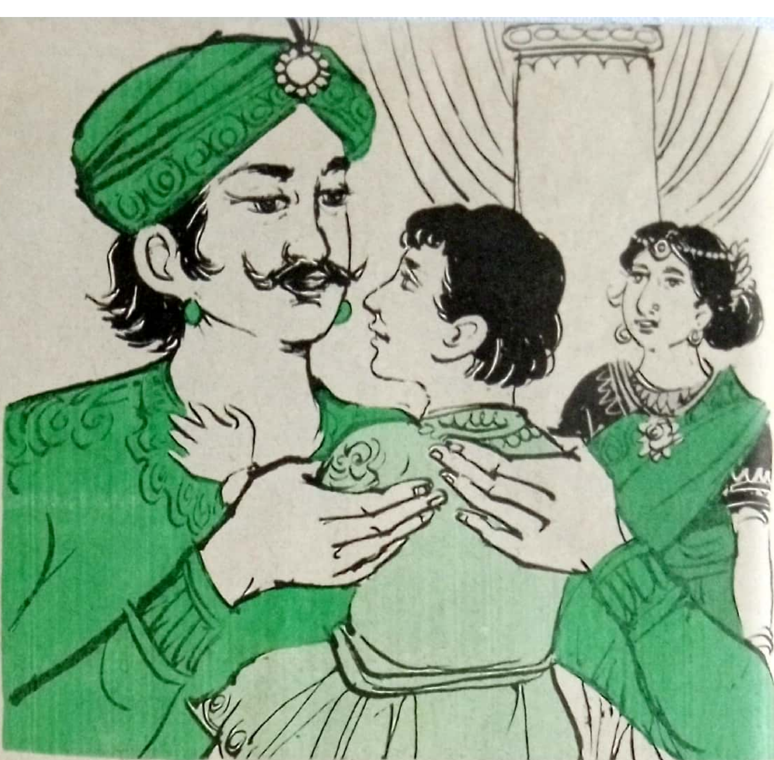
''मुझे धन का लालच नहीं है । तुम अपना आधा धन गांव के सभी गरीब लोगों में बांटने का वायदा करो, तो मैं तुम्हें बचा सकता हूं ।''

''नहीं, नहीं, मैं अपना वायदा जरूर निभाऊंगा ।''—मालिक ने कहा । लड़के ने बांसुरी बजाई और सभी जानवरों को इशारे से अपने पास बुला लिया । उधर मालिक ने घर जाते ही अपनी आधी संपत्ति गरीबों में बांट दी ।



चारण की चतुराई

—सूर्य मंगल



सूरतगढ़ के राजा थे प्रतापसेन। बहुत ही प्रतापी और प्रजापालक। आसपास के राज्यों में भी राजा की प्रशंसा होती थी। उनका इकलौता बेटा था चंद्रसेन। वह बच्चा ही था।

एक दिन शाम को राजा दरबार से महल में पहुंचे। उन्होंने देखा, राजकुमार मचल रहा था। रानी उसे गोद में उठाए घुमा रही थीं। वह जोर-जोर से रो रहा था।

राजा ने राजकुमार को अपनी गोद में ले लिया। उसे चुप कराते हुए, राजा ने कहा—"चुप हो जा बेटे! मैं तुम्हारे लिए सात खंड का महल बनवा दूंगा।" संयोग की बात, यह सुनकर राजकुमार चुप हो गया। तभी रानी बोली—"महाराज! आपने सात खंड का महल बनाने की बात क्यों की? भविष्य का क्या पता?" रानी की बात सुन, राजा हंसने लगे। फिर राजा-रानी आराम करने चले गए।

अभी आधी रात ही हुई थी, विनायक राव दौड़ता हुआ महल में पहुंचा। उसने सोते राजा को उठाया। राजा बोले—"क्या बात है? इतने घबराए क्यों हो?" वह राजा का चारण था।

"—गजब हो गया महाराज! शत्रु सेना ने रात में धावा बोल दिया है। किले को शत्रुओं ने घेर लिया हैं। तुरंत यहां से निकलने में ही भलाई है। उठिए, महारानी और राजकुमार के साथ किले के गुप्त द्वार से भाग चलिए। मैंने सारा प्रबंध कर लिया है।"

राजा क्या करते? महल छोड़ने के लिए तैयार हो गए। रानी और राजकुमार भी चल दिए। तभी विनायक बोला—"राजसी वस्त्र और आभूषण उतार दें। किसी सौदागर का वेश बना लें, वर्ना कोई पहचान लेगा।" राजा ने वैसा ही किया। वेश बदलकर सब चल पड़े। चलते-चलते एक जंगल में पहुंचे। राजा-रानी, राजकुमार आगे-आगे चल रहे थे। उनके पीछे था विनायक और उसके पीछे गठरियां उठाए राजसेवक थे।

रात भर चलने के बाद वे एक पहाड़ी जंगल में पहुंचे। एक जगह मीठी जलधारा और एक गुफा को देखकर रुक गए। आसपास फलदार वृक्षों की भी कमी नहीं थी।

विनायक ने कहा—"राजन, कुछ दिन यहीं रहें। थकान मिट जाएगी। इस बीच मैं कोई सुरक्षित स्थान भी खोज लूंगा।" राजा ने हामी भर दी।

दिन का उजाला फूट आया। अब राजा ने दोनों राज कर्मचारियों को देखा। विनायक से पूछा—"इन लोगों के पास गठरियों में क्या है?"

विनायक बोला—"महाराज, एक गठरी में खाने-पीने की सामग्री है। दूसरी में आपके और महारानी के बहुमूल्य आभूषण।"

"मगर ये किसलिए? जंगल में रहना है, तो आभूषणों की क्या जरूरत?" —राजा ने पूछा।

—"जरूरत है महाराज! आप राज्य छोड़कर स्वयं आए हैं। उस सिंहासन पर आपका अधिकार है। समय फिर आपको राजा बनाएगा। उसी के लिए ये आभूषण काम आएंगे।" यह सुनकर राजा चारण की चतुराई की सराहना करने लगे।

धीरे-धीरे समय बीत रहा था। जंगल में रहकर राजा दिन-रात घोर उदासी में डूबे रहते। उन्हें अक्सर सात खंडों वाले महल की बात याद आती, तो बेचैन

हो उठते। सोचते—'रानी ठीक ही कहती थीं। आखिर हुआ न वही। मैं जंगल-जंगल भटक रहा हूं। मेरी बात का अब क्या महत्व रहा ? अब कैसे बनवाऊंगा सात खंड का महल।'

राजा की उदासी विनायक को भी खलती थी। एक दिन उसने राजा से उदासी का कारण पूछ ही लिया। बार-बार पूछने पर राजा ने मन की बात बता दी।

चारण बोला—"महाराज ! मैं यह बात जानता हूं। महारानी जी मुझे सब कुछ बता चुकी हैं। आप चिंता न करें। मैं उसके लिए प्रयास कर रहा हूं। रोज यहां जंगल में रहने वाले आदिवासियों से मिलता हूं। उनकी सेना संगठित कर रहा हूं। आपका धन इस काम में आ रहा है। हमारी नई सेना का मुखिया वीरू सरदार है। शब्द भेदी बाण चलाने में निपुण। कल वह अपने साथियों के साथ मिलने भी आएगा।"

यह सुनकर राजा ने विनायक की पीठ पर हाथ रखते हुए कहा—"विनायक ! अब तुम ही मेरा एकमात्र सहारा हो।

विनायक बोला—"महाराज, मैंने आपका नमक खाया है। जीवन भर आपके गुण गाए हैं। भला, मेरा भी और कौन सहारा है? आप देखते रहिए। हमें सफलता मिलेगी।"

अगले दिन चारण वीरू सरदार और उसके साथियों को लेकर आया। राजा से उनका परिचय कराया। वीरू ने कहा—"राजन ! हम आपकी प्रजा हैं। शत्रु ने धोखा देकर आपको हराया है। हम उससे बदला लेकर रहेंगे।"

यह सुनकर राजा खुश थे। अब उन्हें लग रहा था, उनका सपना एक न एक दिन जरूर सत्य हो जाएगा।

धीरे-धीरे चारण ने एक अच्छी-खासी सेना तैयार कर ली। जंगल में नई सेना की हलचल मची थी। अब हर रोज राजा अपनी नई सेना का युद्ध अभ्यास देखने जाते थे। उनमें भी उत्साह भर उठा था।

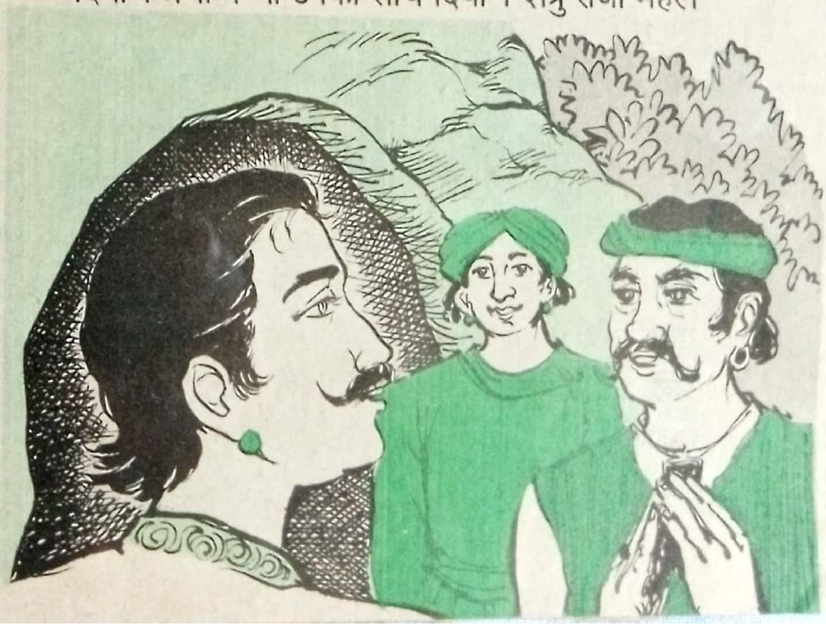
एक दिन राजा सैनिकों से सलाह-मशविरा कर रहे थे। तभी एक पहरेदार आया। सिर झुकाकर बोला—"महाराज।" शत्रु राजा के सैनिक गुफा के आसपास घूम रहे थे। सैनिकों ने उन्हें पकड़ लिया है। आदेश हो, तो उन्हें हाजिर करूं।"

राजा ने सिर हिलाया। अगले ही क्षण बंधक सैनिक राजा के सामने थे। चारण ने उनसे कहा—"गुफा के पास तुम सब क्यों घूम रहे थे, सच-सच बताओ? वरना कड़ी सजा मिलेगी।"

एक सैनिक बोला—"महाराज, हम आपको ही ढूंढ़ने निकले थे। शत्रु राजा का प्रजा पर अत्याचार बहुत बढ़ गया है। प्रजा में हाहाकार मचा है। हम चाहते हैं कि दुष्ट राजा को समाप्त कर, आप गद्दी संभालें।" यह सुनकर राजा ने उन्हें रिहा कर दिया। राजा गम्भीर थे। चारण ने कहा—"महाराज ! नगर में जाकर असलियत का पता लगाया जाए। फिर आक्रमण करना बेहतर होगा।"

सैनिकों के जाने के बाद चारण ने कहा—"महाराज ! मैं एक बार सूरतगढ़ भी जाना चाहता हूं। वहां लोगों में आपके प्रति विश्वास पैदा करूंगा। गीत गा-गाकर आपका यश फैलाऊंगा, ताकि लोग हमारी तरफ हो जाएं। फिर हम आसानी से जीत जाएंगे।"

राजा को यह सुझाव पसंद आ गया। चारण वेश बदलकर सूरतगढ़ पहुंचा। लोगों से मिला। उन्हें राजा के बारे में बताया। लोग राजा के बारे में जानकर बहुत खुश थे। चारण यह समाचार लेकर प्रतापसेन के पास पहुंचा। राजा ने मौका पाकर धावा बोल दिया। प्रजा ने भी उनका साथ दिया। शत्रु राजा महल



छोड़ भाग गया। देखते-देखते प्रतापसेन का राज्य पर पुनः अधिकार हो गया।

राजा ने दरबार में विजय उत्सव का आयोजन किया। वफादार सैनिकों को इनाम बांटे। चारण से कहा—"विनायक ! जो चाहो, मांग लो। यह राज्य तुम्हारी बदौलत मिला है।"

चारण का सिर झुका था। हाथ जोड़कर बोला "महाराज ! देना ही है, तो कुमार चंद्रसेन को सात खंड का महल बनवाकर दे दें।" सब चकित थे। सोच रहे थे कि चारण अपने लिए कुछ मांगेगा।

राजा ने महल बनाने का आदेश दे दिया। तेजी से काम हुआ और महल तैयार हो गया। बड़ा ही भव्य महल था। सात खंड थे।

राजा ने उद्घाटन के दिन चारण को बुलवाया। दोनों महल के पास पहुंचे। चारण ने कहा—"महाराज ! बड़ा अद्भुत और विचित्र महल बनवाया है आपने !" राजा बोला—"उद्घाटन तुम्हें करना है इस महल का। चलो, अंदर चलो।"

चारण महल में घुसने को हुआ। अचानक उसकी नजर महल के बाहर लिखे मोटे-मोटे अक्षरों पर जाकर टिक गई। उस पर लिखा था—'चारण महल'। यह पढ़कर चारण चौंका। बोला—"महाराज, इस पर तो राजकुमार चंद्रसेन का नाम होना चाहिए था। आपने यह लिखकर... ।"

"—चारण, हमेशा तुम्हारा कहा माना है मैंने। यही एक काम अपने मन से किया है।" चारण चुपचाप खड़ा था। एकटक राजा को देख रहा था। तभी राजकुमार वहां आ गया। वह बोला—"पिता जी ने ठीक ही किया। इस महल का नाम चारण महल ही ठीक है। यह विनायक राव जी की मेहनत और हिम्मत का फल है। वरना हम लोग जंगल की खाक छान रहे होते। यह महल एक देशभक्त और बुद्धिमान व्यक्ति की कहानी हमेशा दोहराता रहेगा।" यह सुनना था कि चारण की आंखें भर आईं।

तभी भीड़ ने राजा और चारण का जय-जयकार किया। ●

जैसा दे : वैसा ले

—डा. पंकज साहा

किसी गांव में एक धनी व्यापारी रहता था। अनाज का उसका काफी बड़ा व्यापार था। अनाज रखने के बड़े-बड़े भंडार घर थे उसके पास। सस्ते समय में वह आस-पास की मंडियों से सारा अनाज खरीदकर भंडारों में रख लेता था। जब मंडी में आवक घट जाती और मांग बढ़ जाती, तब अपने अनाज को मनमाने दामों में बेचता। इससे अनाज की कीमत बढ़ जाती।

गांव की जनता ने व्यापारी के विरुद्ध राजा के पास शिकायत भी पहुंचाई। पर राजा के साथ व्यापारी के अच्छे संबंध थे। वक्त पड़ने पर व्यापारी से राजा कर्ज भी लेता था। अतः जनता की फरियाद न सुनी जाती और व्यापारी की मनमानी चलती रहती।

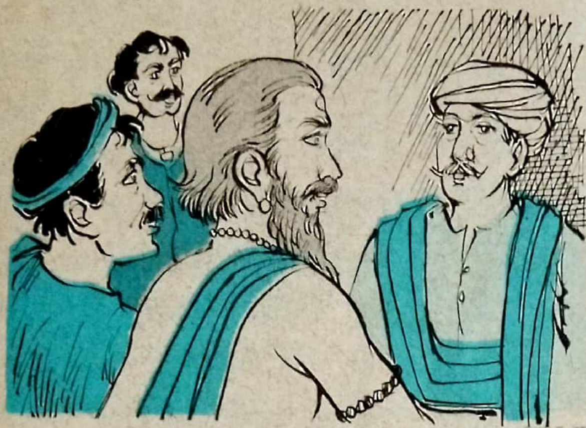
एक बार की बात है, राज्य में भयंकर अकाल पड़ा। अनाजों के भाव काफी बढ़ गए। व्यापारी ऊंचे दामों पर अनाज बेचने लगा। वह लालची तो था ही, कंजूस भी एक नम्बर का था। दया तो उसके अंदर थी ही नहीं। दान-पुण्य कभी नहीं करता था। उसके दरवाजे पर कभी किसी को भीख नहीं मिलती थी।

उन्हीं दिनों गांव के छोर पर, सूखी नदी के किनारे एक साधु ने डेरा डाला। गांव वालों को मालूम हुआ, तो सब साधु के पास पहुंचे। मुखिया ने हाथ जोड़कर गांव में आई विपत्ति दूर करने के लिए साधु से प्रार्थना की।

साधु ने मुखिया से कहा—"कल हम इंद्र देवता को प्रसन्न करने के लिए एक यज्ञ करेंगे। तुम गांव के प्रत्येक घर से थोड़ा-थोड़ा अनाज लेकर आना। ध्यान रखना, कोई भी घर छूटने न पाए।

दूसरे दिन गांव वालों के साथ मुखिया साधु के सामने उपस्थित हुआ। उनके साथ एक बोरी अनाज था। साधु ने पूछा—"कोई घर छूटा तो नहीं न ?"

मुखिया ने कहा—"गांव के सभी घरों से जो भी बन पड़ा, मिला। परंतु.... ।"



—"परंतु क्या ?"

"महात्मन्, गांव में एक धनी व्यापारी है। उसके पास अनाज के कई भंडार हैं, पर वह एकदम कंजूस है। उसने हमें अनाज नहीं दिया, साथ ही यह कहकर दुत्कार दिया कि उसे साधु-महात्मा पर विश्वास नहीं, सब ढोंगी होते हैं।"

यह सुनते ही साधु झट अपने आसन से उठ खड़े हुए।

रास्ता दिखलाते हुए मुखिया साधु को व्यापारी के दरवाजे तक ले आया।

साधु ने पुकारा—"इस साधु को एक मुट्ठी भिक्षा दे दो।"

दो-तीन बार आवाज लगाने के पश्चात् व्यापारी बाहर निकलकर बोला—"चले जाओ यहां से। हम किसी को भीख नहीं देते।"

साधु शांत स्वर में बोले—"यह भीख मैं अपने लिए नहीं, गांव के कल्याण के लिए मांग रहा हूं। यज्ञ करना है।"

व्यापारी ने कहा—"मैं यज्ञ-वज्ञ को नहीं मानता। और फिर गांव वालों के कल्याण से तो मुझे नुकसान ही होगा। फिर भी, तू मेरे दरवाजे पर आया है, तो मैं तुझे निराश नहीं करूंगा। ले जा एक मुट्ठी कंकड़। इन कंकड़ों को मैं अनाज में मिलाकर अनाज के भाव बेचता हूं, इसलिए मेरे लिए ये अनाज के बराबर हैं।" यह कहकर व्यापारी ने एक मुट्ठी कंकड़ साधु की झोली में डाल दिए।

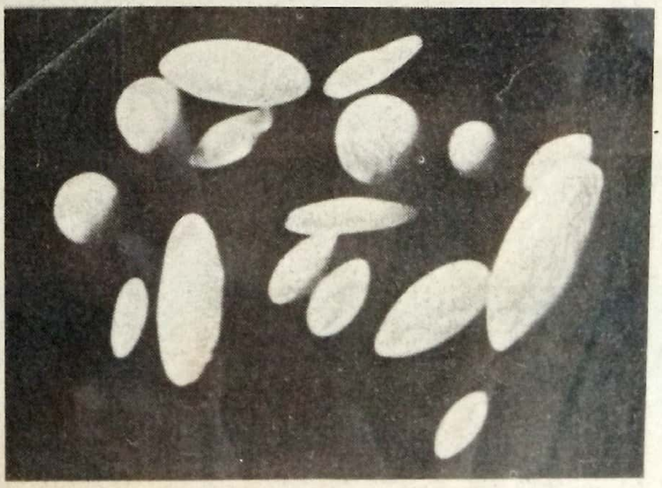
साधु ने क्रोधित होकर कहा—"रे दुष्ट, तुझे इस दुष्टता की सजा अवश्य मिलेगी। तूने यज्ञ के लिए अनाज के बदले कंकड़ दिए है न ? तो सुन, मैं इन्हीं कंकड़ों से यज्ञ करूंगा। जिस व्यक्ति ने जो दिया है, उसे वैसे ही फल की प्राप्ति होगी।"

यज्ञ समाप्त होने पर गांव वालों ने देखा, आकाश में काले-काले बादल उमड़ने-घुमड़ने लगे हैं। बादलों को देख, गांव वालों की खुशी का ठिकाना न रहा। थोड़ी ही देर में बादल बरसने लगे। काफी देर तक घनघोर वर्षा होती रही।

वर्षा समाप्त होने पर गांव वालों ने देखा, चारों ओर हरियाली ही हरियाली फैल गई। हर खेत में फसले लहरा रही थीं। गांव के लोग अपने-अपने खेतों मे झूमती फसलों को देख, खुशी से नाचने-गाने लगे। तभी किसी ने सूचना दी कि व्यापारी का मकान एवं भंडारघर बरसात में ढह गए हैं। सब लोग उधर दौड़ पड़े।

मकान और भंडारघरो का कहीं अता-पता नहीं था। व्यापारी और उसके घरवाले कहीं नजर नहीं आ रहे थे। भंडारघर में रखा सारा अनाज कंकड़-पत्थर में बदल गया था।

बिहार के साहिबगंज जिले में राजमहल नामक शहर है। यहां से लगभग पांच मील दक्षिण-पश्चिम में कटघर गांव है। कटघर में पत्थर के भांति-भांति के अनाज बिखरे मिलते हैं। प्रति वर्ष सैकड़ों सैलानी उस स्थान को देखने के लिए आते हैं। और मिट्टी के साथ मिले पत्थर के अनाजों को बीन कर ले जाते हैं। ●



नंदन पाठक प्रतियोगिता : द्वितीय पुरस्कार

चुटकुले

● चित्रकार (किसान से) —मैंने तुम्हारे बैल का चित्र दो हजार रुपए में बेच दिया है।
किसान— लोग भी कैसे मूर्ख हैं ! इतने में तो मैं बैल ही दे देता। **—विजयकुमार अग्रवाल, रायगढ़**

● अध्यापक—ऐसा कौन-सा जानवर है, जो शेर से नहीं डरता ?
छात्र—शेरनी। **—मुकेशकुमार जायसवाल, धनबाद**

● एक आदमी— वाह, क्या शानदार सूट है ! मुझे भी सूट सीने वाले दर्जी का पता दे दीजिए।
दूसरा आदमी—एक शर्त है। आप उस दर्जी को मेरा नाम नहीं बताएंगे। **—नम्रता सिन्हा, रोहतास**

● मां— राम ! तुम्हारे रिपोर्ट कार्ड में जीरो का क्या मतलब है ?
राम— मां ! टीचर के पास स्टार कम थे। बस, उन्होंने मुझे चांद दे दिया।
—डिम्पल भल्ला, नई दिल्ली

● डबलू— मैंने पिछले सात महीने से रोटी नहीं खाई।
बबलू— अब तक जिंदा कैसे हो ?
डबलू— चावल खाकर। **—महादेव महली, रांची**

● मिंटू (गंजे मित्र से)— गंजा होने पर तुम्हें कोई तकलीफ तो नहीं होती ?
गंजा मित्र— यार, एक तकलीफ है। मुंह धोने पर पता नहीं चलता कि मुंह कहां तक है।
—रघुवीर सिंह, पटियाला

● एक परीक्षा में 'आलस्य' विषय पर निबंध लिखना था। एक लड़के ने सारे पन्ने छोड़कर अंतिम पृष्ठ में लिखा— **'आलस्य'** है।
—सुनील जेठमलानी, ग्वालियर

● साला— जीजा जी ! मैं अंग्रेजी में एम.ए. किए बिना शादी नहीं करूंगा।
जीजा— लगता है, तुमने आजीवन कुंआरा रहने का मन बना लिया है। **—संतोषकुमार साहा, भागलपुर**

● अध्यापक— राजू ! जब शाहजहां पहली बार राजगद्दी के पास पहुंचा, तो उसने क्या किया था ?
राजू—जी, वह आराम से गद्दी पर बैठ गया।
—सुम्बुल बानो, रुड़की

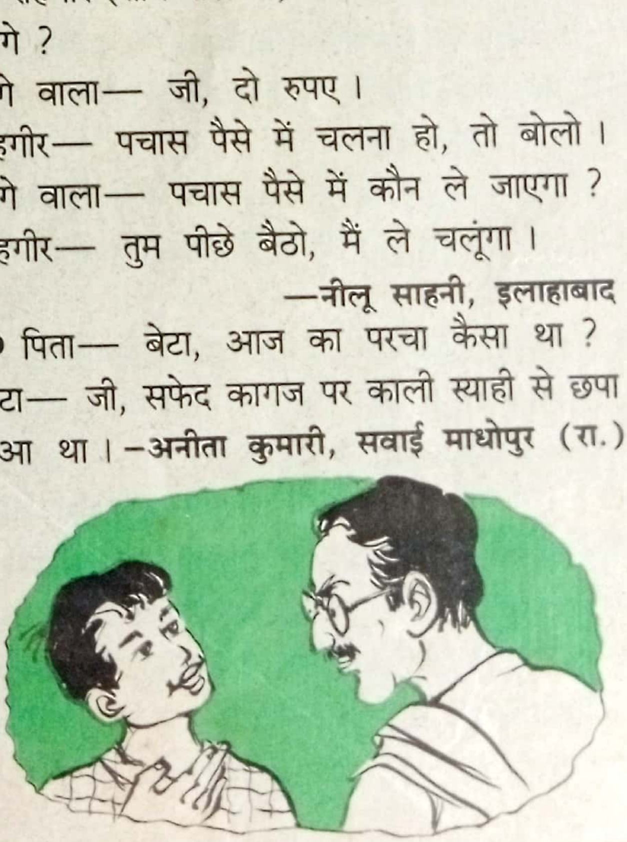
● ग्राहक— भई, यह फटा नोट नहीं चलेगा।
दुकानदार— अरे साहब ! जरा इस नोट को सड़क पर फेंक कर तो देखो। कहां से चलकर कहां गायब हो जाएगा, पता ही नहीं चलेगा।
—विद्याशंकर लौरछिया, कार्बी एंग लाम (असम)

● बेटा— पापा ! क्या आपको अंधेरे में दिखाई नहीं देता ?
पापा— हां बेटा।
बेटा— जब अंधेरा हो जाए, तो मेरे रिपोर्ट कार्ड पर साइन कर देना। **—गौरव, नई दिल्ली**

● श्याम— सर ! आसमान में ऊपर क्या हमेशा पानी बरसता है ?
अध्यापक— नहीं तो।
श्याम— फिर हवाई जहाज से कूदने वाला हर आदमी छतरी क्यों लगाए रहता है ?
—वी.के. सिन्हा, गया

● राहगीर (तांगे वाले से)— स्टेशन चलने का क्या लोगे ?
तांगे वाला— जी, दो रुपए।
राहगीर— पचास पैसे में चलना हो, तो बोलो।
तांगे वाला— पचास पैसे में कौन ले जाएगा ?
राहगीर— तुम पीछे बैठो, मैं ले चलूंगा।
—नीलू साहनी, इलाहाबाद

● पिता— बेटा, आज का परचा कैसा था ?
बेटा— जी, सफेद कागज पर काली स्याही से छपा हुआ था। **—अनीता कुमारी, सवाई माधोपुर (रा.)**



तेनालीराम २८१

थैली का मालिक



एक बार राजा कृष्णदेव राय के दरबार में एक आदमी आया । प्रणाम कर बोला —"महाराज, मैं आज प्रातः काल मंदिर के पास से गुजरा, तो वहां मुझे एक थैली मिली । पूछताछ भी की, पर इसके मालिक का पता न चला । अब आप जैसा उचित समझें वैसा करें ।" कहते हुए उसने थैली राजा को सौंप दी ।

राजा ने तेनालीराम से कहा— "थैली के मालिक को थैली लौटा दी जाए ।" तेनालीराम ने ढिंढोरा पिटवा दिया—'मंदिर के पास एक मखमली, काले रंग की थैली मिली है । उसमें एक हजार स्वर्ण मुद्राएं हैं । जिसकी हो, वह ले जाए ।' यह घोषणा सुन, मंत्री और पुरोहित एक दूसरे को देखकर मुसकराए ।

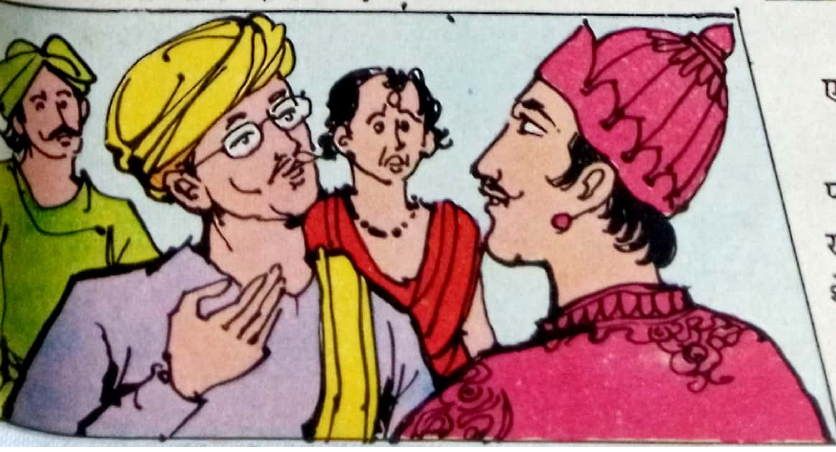


अगले ही दिन कई लोग थैली लेने दरबार में पहुंचे । मंत्री ने राजा के कान भरे—"देखा महाराज ! स्वयं ही तेनालीराम ने सारा भेद खोल दिया । अब असली मालिक की पहचान कैसे की जाएगी ?" राजा भी तेनालीराम पर झुंझलाए । बोले—"तुमने थैली का रंग तो रंग, स्वर्ण मुद्राओं की संख्या भी बता दी । अब बहुत सारे लोग थैली के हकदार बन रहे हैं । थैली किसे दी जाए ।"

सुनकर तेनालीराम तनिक मुसकराया । बोला—"महाराज ! अभी हो जाएगा फैसला ।" फिर उसने थैली लेने आए लोगों को एक-एक करके दरबार में बुलाया । उन्हें थैली दिखाता, कुछ पूछता। फिर चलता कर देता ।



अंत में एक बूढ़ा व्यक्ति आया । बोला—"थैली तो मेरी है । उसमें एक हजार मुद्राएं थीं । उनमें से एक मुद्रा मैंने दान कर दी । एक मुद्रा रास्ते में अपने रहने और खानपान पर खर्च कर दी थी । अब थैली में नौ सौ अट्ठानवे मुद्राएं होनी चाहिएं ।" सुनकर तेनालीराम ने कहा—"यह तुम्हारी ही थैली है ।" उसने थैली उसे सौंप दी ।



राजा ने तेनालीराम से कहा—"तुमने तो घोषणा में एक हजार स्वर्ण मुद्राएं बताई थीं ।"

"—हां महाराज ! इसी से तो झूठ और सच की पहचान हुई ।" पुरोहित और मंत्री बगलें झांकने लगे । राजा और दूसरे दरबारी तेनालीराम की प्रशंसा कर रहे थे ।


nutrine
EAT MANGO JUICE!
nutrine
AAM-RAS
NUTRINE AAM-RAS HAS
REAL REAL REAL
MANGO JUICE IN
THE CENTRE. GO ON
EAT & EAT & EAT & EAT & EAT
IT ALL UP!
Mudra:Blr:NC:341:91


SUPER CHAMPS
COLLECTION
SCHEME
मुफ़्त
स्पोर्टस्टार
स्टिकर
सुपर मज़ा! सुपर इनाम!
24 स्टिकर इकट्ठे करो।
और जीतो शानदार उपहार।
हर नये 25 हाज़मोला कैन्डी 'सुपरचैम्प्स' पैक के भीतर हैं आपके मनपसंद स्पोर्टस्टार के स्टिकर। इमरान ख़ान, इवान लैंडल, स्टैफ़ी ग्राफ़ और अन्य कई मशहूर खिलाड़ी।
5 स्टिकर इकट्ठे करो और पाओ एक शानदार 'सुपरचैम्प्स' एलबम। इतना ही नहीं तुम हाज़मोला कैन्डी क्लब के सदस्य भी बन जाओगे। (विवरण प्रत्येक 'सुपरचैम्पस' पैक के भीतर है)
जल्दी करो! अपना 'सुपरचैम्प्स' कलेक्शन आज ही शुरू कर दो!
25 CANDY PACKS
Hajmola®
CANDY
SUPER CHAMPS
शानदार उपहार
पहली 1000 पूरी एलबम भेजने वालों के लिए
COLLECT 24 SPORTSTAR STICKERS AND COMPLETE THE ALBUM.
Khatti Meethi
Hajmola®
CANDY
everest/d91/DIL/69 hin


MAGGI CLUBBERS
FUN LOVERS
MAGGI CLUB
मैगी क्लब से
मुफ़्त उपहार पाओ,
मौज-मस्ती के रंग जमाओ!
'मैगी ऑप्रिशन वाइल्डलाइफ गेम'
द्वारा वन्य प्राणियों की रक्षा करो.
KING OF THE JUNGLE
'मैगी किंग ऑफ़ दी जंगल गेम'
में जंगल की सैर करो
आओ बच्चो. मैगी क्लब में शामिल हो जाओ, सारे साल मौज मनाओ.
न्यूज़ लैटर्स, उपहार, गेम्स और मौज-मस्ती की कई अन्य चीज़ें...
बस तुम यह मैगी नूडल्स के 5 खाली रैपरों के सामने
के हिस्से से काटकर हमें भेज दो. और, साथ में अपना नाम,
पता और अपनी पसंद का उपहार भी लिख भेजना. हां, अगर
तुम मैगी क्लब के सदस्य हो तो सदस्यता संख्या भी ज़रूर
लिखकर भेजना. और, अगर तुम मैगी क्लब के सदस्य नहीं हो तो अब
मौका मत चूकना. अपना विवरण भेजते समय सदस्यता कार्ड
भी मंगवा लेना. हम तुम्हारे उपहार के साथ मैगी क्लब
सदस्यता कार्ड भी मुफ़्त भेज देंगे!
TO LET
'मैगी जादू जंगल'
से अपना जंगल बनाओ.
'मैगी बर्डहाउस'
बनाओ
Archie
आर्ची कॉमिक
हमारा पता है:
मैगी क्लब
पो. ओ. बॉक्स 5788
नई दिल्ली-110 055
FREE
मुफ़्त! मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमल्स'
क्विज़ पुस्तिका.
तुम जो 3 उपहार इकट्ठे करोगे तो उनके साथ हम तुम्हें
मुफ़्त मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमल्स'
क्विज़ पुस्तिका भेजेंगे. उसमें
तुम्हें मिलेगी वन्य-प्राणियों के
बारे में दिलचस्प और
आश्चर्यजनक जानकारी.
हर गेम में पूरा विवरण
देख लेना.
HTA 7105 HIN
MAGGI
2-Minute noodles
FAST TO COOK! GOOD TO EAT!
Name
Membership no.
एक और मौका! अगर तुमने 'लॉज ऑफ़ द जंगल गेम' अभी तक नहीं लिया है तो अब ले लो!

बनाओ सीढ़ी

—चन्द्रभूषण

प्राचीन समय की बात है, नरक के राजा थे नरकासुर। गद्दी पर बैठने के बाद वह नरक को सुधारने में लग गए। उनके मन में बार-बार एक ही बात आती—'क्यों न नरक को स्वर्ग बना दिया जाए।' इस काम के लिए उन्होंने हर क्षेत्र में कुशल और बलशाली असुरों की सभा बुलाई।

बड़े और दिग्गज असुर उस सभा में आए। कई असुर आते ही अपने स्वभाव के अनुसार गंदगी फैलाने लगे। जहां-तहां थूकने लगे। उनमें अधिकांश ऐसे असुर थे, जो कभी नहाए तक नहीं थे। नतीजा यह हुआ कि पूरी सभा में दुर्गंध फैल गई।

थोड़ी देर बाद सभा में राजा नरकासुर आए। बैठक की अव्यवस्था और असुरों के शरीर की बदबू ने उन्हें परेशान कर दिया। उन्होंने तुरंत एक सेवक से कहा—"पृथ्वी से लाए गए इत्र का छिड़काव किया जाए।"

इत्र के छिड़काव के बाद सभा में सुगंध फैल गई। असुरों को जब इस नई सुगंध का अहसास हुआ, तो वे लगे झूमने।

राजा नरकासुर के चेहरे पर जो खीज थी, वह भी दूर हो गई। उन्होंने सभा में कहा—"आज हम एक विशेष कारण से यहां एकत्र हुए हैं। आप तो जानते ही हैं कि नरक की स्वर्ग से बहुत पुरानी दुश्मनी है। अतः हमें ऐसा प्रयास करना चाहिए कि नरक स्वर्ग की तरह सुंदर हो।"

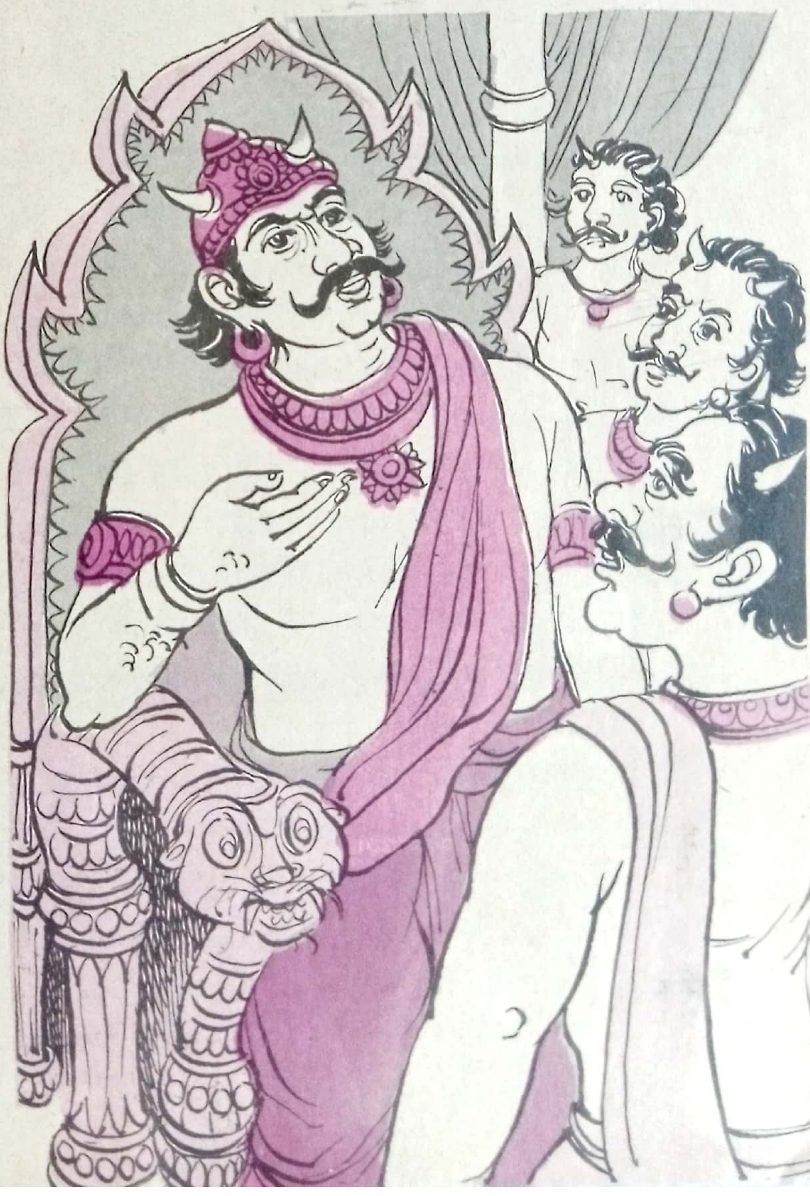
इस पर बीच में ही एक वृद्ध असुर ने कहा—"नहीं महाराज, नहीं! ऐसा करने से तो नरक की अपनी पहचान ही खत्म हो जाएगी। फिर स्वर्ग और नरक में अंतर क्या रह जाएगा?"

राजा ने कहा—"इसी बात को समझने के लिए तो हम लोग यहां जमा हुए हैं। स्वर्ग के लोग कितने साफ-सुथरे और व्यवस्थित ढंग से रहते हैं। उन्हें अगर डर है तो हम लोगों से ही है। अतः इस क्षेत्र में तो हम लोग उनसे बलशाली हैं ही। कोशिश यह की जानी चाहिए कि स्वच्छता और सुंदर ढंग से जीने में भी हम उनसे बाजी मार लें।"

राजा के इस तर्क को सुनने के बाद सभी असुर चुप हो गए। उन्होंने सिर हिलाकर अपनी सहमति दे दी। राजा नरकासुर ने नरक को स्वर्ग में बदलने के लिए अगले दिन से ही जुट जाने का आदेश दिया।

अपने-अपने क्षेत्रों में निपुण असुर इस काम में जुट गए। नरक की सारी गंदगी नष्ट की जाने लगी। जो असुर आज तक नहाए नहीं थे, वे अपने शरीर को मल-मलकर नहाने लगे। पहली बार नहाने के कारण उन्हें विशेष प्रकार का आनंद मिल रहा था। असुरों की स्त्रियां घरों को साफसुथरा रखने लगीं। सुंदर वस्त्र पहनने लगीं।

कुछ दिनों के बाद राजा नरक में घूमने निकले।



उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि नरक में गंदगी और अव्यवस्था पूरी तरह समाप्त हो चुकी है। उनकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा।

उधर नरक को स्वर्ग जैसा बनते देख, स्वर्ग के देवतागण बड़े भयभीत हुए। उन्हें लगने लगा कि अब तो लोग असुरों की ही खातिर अधिक करेंगे। जल्दी ही इस समस्या से निबटने के लिए एक सभा बुलाई गई। सभा में यह निर्णय लिया गया कि नरकासुर के दर्प को चकनाचूर किया जाए।

इधर राजा नरकासुर नरक को स्वर्ग में बदला हुआ देख, खुशी के मारे फूले नहीं समा रहे थे। अब उन्हें इच्छा हुई कि क्यों न किसी स्वर्ग की देवी से शादी की जाए।

एक बार नरकासुर प्रागज्योतिषपुर (असम) के ऊपर से गुजर रहे थे। मार्ग में उन्होंने नीलाचल पर्वत पर देवी कामाख्या को देखा। उनकी अनुपम सुंदरता पर राजा रीझ गए। उन्होंने देवी कामाख्या के पास जाकर उनके सामने विवाह का प्रस्ताव रख दिया। इस पर देवी ने कहा—"हे राजन, अगर आप रात भर में यहां से नरक तक जाने की सीढ़ी बनवा दें, तो मैं आपकी इच्छा पूरी कर सकती हूं।"

राजा नरकासुर ने यह चुनौती स्वीकार कर ली। तुरंत नरक के कई दिग्गज असुर शिल्पी ले आए। अंधेरा होते ही वे सारा सामान जुटाकर सीढ़ी बनाने के काम में जुट गए।

सीढ़ी लगभग बन चुकी थी, किंतु सबेरा होने से बहुत पहले ही देवी की माया से मुर्गा बोल उठा। राजा नरकासुर को उस मुर्गे पर काफी क्रोध आया। उन्होंने उस मुर्गे का पीछा कर, तलवार से उसका सिर काट डाला। राजा नरकासुर शर्त पूरी नहीं कर सके, इसलिए देवी कामाख्या नरक नहीं गईं।

आखिर राजा नरकासुर दुखी होकर फिर से नरक लौट आए। उन्हें स्वर्ग के देवी-देवताओं से चिढ़ हो गई। इस प्रकार नरक को स्वर्ग में बदलने की योजना खत्म हो गई। नरक और स्वर्ग में फिर पहले की तरह दुश्मनी ठन गई। **(असमिया लोककथा)**

ये लो पांच

—अभिषेक

दो मित्र थे। एक का नाम था दीनू और दूसरे का रामू। दीनू साहूकार था और रामू एक छोटा-सा किसान। फिर भी उनमें गजब की दोस्ती थी। दोनों एक-दूसरे पर जान छिड़कते। एक-दूसरे के दुःख-दर्द में साथ देते।

एक बार रामू अपनी पत्नी के साथ तीर्थ यात्रा पर निकला। उसने अपने सभी जेवर और गिन्नियां एक थैली में बंद कीं और दीनू के पास जा पहुंचा।

"आ भाई रामू, आज इतनी सुबह-सुबह! कोई विशेष बात है क्या?"— दीनू ने पूछा।

रामू बोला—"भइया, तुम्हारी भाभी के साथ तीर्थ यात्रा पर जा रहा हूं। सोचता हूं, थोड़े-से जेवर-गिन्नियां हैं। इन्हें खाली घर में छोड़ना ठीक नहीं। इसलिए ले आया हूं कि तुम्हारे पास सुरक्षित रहेंगे!"

"हां-हां, क्यों नहीं!"—कहते हुए दीनू ने रामू के हाथ से थैली ले ली। बिना देखे ही, अपनी तिजोरी खोल, संभालकर रख दी और कहा— "तुम अब बेफिक्र हो, तीर्थ कर आओ। और हां, मेरे लिए प्रसाद लाना न भूलना!"

"हां-हां, यह भी कोई कहने की बात है! अच्छा, चलता हूं।" —कहकर रामू ने दीनू से विदा ली।

उसी दिन दोनों पति-पत्नी तीर्थ यात्रा को रवाना हो गए।

लगभग दो महीने बाद वे तीर्थ यात्रा से लौटे। पत्नी ने रामू से अपना सामान वापस लाने को कहा। अगले दिन रामू तीर्थ स्थलों का प्रसाद ले, दीनू साहूकार की हवेली में जा पहुंचा। दोनों मित्र खूब गले मिले। रामू ने दीनू को प्रसाद दिया, तो वह बोला—"आज शाम भोजन मेरे साथ ही करना। हां, भाभी को भी साथ लेकर आना। तुम दो महीने के लिए क्या गए, मैं तो पागल-सा ही हो गया।"

उस शाम दोनों मित्रों के परिवारों ने साथ-साथ

भोजन किया। जब रामू और उसकी पत्नी घर लौटने को हुए, तो दीनू ने तिजोरी खोल, रामू की थैली उसके हवाले की। अपनी थैली ले, पति-पत्नी दीनू के भोजन की तारीफ करते हुए घर लौट आए।

रात जब पत्नी सो गई, तो रामू ने जेवरों की थैली खोली। जेवर तो उसमें पूरे थे, लेकिन पांच गिन्नियां कम निकलीं। रामू सोचने लगा कि दीनू मेरे साथ ऐसा नहीं कर सकता। वह सारी रात सोचता रहा, तभी उसके मन में आया कि धन पर तो अच्छे-अच्छों के ईमान बिगड़ते देखे हैं। इसी ऊहापोह में रामू रात भर नहीं सो सका।

उसने इस संबंध में अपनी पत्नी से भी बात नहीं की। उसने सोचा—'अगर पत्नी से कहा, तो वह मेरी ही हंसी उड़ाएगी—इतना ईमानदार है तुम्हारा दोस्त !' यह सोच, रामू चुप रहा, लेकिन अपने दोस्त के बेईमान होने का संदेह उसके मन में बढ़ने लगा। एक-दो दिन ऐसे ही सोच में गुजर गए कि सिर्फ पांच गिन्नियों के लिए क्या दोस्ती खत्म कर दी जाए !

आखिर रामू से नहीं रहा गया। दो-एक दिन बाद वह चुपचाप दीनू के पास पहुंचा। बहुत संकोच करते हुए उसने सारी बात उससे कह डाली। इस पर दीनू बोला—"बस, इतनी-सी बात !" इतना कह, उसने तिजोरी खोलकर पांच गिन्नियां निकाल, रामू के हाथ में रख दीं।

बस, इस संबंध में दोनों में इतनी ही बात हुई। रामू का संदेह और पक्का हो गया। घर पहुंच, रामू ने अपनी पत्नी से कहा—"क्या जमाना आ गया है ! जिस पर जीवन भर विश्वास किया, उसी दोस्त ने विश्वासघात किया। मैं अपनी गिन्नियां नहीं गिनता, तो उस साहूकार दीनू ने पांच गिन्नियां हजम कर ली थीं ! आखिर है तो साहूकार..." वह अभी कह ही रहा था कि उसकी पत्नी ने अपना सिर पीट लिया। बोली—"यह आपने क्या अनर्थ कर दिया ! कम से कम उन पांच गिन्नियों के बारे में मुझसे तो पूछ लेते !" फिर उसने कुछ रुककर कहा—"अरे, उस थैली से पांच गिन्नियां तो मैंने रास्ते के खर्च के लिए



निकालकर सुनार को बेच दी थीं। जाओ और दीनू भइया की गिन्नियां वापस कर, उनसे माफी मांगो।"

पत्नी की बात सुन, रामू उलटे पांव दीनू की हवेली में जा पहुंचा। उस समय दीनू अकेला ही बैठा था। रामू को तुरंत वापस आया देख, बोला—"क्यों रामू भइया, सब खैरियत तो है?"

"खैरियत क्या खाक है ! कभी-कभी बिना बात भी कैसा बवंडर खड़ा हो जाता है !" कहकर रामू ने दीनू को सब बात कह सुनाई। गिन्नियां लौटाते हुए पूछा—"क्यों दीनू, तुमने भी बिना किसी तर्क-वितर्क के मुझे पांच गिन्नियां वापस पकड़ा दीं। आखिर क्यों ?"

दीनू मुसकरा दिया। बोला—"दोस्ती के लिए। पांच गिन्नियां कोई तुमसे बड़ी थोड़े ही हैं मेरे लिए।"

दोनों की आंखों में स्नेह के आंसू थे। ●



रिमझिम पानी

इंद्रधनुष के रथ पर चढ़कर
आई है वर्षा रानी,
गली-गली में, गांव-गांव में
रिमझिम बरस रहा पानी।

आसमान में बिजली चमकी
घटा उठी काली-काली,
खेत-खेत में झूम रही है
नई, निराली हरियाली।

भीग रहे घोंसले डाल पर
टपक रहे छप्पर-छानी,
नदी-ताल में जल ही जल है
बंद हुईं राहें सारी।

प्यास बुझ गई है धरती की
उमड़ चली क्यारी-क्यारी,
दूर-दूर मीलों तक फैला
दिखता पानी ही पानी।

—बाबूलाल शर्मा 'प्रेम'

रंग जमाओ

मेंढक मामा आओ!
बड़े दिनों के
बाद मिले हो,
अपने हाल सुनाओ।

ताल-तलइया
पूछे नइया,
कहां रहे
इतने दिन भइया?

नाच उठीं
बूंदें ता-थइया,
तुम भी रंग जमाओ!

आना-जाना
दिन भर गाना,
तानसेन के
बनते नाना।

गर्मी भर
क्यों गूंगे जैसे
पड़े रहे, समझाओ!

—डा. हरीश निगम



वन का राजा

शेर जानवर है अलबेला,
वन का राजा चले अकेला।
हाथी धीरज धरने वाला,
फूंक-फूंककर चलने वाला।

हिरण सदा फुर्ती में आगे,
नहीं हिरण-सा कोई भागे।
ऊंट बहुत दिन पिए न पानी,
यह जहाज है रेगिस्तानी।

कुहू-कुहू गाती है कोयल,
सबके मन भाती है कोयल।
चींटी दिन भर चलने वाली,
गिरने और संभलने वाली।

मछली रानी, मछली रानी,
निर्मल कर देती है पानी।
तरह-तरह के प्राणी जग में,
होती है विशेषता सब में।

—राजा चौरसिया

अपना घर

मिंकी, मीशा दो बहनें थीं
दो बहनें थीं प्यारी-प्यारी,
परियों जैसी सुंदर दोनों
महक उठी घर की फुलवारी।

लेकिन थीं वे नखरे वाली
सारे दिन बस आनाकानी,
गाल फुलाए रहती थीं वे
जैसे उनकी गुड़िया कानी।

इक दिन पापा बोले—आओ
तुमको गुड़ियाघर दिखला दें,
अगर कहो तो तुमको कोई
अच्छी-सी इक गुड़िया ला दें।

उछल पड़ीं तब मिंकी, मीशा
झटपट पापा के संग चल दीं
सुंदर सपनों में खोई थीं
पहुंच गईं गुड़ियाघर जल्दी।

देख-देख गुड़ियों का मेला
मिंकी-मीशा थीं हैरान,
कितनी भोली-भाली गुड़ियां
होंठों पर मीठी मुसकान।

बोलीं—पापा, ये गुड़ियां तो
अलबेली हैं प्यारी-प्यारी,
देख रही हैं चुप-चुप हमको—
घर ले जाएं क्या ये सारी?

पापा हौले से मुसकाए
दिखलाया झट उनको शीशा,
बोले—दो गुड़ियां तो हैं ही
एक है मिंकी, एक है मीशा।

खूब प्यार से रहो अगर तुम
घर अपना भी है गुड़ियाघर,
सभी कहेंगे—प्यारा-प्यारा
देखो यह कितना बढ़िया घर!

सुनकर मिंकी-मीशा बोलीं—
कुट्टी अब हम नहीं करेंगे,
अपना घर होगा गुड़ियाघर
मस्त रहेंगे, नहीं लड़ेंगे!

—प्रकाश मनु

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक का होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
  सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. तुम तो पीछे-पीछे— पर चले आए। (तट/घाट)

२. दूर से— नजर आ रहा था। (ताज/ तारा)

४. अंधेरी रात में बालक बार-बार पुकार उठता, — ! (पानी/ नानी)

६. उस पत्थर पर पैर रखते ही— याद आ गया। (काम/ काल)

७. तुम कुछ भी करो,— के प्रभाव से बचना मुश्किल है। (राजा/ राहु)

८. कहीं— ने शाप दे दिया तो ! (शनि/ मुनि)

९. मैं वहां पहुंचा, तो— फट चुकी थी। (पौ/ लौ)

१०. महाशय,— देखे बगैर मैं कुछ नहीं कह सकता। (नाड़ी/ नाम)

१२. एक राजा जिन्होंने जंतर-मंतर नाम से प्रसिद्ध वेधशालाएं बनवाईं।

ऊपर से नीचे

३. आखिर— ने उसे परास्त कर दिया। (नाग/ रोग)

५. अरे शंखधर, तुम भी इस दुष्ट के— में फंस गए। (जाल/ जादू)

११. एक प्रसिद्ध नदी जो गंगा में मिलती है।

— — — — — — — — — — — — — — काटिए — —

नंदन ज्ञान-पहेली : २७३

नाम ______________________

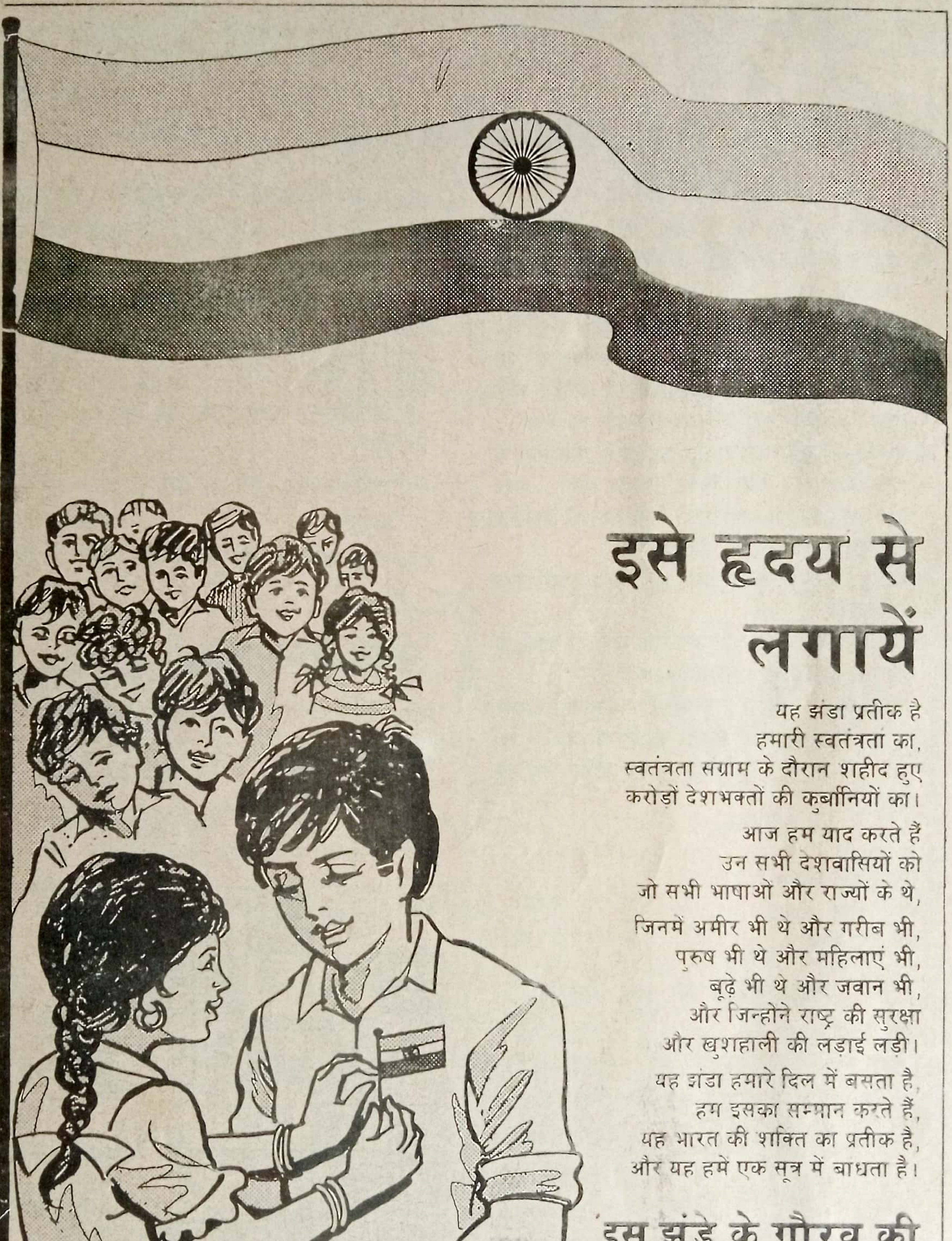
आयु —— पता ______________________

____

____



नं. ज्ञा. प. २७३



इसे हृदय से लगायें
यह झंडा प्रतीक है
हमारी स्वतंत्रता का,
स्वतंत्रता सग्राम के दौरान शहीद हुए
करोड़ों देशभक्तों की कुर्बानियों का।
आज हम याद करते हैं
उन सभी देशवासियों को
जो सभी भाषाओं और राज्यों के थे,
जिनमें अमीर भी थे और गरीब भी,
पुरुष भी थे और महिलाएं भी,
बूढ़े भी थे और जवान भी,
और जिन्होने राष्ट्र की सुरक्षा
और खुशहाली की लड़ाई लड़ी।
यह झंडा हमारे दिल में बसता है,
हम इसका सम्मान करते हैं,
यह भारत की शक्ति का प्रतीक है,
और यह हमें एक सूत्र में बाधता है।
इस झंडे के गौरव की
रक्षा करें
davp 91/274

हुई-हुई

—रमेश बक्षी

एक गांव में शादी में दो लड़के आए थे। जब वे वहां पहुंचे, तो आने वाले दिन के लिए खाना-मिठाई पकाकर, हलवाई-पंडित रसोई में भोजन ढककर, बाहर कुंडी लगाकर, चारपाई पर चौकीदार की तरह लेट चुके थे। इन दोनों लड़कों के नाम थे—जुगल और सूरज। सब लोग सो चुके थे।

"अब क्या करें जुगल ?"—सूरज ने कहा।

—"देख सूरज, आ तो चुके हैं और अपने पास चादरें हैं ही...."

—"और सामने सीढ़ी है, छत पर जाने के लिए।"

"यानी हम छत पर चलकर सो जाएं। सवेरे देखेंगे।"—जुगल बोला।

वे दोनों छत पर ऊपर चले गए। सोने की कोशिश की, लेकिन नींद नहीं आ रही थी।

जुगल बोला—"सूरज, नींद नहीं आ रही है। भूख लगी है।"

सूरज ने कहा—"यही बात मेरे साथ है और सोच रहा हूं एक तरकीब। देख तो, सुगंध आ रही है।"

जुगल ने हवा को सूंघते हुए कहा—"हां, आ रही है, मिठाई की..."

सूरज उठ खड़ा हुआ और सामने देखकर बोला—"यार, यह रोशनदान खुला है। इसकी कोठरी में कल के लिए बनाया भोजन भी है। नीचे एक ढिबरी भी जल रही है।"

जुगल बोला—"ऐसा करते हैं कि दोनों चादरों को बांध लेते हैं।"

—"फिर ?"

—"फिर क्या, रस्सी नीचे लटकाते हैं। उसके सहारे मैं पहले नीचे उतरूंगा। दो पत्तलें परोस लूंगा। एक तेरे लिए, एक अपने लिए।"

"पत्तल फिर ऊपर कैसे आएगी ?"—सूरज ने पूछा।

"मैं खा लूंगा। फिर तू मुझे ऊपर खींच लेना और खुद नीचे चले जाना।"—जुगल ने मुसकराते हुए कहा।

—"लेकिन मुझे कैसे पता चलेगा कि तुम खा चुके ?"

—"यहां आसपास जंगल है। सियार बहुत हैं। सो मैं बोलूंगा—'हुई-हुई' और उसे सुनकर तू मुझे ऊपर खींच लेना।"

—"हुई-हुई..."

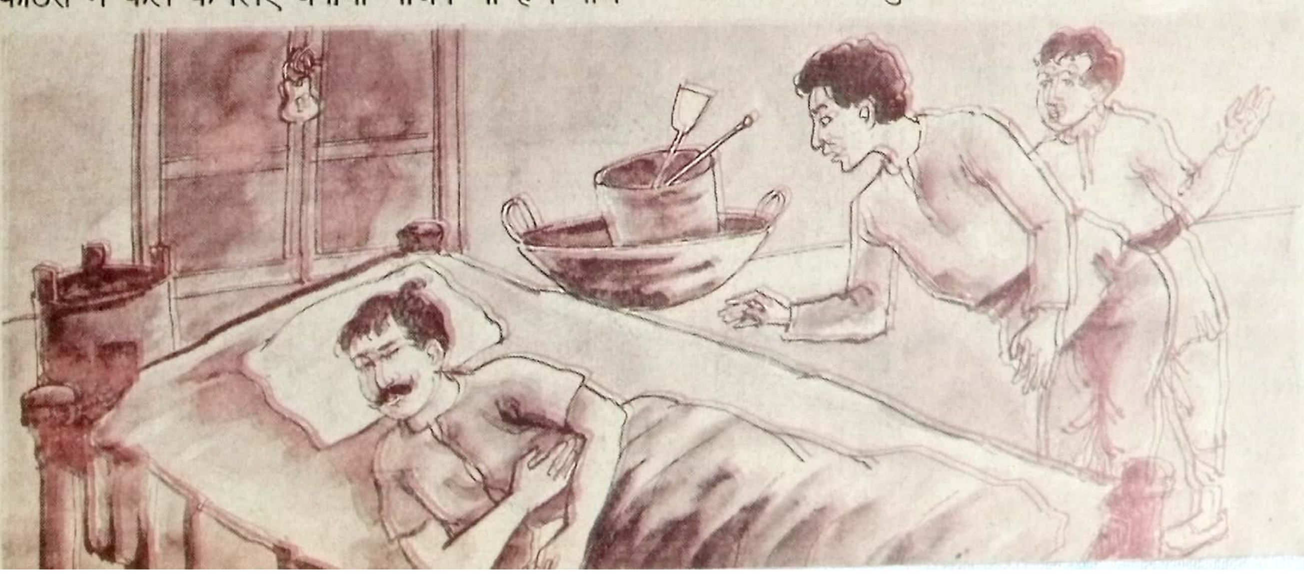
—"अरे, धीरे बोल। मेरे बाद तू भी वहां डटकर खा लेना और वैसे ही बोलना—हुई-हुई..."

—"हुई-हुई..."

—"और मैं तुझे ऊपर खींच लूंगा। दोनों लम्बी तानकर सो जाएंगे !"

बात पक्की हो गई। चादरों में गांठ बांधी गई। पहले जुगल कोठरी में उतरा। बाहर सोए पंडित के खर्राटे ऊपर तक सुनाई दे रहे थे।

सूरज बेसबरी से उसकी आवाज का इंतजार कर रहा था। इच्छा हुई कि आवाज दे, लेकिन डर गया।



किसी ने सुन लिया, तो परेशानी में पड़ जाएंगे वे दोनों ।

थोड़ी देर में सुनाई दिया—'हुई-हुई...' सूरज ने कान लगाकर सुना—हुई-हुई । उसने चादरों को खींचकर देखा, तो गांठ मजबूत थी । कुछ देर खींचने पर जुगल ऊपर आ गया ।

"मजा आ गया यार ! बहुत दिनों बाद इतना बढ़िया खाना खाया है । लड्डू-जलेबी और एक बड़े पतीले में दही जमा रखा था । पानी नहीं था, तो मैंने वही सुड़क लिया ।"—बात कहकर जुगल ने दो-चार डकारें भी ले डालीं ।

—"तो मैं जाऊं अब ?"

—"जा सूरज, मैं पत्तल भी परोस आया था । लेकिन तू पेटू है, उतना ही खाना कि मैं तुझे खींच सकूं ।"

सूरज को नीचे उतारकर जुगल ने डकारें लीं, पेट पर हाथ फेरा और जमुहाई ली । वह ऊंघने लगा और चादरों को छोड़कर लेट गया ।

कुछ समय बीता । नीचे से खा-पीकर सूरज ने आवाज दी—"हुई-हुई... ।"

लेकिन जुगल की नींद पर कोई असर नहीं पड़ा ।

सूरज ने कई बार 'हुई-हुई' की, तो पंडित की नींद टूट गई ।

—"कौन है ?"

—"हुई-हुई...हुई-हुई ।"

पंडित ने उठकर कुंडा खोला । जब दरवाजा नहीं खुला, तो वह घबरा गया । डर के कारण सूरज ने अंदर से सांकल लगा दी थी । वह जोर लगाकर बोले जा रहा था—'हुई-हुई... !'

पंडित ने घबराकर लोगों को जगा दिया । कई मेहमान इकट्ठे हो गए । आवाज आती गई—'हुई-हुई...'

मेहमानों में था एक ओझा । उसने चिल्लाकर कहा—"सब लोग दूर हटो !"

जब सब मेहमान दूर हट गए, तो ओझा ने कान लगाकर आवाज सुनी । वही—'हुई-हुई !'

ओझा बोला—"यह तो प्रेत बाधा है ! एक तो दरवाजा अंदर से बंद, ऊपर से बगैर मतलब की आवाज—हुई-हुई... ।"

पंडित ने परेशान होकर कहा—"अब होगा क्या ? मैंने इतनी मेहनत से पकवान बनाए थे ।"

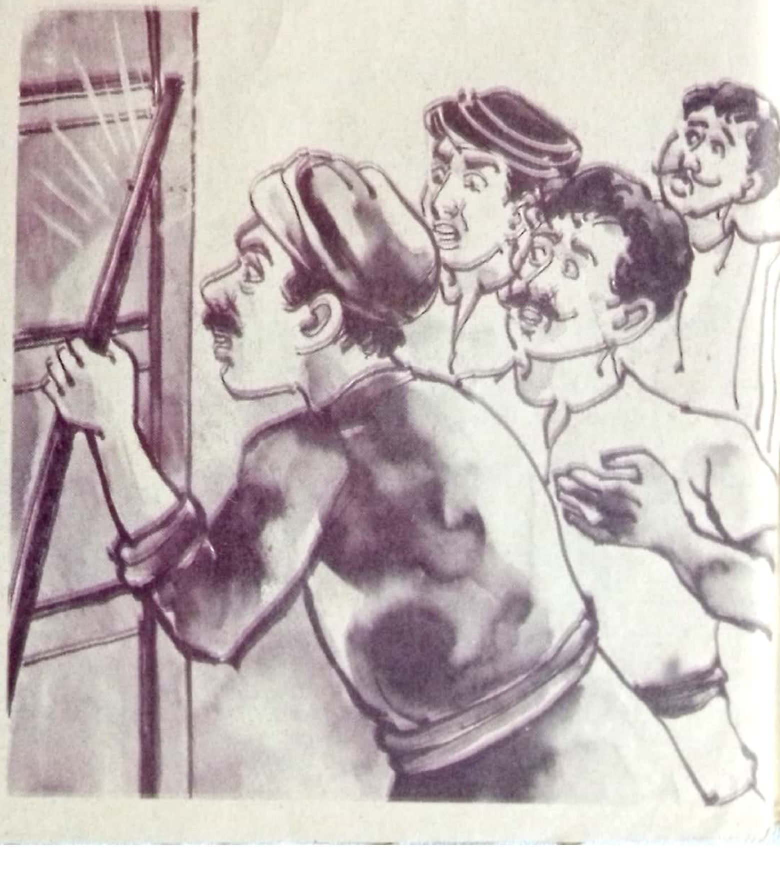
ओझा बोला—"देखो, यह हुई-हुई मिठाई के शौकीन एक जानवर का नाम है । दिखने में काले रंग का है जैसा मैं—लेकिन वह माल साफ करके गायब भी हो सकता हैं । और पकड़ा जाए, तो आदमी के रूप में एकदम सफेद होकर निकल भागता है ।"

पंडित ने कहा—"जो होगा देखेंगे, लेकिन दरवाजा तो तोड़ना ही होगा ।"

दरवाजा तोड़ा जाने लगा । आवाज सुनकर जुगल की नींद टूटी और उसने सूरज को ऊपर खींचना शुरू किया ।

दरवाजा टूटते ही ओझा अंदर घुसा । किसी को ऊपर जाता देखकर चीख उठा—"हाय राम, मर गया ।" कहते ही ओझा गिरा दूध के पतीले में और उसका शरीर सफेद हो गया ।

लोगों ने देखा कि सफेद रंग की 'हुई-हुई' सामने पड़ी है, तो उसे पीटना शुरू कर दिया । ओझा बेचारा पिट रहा था और जुगल-सूरज भाग निकले । ●




चीटू-नीटू
बहुत तेज वर्षा हो रही है, कहीं कोई मुसीबत में तो नहीं फंसा, चल कर देखते हैं
अरे, यह बेचारा पानी में भीग रहा है, चलो, इसकी पीठ पर छाता बांध देते हैं
सोनू गड्ढे में गिरा चिल्ला रहा है, चलो उसे बचाएं
अरे, वह तो निकलते ही भाग गया, अब पड़े रहो गड्ढे में जब तक कोई नहीं आता
तुम्हें ढूंढ़ने के लिए शहर का हर कोना छान मारा और तुम यहां हो। चलो, घर तो चलो....
चारों तरफ सन्नाटा है, मुझे नहीं लगता कि आज हमारे अलावा कोई और भी मुसीबत में फंसा है



शीर्षक बताइए

इस चित्र का कोई सुंदर-सा, छोटा-सा शीर्षक सोचिए। पोस्टकार्ड पर लिखकर उसे १५ सितम्बर, १९९१ तक **शीर्षक बताइए, 'नंदन' मासिक, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुने हुए शीर्षकों पर इनाम दिए जाएंगे।

परिणाम : नवम्बर '९१ अंक

चित्र : विद्याव्रत

पुरस्कृत चित्र

अभिषेक डोभाल (१२ वर्ष), सी-३४ सावित्री भवन, सर प्रताप कालोनी, जोधपुर (राज.) ३४२००१



इनके चित्र भी प्रशंसनीय रहे– राजीव वार्ष्णेय, भोपाल; पवनकुमार धीमान, अम्बाला छावनी (हरि.); गौरवसिंह पंवार, जयपुर (राज.); उषाकुमारी, गया (बि.); रविंद्रसिंह, चंडीगढ़।

बाल सभा


कवीश


मिंकी


सुमित


आकांक्षा

नई पुस्तकें

ना मौसी ना : कवि—द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी; प्रकाशक : कला प्रकाशन, पी-१० नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२; मूल्य : ९ रुपए।

पुस्तक में 'ना मौसी ना', 'सच्चा बालक', 'संपेरा', 'मस्त कलंदर', 'बेटा मुझ जैसा' तथा 'जो प्रकाश देता' कविताएं हैं। इन्हें अच्छी तरह गाया भी जा सकता है। सभी कविताएं मजेदार हैं। भाषा सरल है। कविताओं द्वारा रोचक ढंग से अच्छी बातें कहने की कोशिश की गई है।

आंखों का तारा : लेखक—प्रेमस्वरूप श्रीवास्तव; प्रकाशक : विद्या प्रकाशन मंदिर, १६८१ दरियागंज, नई दिल्ली-२; मूल्य : ९ रुपए।

'आंखों का तारा' और 'वन की पुकार' पुस्तक में ये दो नाटक हैं। दोनों ही नाटक खूब दिलचस्प हैं। पहले नाटक में भारत के प्रमुख शहर दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई, वाराणसी, लखनऊ, इलाहाबाद, श्रीनगर, शिमला, बंगलौर, पंजिम, चितरंजन और उदयपुर आपस में मिलते हैं। ये सब अपनी-अपनी विशेषताएं बताते हैं। देश की समस्याओं पर विचार करते हैं। 'वन की पुकार' में जंगल के पेड़, पशु और वन देवता वन की दुर्दशा के बारे में बातचीत करते हैं। वनों के कटने से होने वाले नुकसान बताते हैं। वन देवी आकर मनुष्यों की जान बचाती है। आदमी संकल्प करते हैं कि खूब पेड़ लगाएंगे।

शेर बच्चे : लेखक—हेमंतकुमार; प्रकाशक : शुभकामना, कला निकेतन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२; मूल्य : १० रुपए।

पुस्तक में 'शेर बच्चे', 'टीचर मुझे माफ कर दो', 'बड़ा आदमी', 'टिक्कू का फैसला' चार कहानियां हैं। चारों कहानियां सीधी-सरल भाषा में लिखी गई हैं। 'टीचर मुझे माफ कर दो' बहुत मार्मिक कहानी है।

रोचक पद्यकथाएं : कवि : भगवानदास 'भ्रमर'; प्रकाशक : भारती प्रकाशन, ७/९१ अर्जुन गली, विश्वासनगर, दिल्ली - ३२; मूल्य : १४ रुपए।

श्री 'भ्रमर' की लिखी इन लम्बी पद्य कविताओं में संगीत की मीठी तान है। 'वरदान', 'चतुर मनुष्य', 'पश्चाताप' और 'प्यारा गधा कुम्हार का'— चारों कविताएं दिलचस्प हैं। पाठकों को कविता और कहानी— दोनों का रस मिलेगा।

पुरस्कृत कथाएं :

बजी घंटी

गौतम का चाचा शहर से बाहर एक लाइट हाउस में चौकीदार था। जब भी गौतम की छुट्टियां होतीं वह चाचा के पास आ जाता।

एक दिन, अभी सवेरा भी नहीं हुआ था कि गौतम की चाची की तबियत खराब हो गई। गौतम जल्दी से चाचा को बुलाने लाइट हाउस गया, उसके चाचा की शिफ्ट का समय तो समाप्त हो गया था, किंतु उनकी जगह पर आने वाला चौकीदार अभी नहीं पहुंचा था। चाची की दशा देखते हुए गौतम के चाचा ने उसे वहां कुछ देर बैठने को कहा, जब तक उनकी जगह पर आने वाला दूसरा चौकीदार नहीं आ जाता। चाचा को गए अभी कुछ ही पल हुए थे कि गौतम ने दूर झाड़ियों में कुछ हलचल देखी। समुद्र की दूसरी ओर से एक किश्ती को किनारे की ओर आते देखा। किनारे पर खड़े दो आदमी किश्ती की तरफ कुछ इशारा भी कर रहे थे। उनके हाथ में बंदूकें थीं। वह झट-से लाइट हाउस से खतरे की घंटी उठा लाया और जोर-जोर से बजाने लगा। वह जानता था कि चाचा अभी ज्यादा दूर नहीं गए होंगे।

घंटी की आवाज सुनते ही वे दो व्यक्ति, जो किश्ती वाले को इशारा कर रहे थे, दूसरी दिशा में सरपट भागे। उनको भागते देख, किश्ती वाला भी अपनी किश्ती को मोड़ने लगा। ज्यों ही किश्ती वाले ने किश्ती तेज बहाव की ओर मोड़ी, वह अपना संतुलन खो बैठा और धड़ाम से समुद्र में गिरा। पल में ही सागर की लहरों ने उसको तट की ओर धकेल दिया। वह बेहोशी की हालत में तट पर निर्जीव-सा पड़ा था। गौतम को दुःख था कि वह देश के शत्रुओं को पकड़ नहीं सका। अभी ऐसा सोच ही रहा था कि उसने कुछ शोर सुना। उसके चाचा, दूसरा चौकीदार साथी तथा गांव के अनेक लोग, उन दो आदमियों को पकड़ कर ला रहे थे। उसने आज अपने चाचा की जान ही नहीं बचाई थी, देश के शत्रुओं को मात भी दी।

सुरभि सहगल, ऊधमपुर (ज. क.)

मैं जाऊंगा

विद्यासागर व्यापारी था। व्यापार के लिए दूर देश जाया करता था। उसका बेटा विज्जू भी समुद्री यात्राओं पर जाना चाहता था। एक बार उसने अपने पिता से जिद की कि वह भी दूर देशों की यात्रा करना चाहता है। विद्यासागर ने उसे अपने दोस्त सुधाकर के साथ भेज दिया।

अचानक एक दिन समुद्र में तेज तूफान आया। जहाज टूट-टूटकर समुद्र में गिरने लगा। यात्रियों में चीख-पुकार मच गई। विज्जू के देखते-देखते सब डूब गए। वह बेहोश हो गया। जब होश आया, तो उसने अपने को समुद्र के किनारे पड़ा पाया। चारों ओर घना जंगल था। आसपास कोई न था। वह घबराहट में इधर-उधर टहलने लगा। थोड़ी दूर पर उसे एक ऊंची काली इमारत नजर आई। वह इमारत के अंदर घुस ऊपर चढ़ गया। उसने देखा, इमारत में चारों ओर धूल थी। खिड़कियों पर शीशे लगे थे। कई तरह के यंत्र भी थे। उसकी समझ में नहीं आया कि वे यंत्र वहां कौन रख गया था! उसे घर की भी याद आ रही थी। घर लौटने के बारे में तो अब वह सोच भी नहीं सकता था। एकाएक शाम के समय उसका हाथ एक यंत्र से छू गया। उसने देखा कि अंधेरे से भरे समुद्र में प्रकाश का एक गोला तैरने लगा।

विज्जू अपना यह खेल खेल रहा था, उसे तट की ओर एक जहाज आता दिखाई दिया। वह खुश होकर नीचे उतरा और तट पर खड़े जहाज की ओर दौड़ पड़ा। जहाज के कप्तान ने उसे गले से लगा लिया। कहा कि जहाज तूफान में फंस गया था। यदि विज्जू उन्हें सही समय पर संकेत न देता, तो सब डूब जाते। विज्जू ने भी अपने बारे में सब कुछ बता दिया। कप्तान बोला—"तूफान शांत होते ही हम वापस चलेंगे। तुम्हें तुम्हारे माता-पिता तक पहुंचाएंगे।"

—कैलाश सोनवाल, पश्चिम विहार, नई दिल्ली।

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : लकी रस्तोगी, आगरा; मल्लिका त्रिपाठी, लखनऊ; विजयकुमार विश्वकर्मा, शहडोल।

बातें रंग-बिरंगी

आम : आम के पेड़ और फल को कौन न पहचानता होगा ! भारत में इसकी एक हजार से भी अधिक किस्में, दो हजार वर्षों से उगाई जा रही हैं । इनमें से दशहरी, लंगड़ा, अलफांजो, चौसा जैसे बीस प्रकार के आम दूसरे देशों को भेजे जाते हैं । इनसे हमें दस करोड़ रुपए की आय होती है । संसार में जितना आम पैदा होता है, उसका आधे से ज्यादा भारत में ही होता है । आम के पेड़ का हर भाग किसी न किसी काम में आता है । मैंगो शेक, आम पापड़, अमचूर, खटाई, पन्ना, जैम, अचार आदि अवश्य चखा होगा । आम की पत्तियों के बंदनवार से शुभ अवसरों पर सजावट की जाती हैं । सूखी टहनियों से हवन किया जाता है ।

सुपारी : पुराने जमाने में सुपारी को पान में डालकर खाने का रिवाज था । आजकल इसे सुगंधित और सुस्वादु बनाकर भी खाते हैं । सुपारी हमारे धार्मिक अनुष्ठानों के लिए अति महत्वपूर्ण है । पान के पत्ते की बेल को प्राय: सुपारी के पेड़ पर ही चढ़ाते हैं । सुपारी का पेड़ बंगाल, असम और दक्षिण भारत में उगाया जाता है । हम अपनी खपत भर सुपारी पैदा नहीं कर पाते, इसलिए हमें श्रीलंका और मलयेशिया से सुपारी का आयात करना पड़ता है । सुपारी का पेड़ देखने में बड़ा सुंदर होता है । इसकी ऊंचाई तीस मीटर तक होती है । इसमें वर्ष में एक ही फसल लगती है । इसका पेड़ लगभग सौ वर्षों तक फल देता है । सुपारी को संस्कृत में पूगीफल कहते हैं ।

अमलतास : गर्मियों में फूलने वाले अपने सोने जैसे फूलों के कारण इसे दूर से ही पहचाना जा सकता है । अपने रंग के ही कारण इसे संस्कृत में सुवर्णक कहा जाता है । यह भारत के जंगलों में खूब पाया जाता है, साथ ही इसे बगीचों में भी उगाया जाता है । फूलों की बहार गर्मियों भर छाई रहती है । जाड़ों में डेढ़ फुट लम्बे डंडे जैसी फलियों से यह लद जाता है । फल के गूदे को बंदर बहुत खाते हैं । इसीलिए बंगला भाषा में इसे बंदरलाठी भी कहते हैं । इस फल से दवा बनती है । इससे तम्बाकू को सुगंधित करते हैं । इसकी लकड़ी बड़ी मजबूत होती है । उससे बैलगाड़ी, कोल्हू, नाव आदि बनाते हैं ।

यूक्लिप्टस : इसे इसके सफेद रंग के कारण सफेदा भी कहते हैं । पिछले पंद्रह-बीस वर्षों में इसका खूब प्रचार हुआ है । मूलतः यह आस्ट्रेलिया का पेड़ है, जहां इसकी सात हजार किस्में होती हैं । ग्रीक भाषा में 'यूक्लिप्टस' का अर्थ 'मैं घेरता हूं' है । यह नाम इसके फल की संरचना के आधार पर दिया गया है । इसकी पत्तियों से तेल निकाला जाता है । इससे दवाएं बनती हैं । लकड़ी से कागज बनता है । इसका पेड़ बड़ी तेजी से बढ़ता है । यह जहां लगाया जाता है, वहां का पानी सूख जाता है । मिट्टी को बह जाने या उड़ जाने से रोकने में यह पेड़ बड़ा सहायक है ।

पलाश : तेज गर्मी के मौसम में इसका पेड़ लाल फूलों से लद जाता है। लगता है कि जंगल में आग लगी हुई है । इसे ढाक, किंशुक आदि भी कहते हैं । इसके पत्तों से पत्तल, दोने आदि बनते हैं । शहर में पान लपेटने और चाट देने के लिए इसी का पत्ता इस्तेमाल होता है ।

अनन्नास : शादी के मौके पर, डाल सजाने के लिए, बीच में अनन्नास का फल ही लगाते हैं । यह कांटेदार झाड़ियों में फलता है । असम, महाराष्ट्र आदि में यह बहुतायत से पैदा होता है । इस फल में रस बहुत होता है ।

जवाकुसुम : बारहों महीने फूलने वाले लाल फूलों के झाड़ को बगीचों में आसानी से पहचाना जा सकता है । इसे गुड़हल भी कहते हैं । इसके कोमल फूल के बीच में एक लम्बा तागा-सा लटका रहता है । फूलों को बच्चे चाव से खाते हैं । देवी की पूजा के लिए प्रायः इस फूल को ही चढ़ाते हैं ।

— प्रभाकर द्विवेदी

अजब तमाशा

—उर्मिला बिन्दल



एक छोटी-सी लड़की थी। उसका नाम था मीनाक्षी। घर में सब उसे प्यार से मित्री कहते थे। उसके पिता एक नाटक कम्पनी में 'मेकअप मैन' का काम करते थे। वह इस काम में बहुत निपुण थे। जवान को बूढ़ा या बूढ़े को जवान दिखा देना उनके लिए मामूली बात थी। जरूरत पड़ने पर वह डरावनी शक्लें भी बना देते थे। इसके लिए वह क्रीम, पाउडर और तरह-तरह की चीजें काम में लाते थे। कुछ लेप तो वह तरह-तरह की दवाइयों तथा जड़ी-बूटियों के मिश्रण से स्वयं ही तैयार करते थे।

एक दिन मित्री स्कूल से जल्दी आ गई। उस दिन जब उसके पिता अपने काम पर जाने को तैयार होने लगे, तो वह बोली—"पिता जी, मैं भी आपके साथ चलूंगी।"

मित्री के पिता ने उसे मना किया। बोले—"आज बहुत काम है, फिर कभी चलना।" परंतु मित्री नहीं मानी। उसने कहा—"मैं आपको बिल्कुल परेशान नहीं करूंगी। चुपचाप बैठकर आपका काम देखूंगी।" इससे पहले भी मित्री कई बार पिता के साथ जा चुकी थी। नाटक का रिहर्सल देखने तथा लोगों से घुल-मिलकर बातें करने में उसे बड़ा मजा आता था। पिता का उत्तर सुने बिना ही वह फटाफट तैयार होकर आ गई।

हाल में जाकर मित्री एक कुर्सी पर जमकर बैठ गई। अपने पिता की जादुई अंगुलियों का कमाल देखने लगी। वह क्षण में किसी को कुछ बना देते। सभी की शक्लें बदल जातीं। उसने देखा कि उसके पिता ने एक ऐसी क्रीम बनाई है जिसे चेहरे पर लगाने से वह जगह थोड़ी फूल-सी जाती थी। इससे चेहरा डरावना दीखने लगता था। उन्होंने उसे यह भी बताया कि उस क्रीम का प्रभाव कुछ घंटों बाद स्वयं ही समाप्त हो जाता था। चेहरा पहले जैसा हो जाता था।

मित्री को बड़ा मजा आया। उसने सोचा—'अगर मैं यह क्रीम का डिब्बा उठा लूं, तो कल स्कूल में बड़ा मजा आएगा। है तो मेरे पिता जी का ही। मांगने पर तो देंगे नहीं।'

थोड़ी देर बाद ही उसने अपने पिता के पास जाकर घर जाने के लिए पूछा। उन्होंने मित्री की ओर बिना देखे ही कहा— "अच्छा, जाओ। सड़क पर किनारे-किनारे चलना। शैतानी न करना।" कहकर वह फिर काम में लग गए।

इधर मित्री ने मौका मिलते ही चुपके से क्रीम का डिब्बा उठाकर बगल में दबाया और बाहर आ गई।

वह बड़ी सावधानी से क्रीम का डिब्बा छिपाए, घर की ओर जा रही थी। रास्ते में एक सिपाही मिला। वह अपनी ड्यूटी खत्म करके वापस थाने में जा रहा था। सिपाही ने देखा कि यह लड़की हाथ में कुछ छिपाती हुई-सी चल रही थी। उसने रोबदार आवाज में पूछा—"ऐ लड़की, रुको। यह क्या है तुम्हारे पास? कहां ले जा रही हो?"

एकाएक इस तरह पूछे जाने पर मित्री घबरा गई। अटकती हुई बोली—"यह...यह तो मेरे पिता जी की क्रीम है, मुंह पर लगाने वाली।"

—"पिता जी की क्रीम? तो फिर छिपाने की क्या जरूरत है। ला दिखा तो इधर, देखता हूं क्या है।"

मित्री कुछ न बोल पाई। पर वह बहुत डर गई थी। कुछ वह पहले से ही डरी हुई थी कि पिता डिब्बा न मिलने पर परेशान हो रहे होंगे। ऊपर से यह और मुसीबत! उसे कुछ न सूझा। फौरन क्रीम का डिब्बा सिपाही के हाथ पर रखा और तेजी से घर की ओर दौड़ पड़ी।

सिपाही डिब्बा हाथ में पकड़े मित्री को आवाज देता ही रह गया। पर तब तक तो मित्री आंखों से ओझल हो चुकी थी। सिपाही क्रीम का डिब्बा हाथ में लिए ही थाने चला आया। अपनी बैरक में आकर उसने डिब्बा खोलकर देखा, तो सचमुच उसमें पीली-सी क्रीम थी।

'बेकार ही बेचारी लड़की को डरा दिया।'—सिपाही ने सोचा।

तभी उसे लगा कि जूतों में बंधे-बंधे उसके पैर दर्द करने लगे हैं। उसने अपने भारी-भारी जूते उतारे और डिब्बे में से क्रीम निकालकर, पैरों पर लगाने लगा। इतने में चार-पांच सिपाही और अपनी ड्यूटी खत्म करके वहां आ गए।

"लाओ, थोड़ी क्रीम हमें भी दो।" —कहकर उन्होंने भी क्रीम उठाई और खूब पैरों पर लगाई। मुफ्त की चीज, टांगों पर भी दबा-दबाकर खूब मली और लेटकर आराम करने लगे।

बेचारे सिपाही अभी घंटा भर भी न लेट पाए थे कि थाने में सूचना आई— 'शहर के मुख्य चौराहे पर झगड़ा हो गया है। पांचों सिपाही पूरी वर्दी में घटना स्थल पर पहुंच जाएं।'

वे सब उठकर खटाखट तैयार होने लगे। बैल्ट बांधी, टोपी पहनी। पर...अरे यह क्या! जूते तो पैरों में फंस ही नहीं रहे थे, जैसे किसी और के हों। सबने पहले तो अपने-अपने पैरों की ओर देखा, फिर एक-दूसरे की ओर। पता चला कि किसी की अंगुलियां सूजकर मोटी-मोटी हो गई थीं, तो किसी की एड़ी गेंद-सी फूल गई थी। किसी की पूरी टांग ही खंभे जैसी लगने लगी थी। सोचने का समय तो था ही नहीं, बाहर जीप हार्न बजा रही थी। वे अपने जूते हाथ में ही उठा, जीप में सवार हो गए।

पुलिस कप्तान घटना स्थल पर पहले से ही उपस्थित थे। पहुंचते ही हरेक को उन्होंने उसकी ड्यूटी के बारे में बता दिया।

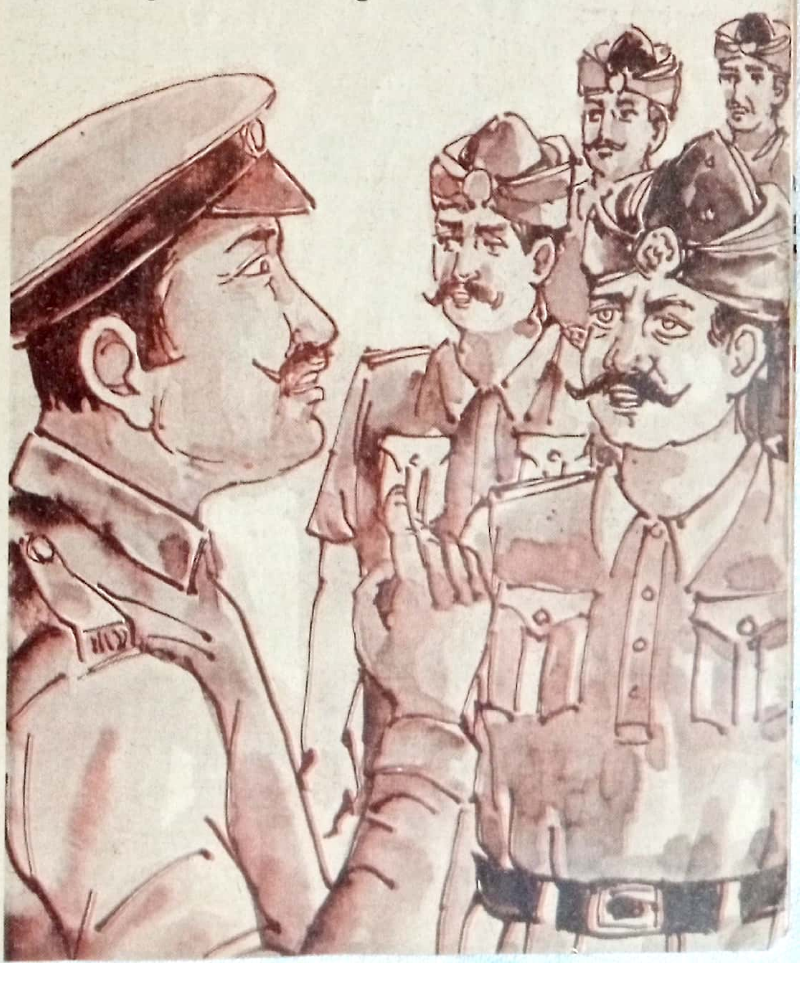
रास्ते भर बहुत कोशिश करने पर भी जूते तो पैरों में फंसे ही न थे। मजबूरन वे नंगे पांव ही जीप में से उतरने लगे। अब तो उनसे ठीक से चला भी नहीं जा रहा था। उधर कप्तान साहब डंडा हाथ में लिए सिर पर सवार थे। जब उन्होंने सिपाहियों को नंगे पांव जीप में से उतरते देखा, तो उन्हें बहुत क्रोध आया। कड़ककर बोले—"यह क्या तमाशा है? जूते कहां हैं?"

सिपाहियों के तो पहले ही होश गुम थे। फिर भी एक ने उत्तर दिया—"जीप में सर।"

—"जीप में, क्या मतलब?"

कोई कुछ न बोला। डर के मारे वे अपने पैर देखने लगे। तभी कप्तान साहब ने भी उनके पैरों की ओर देखा, हैरान रह गए।

सिपाहियों ने किसी प्रकार अपना काम पूरा किया। परंतु मन ही मन वे बहुत घबरा गए थे। सोच



रहे थे—'कल पता नहीं क्या होगा ?'

अगले दिन जिसका डर था, वही हुआ। सुबह-सुबह कप्तान साहब थाने आ धमके। पांचों सिपाहियों को पेश होने का हुक्म हुआ।

सिपाही भी अपनी पूरी वर्दी में लैस होकर आ पहुंचे। कप्तान साहब बाहर ही अहाते में बैठे, थानेदार से बातें कर रहे थे। पांचों ने वहीं पहुंचकर जोरदार एड़ी ठोककर सलाम दिया और एक लाइन में खड़े हो गए। उनके दिल धक-धक कर रहे थे। पता नहीं, क्या सजा सुना दी जाए ? बेचारों को मुफ़्त की क्रीम महंगी पड़ रही थी।

कप्तान साहब ने उनकी ओर देखा और मुसकराकर बोले—"कहो भाई, क्या हालचाल हैं, अब तुम्हारे ? लगता है कि पिछले दिनों तुम लोगों ने कुछ ज्यादा ही मेहनत की है। तुम्हें कुछ आराम की जरूरत है। मैंने स्वयं ही तुम्हारी तीन दिन की छुट्टी मंजूर कर दी है। जाओ, आराम करो और तरोताजा होकर दोबारा काम पर आ जाओ।"

सिपाही खुश थे, जैसे कोई चमत्कार हो गया हो। परंतु उनके पैरों की सूजन का असली राज क्या था, वह न तो उनकी समझ में आया और न अब जानने की जरूरत रह गई थी। ●

चुड़ैल डूब गई

—कलूड़ा अभिनव

अफ्रीकी देश कांगो के किसी गांव में शादिल नाम का एक फल विक्रेता रहता था। वह शहर से फल लाकर बाजार में बेचता था। दूसरे दुकानदारों से वह फल कम दाम पर बेचता। उनसे ज्यादा लाभ प्राप्त करता।

वह बहुत चतुर और मेहनती था। एक दिन उसे पता चला कि ब्राजविले में सस्ते दामों पर फल मिलते हैं।

शादिल मंडी में पहुंचा। फल खरीदे। फल खरीदकर वह बैलगाड़ी पर बैठा और चल पड़ा। रास्ते में घना जंगल पड़ा। रात न हो, इसलिए जल्दी-जल्दी घर की तरफ बढ़ रहा था। जंगल में अचानक एक चुड़ैल मिल गई। वह जोर-जोर से हंसने लगी। चुड़ैल को नजरंदाज कर शादिल आगे बढ़ा, तो चुड़ैल ने बैल का कंधा पकड़कर बैलगाड़ी को रोका। शादिल ने उसे रास्ते से हट जाने को कहा। लेकिन वह फिर हा...हा.,.कर जोर से हंसी। उसके बाल बिखरे हुए थे। सूरत एकदम काली और डरावनी थी। मुंह में पीले व बड़े लम्बे दांत। दोनों हाथों को फैलाती हुई शादिल की तरफ बढ़ने लगी। गरजकर बोली —"तुम बहुत अच्छे समय पर आए हो। मुझे बहुत भूख लगी है।"

शादिल ने कहा— "मुझे तुम्हारा ख्याल था। इसलिए तुम्हारे लिए फल लाया हूं।"

चुड़ैल फलों पर टूट पड़ी। शादिल को विश्वास था कि वह आधे से ज्यादा नहीं खा सकेगी। लेकिन देखते ही देखते वह सारे फल चट कर गई। शादिल रास्ते के किनारे खड़ा था। सामने बैलगाड़ी थी। फल खाकर वह शादिल की तरफ बढ़ती हुई कहने लगी—"फलों से पेट नहीं भरा। अब तुम्हें खाऊंगी।"

शादिल को अपने बचने का कोई उपाय नहीं सूझा। बैलगाड़ी वहीं छोड़कर सरपट दौड़ने लगा। चुड़ैल उसके पीछे दौड़ी। काफी देर तक दौड़ने के कारण शादिल थक गया था। पीछे मुड़कर देखा, तो चुड़ैल अब भी उसका पीछा कर रही थी। तभी उसे झील के किनारे एक वृक्ष दिखाई दिया। चटपट वह वृक्ष पर चढ़ा और चुपचाप टहनी पर बैठ गया।

चुड़ैल झील के किनारे पहुंची। शादिल कहीं नहीं दिखाई पड़ा, तो वह इधर-उधर घूमने लगी। पानी में प्रतिबिंब दिखाई दिया। उसने शादिल को पकड़ने के लिए झील में छलांग लगा दी। झील गहरी थी। उसे तैरना भी नहीं आता था। काफी देर बचने की कोशिश करती रही, लेकिन वह डूबकर मर गई। शादिल पेड़ से उतरा। बैलों को थपथपाया, फिर बैलगाड़ी में घर की ओर चल पड़ा।

(कांगो)

शीर्षक बताइए : परिणाम



बढ़-चढ़कर पाठकों ने भाग लिया। जुलाई '९१ में छपे रंगीन चित्र के लिए ये शीर्षक चुने गए—

बहुत लिया मैं खेल-कूद, मम्मी जल्दी लाओ दूध।
—सुभाष सिंह, द्वारा एच.के. कदम, यूको बैंक, बुलंदशहर (उ.प्र.)।

खेल-खेल में सीखो गिनती, हंसते रहो यही है विनती।
—रश्मि टिक्कू, द्वारा ए.के. टिक्कू, ७ शांतिनगर, टी.एस.के., जम्मू तवी।

मम्मी का मैं राजदुलारा, गिनती करते मैं न हारा।
—नंदिता नेवटिया, १२ ज्योति सदन, १३७, मैरीन ड्राइव, बम्बई।

सीख रहा हूं चलना आज, दौडूंगा कल सबके साथ।
—आशिष पोद्दार, ५१८० लाहौरी गेट, दिल्ली।

इनके शीर्षक भी पसंद आए : ओमप्रकाश शर्मा, अजीतगढ़ (राज.); सुरेंद्र पाल, अस्सू (हि.प्र.); राजकुमार, गर्दनीबाग, पटना; मोंटू सलूजा, पुरनापानी (उड़ीसा); हर्षिता अग्रवाल, सीहोर (म.प्र.)।

आप कितने बुद्धिमान हैं (उत्तर)

१. सूरज की एक किरण गायब है।
२. बाएं खड़े शिकारी के टोप की ऊपरी घुंडी नहीं है।
३. उसकी रिवाल्वर के खोल का निचला सिरा अधिक लम्बा है।
४. उसके ऊपर लगे पेड़ में एक पत्ता अधिक है।
५. काले आदमी की कमीज निक्कर के अंदर है।
६. बक्स का हैंडिल सफेद है।
७. बक्स वाले आदमी ने पेटी बांध रखी है।
८. चिड़िया कुछ नीचे आ गई है।
९. हाथी की पूंछ अधिक दिखाई दे रही है।
१०. पेड़ के नीचे अधिक झाड़ियां हैं।

पत्र-मित्र

पुस्तकें पढ़ने तथा लेखन में रुचि :

१. संजय कालड़ा, १६ वर्ष, म. नं. १ सी/६, निकट शिव मंदिर, एन. आई. टी. फरीदाबाद; २. छगनलाल जाखड़, १६, वार्ड नं. १, पो. नापासर, जिला बीकानेर, (राज.); ३. बरतलाल राउत, १४, म. नं. सी-२४, रामपुर कोलियरी, ब्रजराजनगर, सम्बलपुर (उड़ीसा); ४. संजयकुमार चेतानी, १३, म. नं. ११९ पावर हाउस के सामने, जिला सीकर, (राज.); ५. सीमा व आलम, १३, एफ. १९७, एल. आई. जी. राजाजीपुरम, लखनऊ; ६. कमलकांति चक्रवर्ती, १६, पो. अभयापुरी, जिला गोपालपारा (असम); ७. तारकेश्वर मिश्र १६, १३७/६, चांदपुर सलोरी, तेलियर गंज, इलाहाबाद; ८. राजूकुमार भार्गव, १४, ग्रा.+पो. कोआथ, रोहतास; ९. ललितकुमार तायल, १६, बिजली घर नं. १,ककराला के पीछे, खुर्जा; १०. राकेशकृष्ण साहू, १६, हसनगंज, उन्नाव; ११. सुधीरकुमार गुप्त, १५, ४६-सी, मोदी मंदिर भवन, छोटा बाजार, बांदा (उ.प्र.); १२. प्रीति अग्रवाल १६, द्वारा ओमप्रकाश अग्रवाल, म. नं. ६/ए गोकुलनगर कालोनी, महमूरगंज, वाराणसी; १३. प्रवीन प्रभात, १६, एम. ५८, शास्त्री नगर, दिल्ली; १४. राजकुमार पाटिल, १२, पाटिल साहब का बाड़ा, गढ़ीपुरा, हरदा, जिला होशंगाबाद (म.प्र.); १५. नीरज तिवारी, १४, ५२६-बी रेलवे कालोनी, फजलगंज, कानपुर; १६. विवेक शर्मा, १६, २, स्टेट बैंक कालोनी, मिशन कम्पाउंड, सहारनपुर; १७. आभा अस्थाना, १५, ताखा शाहगंज, जौनपुर, (उ.प्र.); १८. अंजुला वर्मा, १६, ई-४१ टोंस कालोनी, डाकपत्थर, देहरादून; १९. शोभा बी. जैन, १४, ७६ लक्ष्मणराव रोड, बंगलौर; २०. बामादेव रथ अरोड़ा, १५, ४६५१/३ पटेल रोड, अम्बाला शहर; २१. पारस अग्रवाल, १६, द्वारा अतुल फैंसी कार्नर, भैरहवा, (नेपाल); २२. रवींद्र अग्रवाल १३, द्वारा रामअवतार अग्रवाल, सुभाष रोड, बाकुंड़ा, (प.बं.); २३. जितेंद्रसिंह राठौर, १५, ग्रा. करगैना, पो. करेली, जिला बरेली; २४. सुनीता गुप्ता, १४, सी टी ४७, यमुना कालोनी, देहरादून; २५. सुभाष भारतीय, १६, भैरों मार्ग, बिछिया, रीवां (म.प्र.) ।

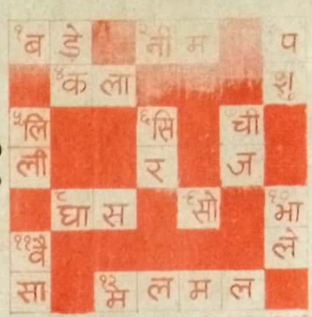
खेल-संगीत तथा चित्रकला में रुचि :

१. संदीप संघवी, १२ वर्ष, ५६ प्रेम कालोनी, सौदीप, स्टेशन रोड, मंदसौर (म.प्र.); २. संजीव वैद, १४, उ. प्र. राज्य चीनी निगम, बिजनौर; ३. अनुपमकुमार सिंहानिया, ११, मेडिकल हाल, स्टेशनरोड, भागलपुर (बि.); ४. विजेंद्र सीला, ११, बाच्छुसर, पो. मंदरपुरा, श्रीगंगानगर; ५. राजू श्रीवास्तव, १६, बस स्टाप खुटार, शाहजहांपुर ।

डाक टिकट संग्रह एवं भ्रमण में रुचि :

१. मोनाली सुराणा, १५ वर्ष, शुभम् ट्रेडर्स, करही, खरगौन; २. लक्ष्मण राही १६, ३० मनौली हाउस, अम्बाला; ३. संजय अग्रवाल, १३, प्रिंटिंग टेक्नालोजी स्टाफ कालोनी, तेलियरगंज, इलाहाबाद; ४. सत्येंद्रकुमार आर्य, १६, द्वारा सपना साड़ी सैंटर, गोपाल मार्केट, स्वामीघाट, मथुरा; ५. कुलजिंदर सिंह, १५, पोस्ट बाक्स ३०५५, न्यू रोड, काठमांडू (नेपाल) ।

नंदन ज्ञान पहेली: २७१ परिणाम



इस बार भी पाठकों ने पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया । दो सर्वशुद्ध आ गए । पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है—

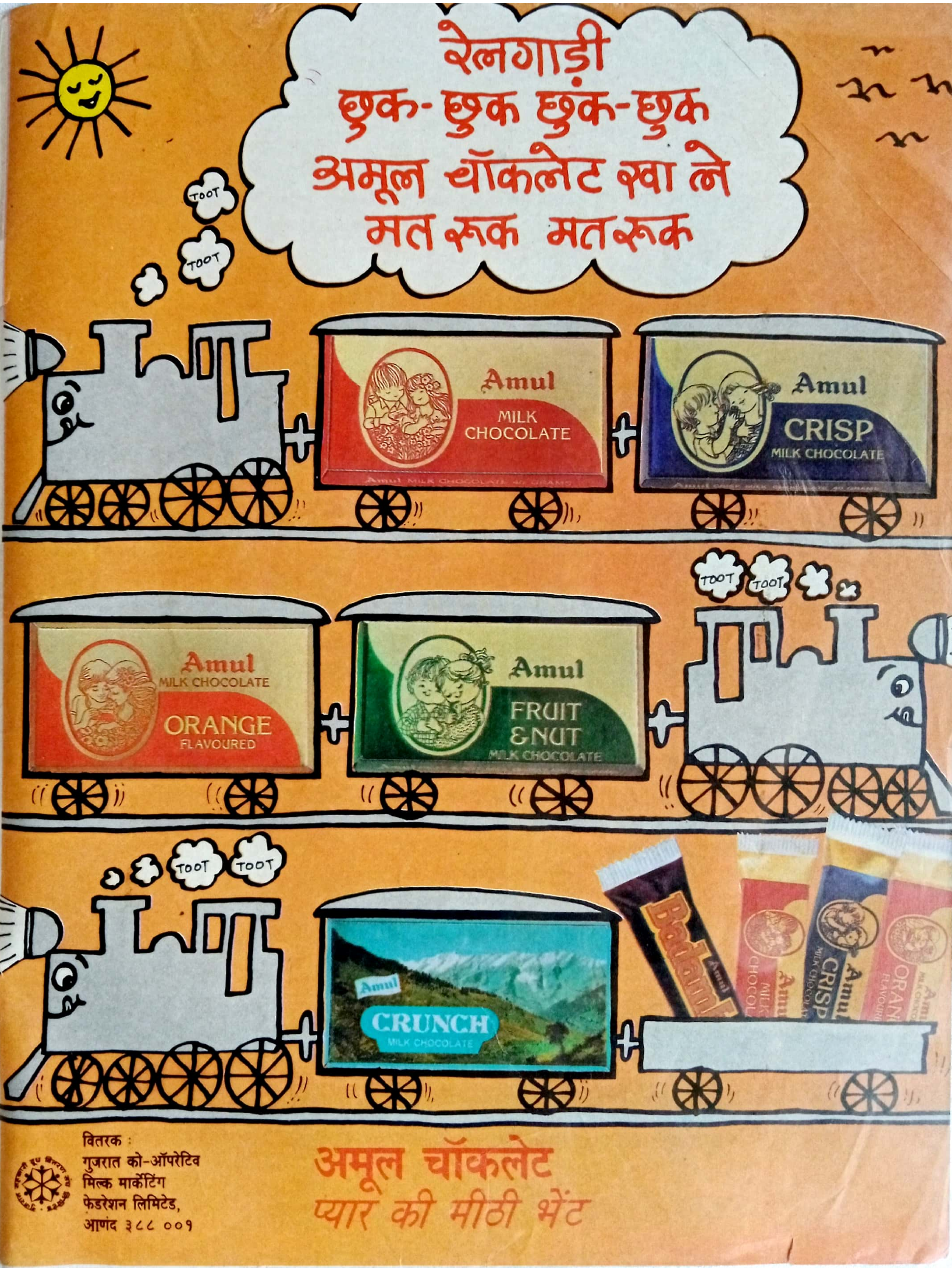
सर्व शुद्ध : दो : प्रत्येक को एक सौ पचास रुपए :

१. तरुण गुप्ता, ३२१ बी. रेलवे कालोनी, अम्बाला छावनी; २. फैजल कमाल, द्वारा कमालुद्दीन, मिल्की मोहल्ला, आरा, भोजपुर ।

एक गलती : चौबीस : प्रत्येक को तीस रुपए :

१. यशपाल जाटोलिया, नई दिल्ली; २. श्याम बहादुर, पटियाला; ३. प्रदीपकुमार अग्रवाल, नजीबाबाद; ४. अनामिका, मुजफ्फरपुर; ५. विनय कक्कड़, अमृतसर; ६. अजय कुमार शर्मा, मुजफ्फरपुर; ७. नीहारिका सिंह, वाराणसी; ८. सचिनकुमार चौरसिया, डमौरा (रीवां); ९. गुरविंदरसिंह, धनबाद; १०. अनीता विश्वनाथ, बम्बई; ११. अनुज गोयल, कासिमपुर; १२. विकास चावला, नई दिल्ली; १३. दिनेश यादव, हरिद्वार; १४. विजय अशोक खंडेरा, भंडारा; १५. शिल्पम्, रोहतास; १६. ऋचा जैन, बुलंदशहर; १७. विवेक बड़जात्या, वाकनेर (धार); १८. अजीत कुमार, मुजफ्फरपुर; १९. शिवपाल सिंह, मैनपुरी; २०. मोना भाटिया, राजपुरा टाउन (पटियाला); २१. राजीवकुमार चौधरी, पूर्णिया; २२. राजीव कुमार, चंदौसी; २३. नरेश त्रिवेदी, बलौदा (रायपुर); २४. नीरजकुमार, बोकारो ।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित ।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन



रेलगाड़ी
छुक-छुक छुक-छुक
अमूल चॉकलेट खा ले
मत रूक मत रूक
TOOT
TOOT
Amul
MILK CHOCOLATE
Amul
CRISP
MILK CHOCOLATE
TOOT
TOOT
Amul
MILK CHOCOLATE
ORANGE
FLAVOURED
Amul
FRUIT &NUT
MILK CHOCOLATE
TOOT
TOOT
Amul
CRUNCH
MILK CHOCOLATE
Badam
वितरक :
गुजरात को-ऑपरेटिव
मिल्क मार्केटिंग
फेडरेशन लिमिटेड,
आणंद ३८८ ००१
अमूल चॉकलेट
प्यार की मीठी भेंट

रजि. नं. डी.-(सी)-१७१ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६४

